

DPN 6228

Title : मदार्थावलोकितेश्वर रूपस्तव स्तोत्र

Run. No. 6919

Cat. No.

Micro. No.

Subject English Hyman

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 16.7×10.5

Folios 32+32+34+Lines (in a page) 20

Compl. / Incompl.

Chapt. / act / ⁺³⁰

Author / translator

Scribe / donor

मानदास सुगतदास

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Mandas Sugat Das

Script : New. / Dēv. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu / binding copy : Swan diary note copy .. Indian .

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Four copies. Copied.

Beginning, colophon, post-colophon :

स्वानं सादृष्टं धानु कापिचाम् बहममा चया
गःपु। ~~क~~ क कापिचा ७

(7)

SWAN DIARY

No. 2.



न ९

Name _____

Class _____

Subject _____

नं. १.

मानदास सुगत दासया संकलनं
बाशा सफू-कुथियात उपहार !

	पे
(१) भुवनं त्रय वदीत लोकलक्ष ॥ ९ ॥	१
(२) विश्वविन्दुम तनु विजित ॥ १० ॥	४
(३) इन्द्रादिदेव तन्त्रोर्वीदित पाप ॥ ६ ॥	६
(४) अप घन कामुनिशी नाग सं ॥ ४ ॥	८
(५) चामिकरावनिमनि मकुता ॥ ५ ॥	८
(६) असुनवरुन देह सर सिद्धि ॥ ५ ॥	९
(७) संखेदु कुंद हिन सं निभ चारु देहा ॥ ८ ॥	१०
(८) ब्रह्मादिदेव मनुजा सुर पुजितांग ॥ ६ ॥	११
(९) कामुनिपर्वत पीत सुवर्ग ॥ ६ ॥	१२
(१०) मया कृपानि पापानि काय वारु ॥ १५ ॥	१३
(११) जय सिद्धि सुरा सुर लोक्युरु ॥ ८ ॥	१५
(१२) मनिक् माला स्तव ॥ दानव राज ॥ १६ ॥	१६
(१३) सर्व भूत मीरा कं पित तु भ्यं क्षान्ति ॥ २४ ॥	१८
(१४) मंत्रुनाज कमला सन ॥ मंत्रुगी स्तव ॥ १२ ॥	२२
(१५) सर्व सुरा सुरंजा देवी भुते ज्ञान ममोहर ॥ ८ ॥	२९
(१६) स्तुत्वा गुरोर नुप सौर नुविन्दु पाव ॥ ६ ॥	३०
(१७) नमामि लोकेश्वर प्रार्थनायः ॥ ११ ॥	३२
(१८) शुभित रुचि शिस्थि पद्म पत्र प ॥ १२ ॥	३४
(१९) मार्गेश्वरं पुवर भाषन मानकाय ॥ १० ॥	३६
हृदय माला स्तव	

सुन्दरलोक

२० भुजैवामे पञ्च दिशदि क्षरिसंख्या ॥६॥ ३८
२१ सिंधुरीला सुरा बालु मुकुंभं निलजशक्ति ॥१०॥ ४०
२२ सर्व सुरा सुर वं अविभूते ज्ञानमनोतरं ॥१०॥ ४१
२३ सौम्यमुरुति सुदरमरिासज ॥६॥ ४३
२४ ब्रह्मादिदेव मनुजा सुर पुजितार्ग ॥६॥ ४४
२५ नमामि मैत्रु माथाय त्रैलोक्येवपि ॥११॥ ४५
२६ नमामि जिनथाय नित्या नित्य वि ॥८॥ ४६
२७ सौपरी नागेव मनुष्य सत्त्वै ॥१५॥ ४७
२८ वन्दे त्वां मानन्द नवि विन्यललित ॥१०॥ ४८
२९ कल्पा दिक्के भव शिक्को हिमदा ॥७॥ ५०
३० नाना कृति सुकृतिन जगता सरैन् ॥११॥ ५२
३१ गताधर सौम्य विसारलोचन ॥६॥ ५४
३२ देव मनुष्या सुरनर तव चरणां प्रतिहृण ॥२५॥ ५५
३३ स्तुत्वा पुरां म्य भयंकर सर्वसत्त्वा १ संपुरा ॥२५॥ ५६
३४ माराधितोपि भुजगा सुरदेव संख्येः गंधर्व ॥१२॥ ६४
३५ आलिका वृद्धि रि शो दृशि जौशश भू दिनार ॥६६
३६ त्वं पञ्च पानि भुभयं बरमौ शदाता त्रैलोक्ये ॥६॥ ६७
३७ अल्पं न चो जामरिा धर्म धारिने शशांक ॥८॥ ६८
३८ यमाराध्य माधा भूनामा मदि कं श्वतु द्वीप ॥१॥ ६९
३९ शशा दंकार नोदे किरिकिरि तारवैः भूतवेताल ॥६॥ ७०॥

४० तथागता स्तथागताः तत्त्वमापुरा हन्त॥ ५॥१३
४१ महासाहस्रके लोके साहस्रदितकारीनि ॥ ५॥१४
४२ दहृज भुजं गे नान दहवातिते मप्रालमत ॥ ५॥१४
४३ य धीरशामनुज पनुः राहुलो भद्रमाप्त ॥ ५॥१५
४४ बुद्धाधिस्था नतो बुद्धा भयदाभय ॥ ५॥१५
४५ नमो लोके श्वर पादपंकज सदाविभु ॥ २३॥१६
४६ भागवतिवदुरपे निविचारे निरंजे ॥ १॥१७
४७ नमामि वज्र योगिनिः निवासिनि मरगे ॥ ६॥ ८१
४८ त्रयश्रय देवास्तुतसेवा चितपपञ्चा ॥ ७॥८२
४९ कल्पोदिनेन विधिना परिवर्धमाना ॥ ७॥८३
५० मार्गेश्वरं पुनः भाषरा मानकाय ॥ १०॥८४
५१ कल्पादिते भवसिको हिमहा प्रभा ॥ ११॥८६
५२ पंकेतहस्ताय पदाङ्गाय बंधुकपुष्प ॥ ६॥८७
५३ सभाषं विभूषरा जिगराजदिपुः पेश्वो ॥ १०॥८८
५४ प्रीतिसरा अमराद्य पुजितां त्वानतोस्मि ॥ ११॥८९
५५ जताधर सौम्य विशाललोचनः सदा ॥ ६॥९२
५६ श्री बागमति अमो घंच फरदापति ॥ ३६॥९३
५७ लोकेश्वरं जगत स्वामिः सुखावति ॥ ११॥९७
५८ स्वर्गाचुडा मुनि श्री ध्यानं मुनिद्वज ॥ ६॥९९
५९ चित्तेश्वर प्रभुमतो मुनि प्रभुमतं ॥ ११॥ १००

- (६०) आनन्दकन्द मति सुषुमन नतकाधः ॥ १०१ ॥ १०१
 (६१) सौवर्गा नागेन्दु मनुष्य सत्वेः त्वं वैत्रके ॥ १०२ ॥ १०२
 (६२) जवाकुसुम संकारं काश्च पेयमहा ॥ १०३ ॥ १०३
 (६३) भूमितरुचि शिरस्तः पद्म पत्रा यता ॥ १०४ ॥ १०४
 (६४) मोक्ष पद्म भवा पद्म पद्मपाति ॥ १०५ ॥ १०५
 (६५) ओंकारं परमं विजः सर्व रक्षाकरं परं ॥ १०६ ॥ १०६
 (६६) त्वन्ता मोषध वर्य रावली नोवयवामम ॥ १०७ ॥ १०७
 (६७) सुखावति समागतः स्वभक्तवत्स पलने ॥ १०८ ॥ १०८
 (६८) नोमि समस्त सुभद्रं रूढ मुरवामर्ष्य ॥ १०९ ॥ १०९
 (६९) नोमि मद्वाक्त्र धरं वादिधरा ठुललि ॥ ११० ॥ ११०
 (७०) बाल विभूषित बाल मुगांकः त्रिशर्मि ॥ १११ ॥ १११
 (७१) गजवन्दति मसर वाहन मुरलाय दुमी ॥ ११२ ॥ ११२
 (७२) रार पद्म भव कल कल कमल विराज ॥ ११३ ॥ ११३
 (७३) चन्द्र पल्लिमल कुरपुर ~~कमल~~ कुंकुम ॥ ११४ ॥ ११४
 (७४) प्रफुल्ल पुष्प धन्द माल धारि ॥ ११५ ॥ ११५
 (७५) वधरा नेपार रिभु वसु सागर स ॥ ११६ ॥ ११६
 (७६) नेपाल वधल भुजसागर लुटगे मोघ ॥ ११७ ॥ ११७
 (७७) रवि सत सम मुरव तेज विराज अम्बज ॥ ११८ ॥ ११८
 (७८) नेपाल मराठल कमल सयुक्त अगुप्त ॥ ११९ ॥ ११९
 (७९) अररा सम विसाल नयन जगत् ॥ १२० ॥ १२०
 (८०) वधर नेपाल मुनि दुरग सागर सयुक्त ॥ १२१ ॥ १२१
 (८१) अम्बज त नया दि दुर शीत तोत्र पधि ॥ १२२ ॥ १२२
 (८२) कमल पारिषा पर मे ~~धर~~ देवाति ॥ १२३ ॥ १२३
 (८३) लोक नाथ जगदा नन्द मुरति शेरवा ॥ १२४ ॥ १२४

भुवनं त्रय

नमः श्री मद आर्घ्यं वलौ किते स्वराय बोधि
 सत्वा मद्वा सत्वाय मद्वा कारुणिकाय
 ॥ ॥ ॥ नमो लोक नाथाय ॥ ॥
 भुवनं त्रय वंदित लोक गुरु अमरा धि
 पति स्तुति वल्लभ वरं मुनिराज वरं द्यूति
 सिद्धि लक्ष्मणं प्रनमामि लोकी ~~हित~~ ^{नाथ} करं ॥
 १ ॥ शुभाता तमज रूप सुरुष धरं बहु रक्षण
 भुषित देह धरं ॥ अमिताभ तथागत मौ-
 लि धरं कन कांचन विभूषित वाम करं ॥ २ ॥
 कृतिलात्म जपि गल धुमजतं सुप्ति विंबु सगु
 गोल पुरा मुखं ॥ कम लोचन लोचन चारु
 नरं हिमखंद विषं मुख गंद ~~मुख~~ ॥ ३ ॥
~~सुध~~ ~~सुध~~ सुध रंजित पंकज नाभिसमं
 सरदं भुजग र्जित मेघ रतं ॥ वहरत्न विभूषित
 बाहु जुगं तनु कोमल शोतर नीतरं ॥ पुन
 मामि ॥ ४ ॥ मृग नभ नीव्य स्थित वारु
 तरु शुभ कुण्डल मराठी लोल धरं ॥ वि
 मलौ कमल लोदन नाभिसमं मनि कुंरि डित
 मेखर हेमवर ॥ प्रनमामि ॥ ५ ॥ कृति व्य
 स्थित चित्र सुवक्त्र धरं जिन ज्ञान महोद

धि पारगतं २ बहुपुशप मुपाजित रक्तधरं
 ज्वलन्वाधि हरं बहुसुखकरं ॥ पुनमामि ॥
 ६ ॥ शुभ शान्तिकरं शुभदान्तिकरं त्रिभवां
 न्तिकरं सचरं स्वचरं तुति देह धरं २ विविधा
 फुल निर्जित मारधरं दशपारमिता परमार्थ
 करं ॥ पुनमामि ॥ ७ ॥ चतुर्वह विहार विच
 क्कधरः तथता द्वय शान विलोल धरं २ म
 निमोपुर्गच्छितपादगुगं गजमं गयरत्न वि
 हंसगति ॥ पुनमामि ॥ ८ ॥ परीपुर्ण म
 हाभूतरक्तधरं शिरलोदज रत्नव नित्यगति
 श्रीप्रेतर काभिनिवास गतिः कस्तुराग मय
 निर्मल चारुदस ॥ पुनमामि ॥ ९ ॥ श्री
 श्री आर्या वलोकितेश्वर भतारकस्य च
 मुक्काना भिक्षुनिवास्तव्यो तोत्र समाप्त ॥

(२) विश्वविन्दुम तनु विजित

नमो श्री ३ त्रिगुणात्मक मदार्थी वलोकिते
 स्वराय ॥ • ॥ विश्वविन्दुम तनुविजित
 दक्षकर वर वर विराजित सतत सुर पति मौरि
 राजित पाद पंकज है २ सर्वहस्त तरुण स
 रसिज मञ्जु परीमर कृत मन सिज विविध
 मूर्तिमन देह मराडल दुलित पंदन है ॥ १ ॥
 जतिर मौरि सिताभ धारन सकल निरंजन
 दुःख तारन विपुल कमरनि सनक रासन स
 मन सासन है २ चारु मुख कृत चन्द्र हासत
 वर्ज संगिति कृत निवासन विघ्न वंश भय
 कृत निवासन ललित लासन है ॥ २ ॥
 पासनि सितस दंकुसा सुग चाप शोभित
 पानि तर जुग रक्त वंदन कृत सुचन स्त्री
 न रंजन है २ स्वान कसूमस भावमिन मद
 स्वेत तर वर वासत तपार जोग निजित विवि
 धमु निवल भक्त सुरवकर है ॥ ३ ॥
 ॥ वामदक्षिण भृकुतितारीनि स्वेततरवर
 वासत तपार संगरंग सुधा सुवारनि तरु रूप
 समान है २ नयन विमलम रोज सुन्दन

धृतिविनिन्दीत ललित मं राडल कामितिज
 न मानहारक विघ्न दारक है ॥ ४ ॥ विवि
 ध बुद्धिसु सिद्धिदायक मुद्धजन मधु बु
 धि पायक सार्यललित विलोकिते स्वर म
 हेन्दु नेस्वर है २ ब्रह्मरुद्र हलिंदु धनपति
 रूप तर्जय सकर नरपति हार परिहित
 तार कातति विविध समत है ॥ ५ ॥ गुरु स
 मुचन भाव भावित चरन जुगजन भु
 वन पावित वैरीवरुप समर घातति ताप
 पापित है २ चन्द्रलोचिरु चित्ति मिदारन
 सर्वजनवर नयन कारणा भृतय वेदवि चा
 र धारन त्रिगुनारन है ॥ ६ ॥ भुवन शृङ्ख
 विनासपारन दुष्ट दिति श्रुति कृत विरापन
 ब्रह्मा बिष्णु महेस भावन करि विघातन है २
 दिवद्रादन पद्म घेरन जनन संहति जनिता
 हेरन वरु स धूति सक्ति विहरन सिद्धि
 देवन है ॥ ७ ॥ चक्र खड्ग सुभेद कारणा
 निखिर चन्द्र सुधा सुवाधक गगन
 मराडल नगरनायक पञ्च सायक
 है २ पवन गमन नि राध साधक क-

धिन निरिवलनि. रक्तवाधक. ज्वलन रूप
 सौजीवहारक. विदायकहे ॥ ८ ॥ जीग
 परिचिति. विजित रतिपति. सौगसंगिति.
 जुवति कृतनति. ज्ञानदासन हृष्ट जुति तीति.
 दिन जन गतिहे २ मकृत सुररति. मोरि
 मराडल. गराड मरागति. विमल कूराडल.
 विपुल भुजवा. विजित भूरन. कमल निर्म
 लहे ॥ ९ ॥ कविन्दु मल्ल. पताप नरपति
 सकल गुनचय. शुद्धसंमति. रचित मत्त
 महिंदु वरगति मृधिर्वधनहे २ वहंति दित
 मति. चित्तचितित. मुचित सुकृत. समुह श्रु
 त. ममित नति सुत. भाव सुचित. ममा सं
 मितहे ॥ १० ॥ इति श्री महाराज धिराज
 राज राजेन्दु कविन्दु जय प्रताप मल्ल विरची
 तं. श्री मदाय्य वलोकिते स्वर. नृगुनात्मक
 स्पतञ्जो तोत्रसमापू ॥ ॥ ० ॥ ॥

(३) इन्द्रादिदेव ॥

ॐ नमो श्री सालदाय ॥ इन्द्रादिदेव
 देव तञ्जो वंदित पादपद्म हस्तासने त्रि न
 यने. शुभ मंगलाय. कस्तुरि कुंकुम सुभा

सितदेहदेवि ॥ तें सालदा सकल सिद्धि
 सदा नमामि ॥ १ ॥ हेमालय विमलसं.
 स्थित पादरूपि २ नेपाल मंदल श्योल त
 म तार रूपि २ श्रीकास्मिदं च भुवने स्व
 र विद्धरूपि ॥ तें सालदा ॥ २ ॥ वेदांतना
 द गुनसंव प्रकासितेन. वागीश्वरि त्रिभु
 वने. स्वर विश्वरूपि ॥ सर्वे नुवं सकल पुस्तक
 शुभाला ॥ तें सालदा ॥ ३ ॥ रूपाविलम्प स
 सिकु नकरासरूपी वागीमनोहर सुरा री
 तपियुषांच निलोत्परा नयनयु गुलतल्य जो
 ति. ॥ तें सालदा ॥ ४ ॥ संसाल साल श्योच
 ना. तञ्जो प्रसानां. देवानरा श्रपसरा धिप
 किन्नरानां वाद्या मनोरथ चवाचनसि
 धि यन्तु ॥ तें सालदा ॥ ५ ॥ कर्पूरिपुंग प
 रिपुं रिपुत तांभुराज्ञे. पुष्पे वा श्रगुन चंद
 न पुजि ताति. नित्यं पुनंम्य सिद्धसा. तञ्जो
 म्पक भावं ॥ तें सालदा ॥ ६ ॥ संपुरादि
 षतञ्जो श्रुक्षय सालदाय. पातालमंध्य ति
 लसा. लय पुजितानि मन्दादि वाक्य

सतजिवित सर्वयन्ति ॥ तैसा लदा ॥ ७ ॥
 खचक्रपं मन्त्रव भेदित मन्त्ररायः सर्वा
 र्थ साधक जना सुगति तमेवं त्वं शान
 शमेव मदुःख विनासयन्ति ॥ तैसा लदा ॥
 ॥ ८ ॥ इति श्री सा लदा तोत्र समाप्त ॥ ० ॥

(४) उपघनकामुनिश्री ॥

ॐ नमो श्री लोकनाथायः ॥ उपघन कामु
 निश्रीः नागसंभव दुति ॥ राजित पानिक
 हल सित वदनं ॥ १ ॥ श्री युगमेश्वर आदि
 जनार्थ ॥ जगत भयंकर कारुणि हृदया
 ॥ २ ॥ श्री अमृता भव शील्यं गत धरीया
 ॥ मृदंग मुखतिगीतवंस सिषितं ॥ ३ ॥
 रवि शसिदेवः प्रशासादिलेन वज्र भवंतु सु
 भः सिधिवर्जसत्त्व ॥ ४ ॥ इति श्री उपघन
 स्तोत्रं समाप्त ॥ ० - ॥ ० - ॥ ५ ॥

(५) चामिकरा ॥

ॐ नमो श्री लोकनाथायः ॥ चामीकरा व
 निमनिः मकुतावलिया ॥ विविन्त विवि
 धीत रत्न विभुपितं ॥ १ ॥ लोल भयंकर
 हर करुणो स्वर ॥ अरुण सुरा सुर सेवित व

दनं ॥ २ ॥ त्रिक प्रेत मुरति शुभ हंतार
 नि ॥ कनादितया दधिः सागर विदितं
 ॥ ३ ॥ लोहित वरसिः सारित दनवर ॥
 कमल नयनः विकसित रेमुखं ॥ ४ ॥
 हाय नाग कुंजलः विसित खगत ॥ मार्शि
 माधव सित तिथिजोगसनं ॥ ५ ॥ इति
 श्री चामिकरा स्तोत्र समाप्त ॥ ० ॥ ० ॥

(६) अरुनवरुन

ॐ नमो श्री लोकनाथायः ॥ अरुनवरुन देह
 सरसिद्धे संभव ॥ दहिन् वरंतर वाम
 कमल धर ॥ १ ॥ श्री युगमेश्वर अभय
 प्रदाता ॥ सत्व उद्धारन दुर्गतिहरन ॥ २ ॥
 षट्गति तारन मोक्ष प्रदाता ॥ अमृता
 भः सिलेंधर निर्मल वदनं ॥ ३ ॥ अष्ट
 महाभय भवभय करुणो स्वरं ॥ श्री
 जयलोके स्वर सुरनर पुजितं ॥ ४ ॥
 शुभद नेपालित वसु इन्दु भगचित ॥
 माधव सितगंगा शुक्र तिथि शनिवार ॥
 ५ ॥ इति श्री अरुन वरु स्तोत्र समाप्त

११

(८) ब्रह्मादिदेव ॥

ॐ नमो श्री मन्त्रु नाथायः ॥ ब्रह्मादिदेव मनुजा
सुरपुजितांग ॥ ज्ञानाधिपं गुणमयं गुणविष्णु
ध्योतं ॥ वागिश्वरं सुरगुरु सततं नमामि ॥ १ ॥
वेदादि सितलचना बिलमन्त्र मिश्रः ॥ स्वर्गक
था दिविनस्प षडु दिगशब्दं ॥ जकित्रयं
त्रिभुवनेन च वागिभिगे ॥ वागिश्वरं ॥ २ ॥
॥ ज्ञान पदानसलिल नमचिन्त बुधि ॥
ध्यानाधिपं विविधासद्रुषं ~~सिद्धि~~ चकि
षिदतं ॥ ग्यानेश्वरं श्री भु वने सचराजरत्नं
॥ वागिश्वरी ॥ ३ ॥ रत्नादि शिपरि कल
पर पुराणिप्रया ॥ चिन्तविचिन्त गुणजन
मान चिन्तं ॥ सर्वज्ञ काल कर्षधरा हिति
ब्रह्म रूपं ॥ वागिश्वरं ॥ ४ ॥ चर्चावि

धि रवी पति हित विर्ये बुद्धिः ध्यानाधि
 पं विविधा ससु सक्तिर्ये चरं ॥ शशिश्च
 रं शिखरे ससु सज्ज ससु ॥ शशिश्च ॥
 शुषरं जनीय विद्यापति सतगुरु भुव
 ने निपुण ॥ वागिश्चरं ॥ ५ ॥ वागिपति
 भुज चतचय वामचापः पुष्टिकृपा मनीसि
 सं सततं त्रध्यानं ॥ तुभं नम नमो न
 रनादभिज्ञ ॥ वागिश्चरं ॥ ६ ॥ इति श्री
 वागिश्चर गित तोत समाप्त ॥ - ० - ॥

(९) कामुनिपर्वत ॥

ॐ नमो लोक नाथाय ॥ कामुनिपर्वत पतिसु
 वरा ॥ जक्ष किन्नर नागमनुक्ष २ दुदु म
 छिदरः सागर नदि ॥ विलं चि नारायण
 देव नमोस्त ॥ १ ॥ चामल उद्देव सागर
 जक्ष नंदिक पिसु राय कमाने २ सूर्य सु
 मराडलः सूर्य सु तैजं ॥ विलं चि ॥ २ ॥
 अष्टसागर समुद नदिः लोक चामल ति
 ने पुर चक्रं २ जोतिमय करुणा मय मुक्ति
 ॥ विलं चि ॥ ३ ॥ श्वेत सुवरा करुणामय
 मेडोः अष्ट नाग चर्म त्रिशुर हस्तं २ असु

नागन वामकमल ॥ विलं चि ॥ ४ ॥
 अनन्त नाग शुदेव शुनाग ॥ मेदु नाग
 पद्म छत्र सुनाग २ अष्टसु नागन वामक
 मलं ॥ विलं चि ॥ ५ ॥ शुवरा नंदिकुना
 र सोभा यः प्रीति सुरा सुर वंद विज्ञाने २
 मफदेक पुन मेघ तुहेसे ॥ विलं चि ॥ ६ ॥
 इति श्री आर्यो वलो कीर्तेस्वर स्प अनन्त
 नाग राजा कृत तोत्र समाप्त ॥ ० ॥

(१०) मयां कृपानि पापानि ।

ॐ नमो लोक नाथाय ॥ ॥ मयां कृपानि
 पापानि काय वाक कित संचैब तसर्बर
 हमे नाथ रक्षमा लोक नाथकं ॥ १ ॥
 नेपाले द्वादशा द्वयः पुना वृष्टि महाभ
 यं नरे नृदेव सस्थाप्यो लक्षमा ॥ २ ॥
 मत्प भूमौ च पाताले दुःखिनो बहुलो
 किका सुरा वृद्धि करस्तौषाः लक्षमा
 ॥ ३ ॥ यत्र यत्र गतस्तत्र सर्व सत्व नुर्कप
 याः समुद्ध रसि पापेभ्यो ॥ लक्षमा ॥
 ४ ॥ संसारे व्यापितो हन्त कथं पाप
 र कृपभया त्वं मेव शरणां मेव ॥ लक्षमा ॥

॥ ५ ॥ सर्व देव मयस्त्वं हि सर्वबुद्ध न
 यस्तुवं ॥ सर्व सिद्धि मयश्चैव ॥ लक्ष
 मा ॥ ६ ॥ सदा कृपामया त्वंच सदा
 रक्षा मयोक्तम ॥ सदा प्रज्ञा मयूतवी ॥
 लक्षमा ॥ ७ ॥ जेन जेन कृतं कर्म तेन
 तदपे धारक. जन्मदिष्टां प्रप्तासि ॥ ल
 क्षमा ॥ ८ ॥ सुखावति न सं प्राप्नो या
 व क्षे सर्वसत्त्वक. तावत्संसार कस्थानं
 ॥ लक्षमा ॥ ९ ॥ ज्ञानिना ज्ञान रूपासि
 दूरि विना दूरवतारक कामिना कामरूपा
 सि ॥ लक्षमा ॥ १० ॥ पूजनियश्च लोके
 श प्रसा वस्य स्वस्त्यपक. बन्धनिय. सदा
 तं हि ॥ लक्षमा ॥ ११ ॥ भक्तिर्वा भक्ति
 को वापि मित्र वा शत्रु कोपि वा. सर्वत्रं द
 यं क्तो ॥ लक्षमा ॥ १२ ॥ लोकनाथं ज
 गत् स्वामि भक्ति कृतं सचेतसा ॥ त्वं
 नमामि पुन भुजो ॥ लक्षमा ॥ १३ ॥ अ
 नेक दुःख भुजामि. भामिता कस्त स
 कते ॥ द्रष्टा स्तेच लोकेश. मोचितास्त्रे
 लक्षमा ॥ १४ ॥ सर्वदेहा सुसंपत्ति चे

तयं कालमज्जयं ॥ अस्तु मे कं स्नत्पच
 भक्तित्वं अचला कुरु ॥ १५ ॥ इति आ
 र्या बलो किते स्वरस्य लक्षाकस्तब स्तो
 त्र समाप्त ॥ ० ॥ ० ॥ ॥

(१५) जय सिद्धि सुरासुर

ॐ नमो लोक नाथाय ॥ ॥ जय सिद्धि
 सुरासुर लोक गुरु. कमलाशन सुस्थित
 पाद जुग. दक्ष पारमिता दिग पद्मकर. प्र
 नमामि सदा वर कारुणिकं ॥ १ ॥ बहुकोति
 नराधिप. लब्ध बलं जय सुस्थित नाद भु
 जि ॥ भव सागर पार गरागधिकरं सर
 नागत सत्त्व हितार्थकरं ॥ २ ॥ कमला
 जोल भूषित गात्रवरं नवभासुर सोभ
 ररा दिक्करं ॥ ३ ॥ मृग ताम्र शाखांजलि
 सोभनखं ॥ शंखि बिम्बु समप्रभ सोम
 मुखं ॥ पट भिन्न गुरागकर बं दित नौ
 वर सुस्थित नौ पुर हातुगं ॥ ४ ॥ म
 रीण कु गडल मरिडत ग राडजुगं. घन
 मज्जित तुल्य गंभीररुतं ॥ गीरी गडोल
 पातल वासितक वृष बाहुन हस मृगी

न्दिशतं ॥ ५ ॥ रितिबर गरागधिप स
 स्तुतिकं ॥ जिनरूप धरात्म करोति धरं ॥
 द्विपदोत्तम नाथ सुराधिपति ॥ बहसत्त
 बिमोचन सुस्थि करं ॥ ६ ॥ ध्वज द्वा
 सुसोभन. वामकरं मल यागर नंदन धव
 रूपं ॥ कमलोत्पर पातलि ॥ दामधरं प्र
 राभाति हपात निबन्द करं ॥ ७ ॥ जल
 राग बिबर्जित कूष्ठ हरं. बहु बोधि वरागम
 भद्र धरं ॥ नव दुर्गति नाशन मार्ग दर्द
 कहराग तथ ता द्वय बिद्व पति ॥ ८ ॥ इति
 श्री मत् श्री ३ आयर्षि बलो कितेश्वर भट्टा
 रकस्य पोतरकास्तब समाप्त ॥ ० ॥

(१२) मरिग कमलास्तव

ॐ नमोलोक नांथाय ॥ ॥ दानवराजनि
 देशित धर्म पुजितरत्नवि शेषित भूषं ॥
 नाशित भेद विशेष सहसुं. श्री जिन
 पद्म कलं पुराभाति ॥ १ ॥ मोहत
 मोमय भूमि मुदरं राक्षस जक्ष गीशा
 बल सान्तं ॥ पारमिकर्ष निय पलन्तं ॥ श्री

जिन ॥ २ ॥ जेतबनाहित देहमधुषं. रोम
 शि बशित लोक समस्तं ॥ मार्ग ध सत्व वि
 मोचित शंदं ॥ श्री जिन ॥ ३ ॥ दिन बभु
 धित पूरित भुतीः खरिडित दुर्गति पूर्ति ॥
 आदितस्पे बक मुक्ति विशीख ॥ श्री जिन
 ॥ ४ ॥ मोहा पहं मिहुरं मूजो रस्मे ॥
 लोक चिन्तिल जलौल हृष्टं ॥ मुक्ति प्रद
 त कहरागद वित्त. तलोक नाथ पर म न
 भाति ॥ श्री जिन ॥ ५ ॥ मृगारस्मे कृत
 नार कैपुं सुर्य दुर्गति सम लिख रम्प ॥
 जातादिभावा द्वय युक्त देव तं लोक नाथं
 ॥ श्री जिन ॥ ६ ॥ समुद्र रत्न सारकं पपं
 ना. सत्वा समस्ताराभिराम भूति ॥ पै
 के निमज्जना रिब हस्त दाने ॥ तलोक
 नाथं ॥ ७ ॥ पादप ने नैब चरोरा सम्प
 कुदहे माना बिख मापे विं निसमं गद शित
 लता प्रीताता ॥ तलोक नाथ ॥ ८ ॥
 पत्पाद सम्पक सम बाप कुं नि. श्री बा
 कलापे रपि गर्भ पुरा ॥ पद्मा पुबोध कुरु
 त सन्ता ॥ तलोक नाथ ॥ ९ ॥ स्वाश्वा

बति पुरितसत्त्व संघ दूतृष्य सैलामृत
 वज्र कल्प ॥ जताकलोष प्रहितामिताभं
 ॥ तं लोकनाथं ॥ १० ॥ पुराणामि सुरासु
 र बन्ध चदं पद बोधकरं करपद्म धरं धरणि
 ज नतापहि ताप हरं हरनिजित विजेशे
 ख धरं ॥ तं लोक नाथं ॥ ११ ॥ स्फुट ता
 स्फुट ताद्वय लक्ष भव भव भवता परि
 गुप्त तनु गनु तात नुता वृति विश्वपरं पर
 मुर्ति मभुत समस्त पति ॥ १२ ॥ पति पा
 लित लोक समस्त गरां गरा किरा नाग
 रामस्पतनु ॥ तनुनिजित माल विशे सतं
 सतसत्त्व रिक्लुपित काम कर ॥ तं लोकना
 थ ॥ १३ ॥ विभु तादिल तलंत भक्ती गुनु
 ग विशे प्रलय ॥ यतत्व मद्यो दीधे पारकरं
 कररा परक जहितार्थकरं ॥ तं लोकना
 थ ॥ १४ ॥ स्वर्गादौ लोक धाता उदित
 तनय दयो देव देवातिराजं ॥ सर्वाधार
 क्रोमागो यभिमत फलदो राज त्रैलोक
 नाथ ॥ १५ ॥ जस्त शिब प्रसादा दश
 रथ इति जोधिर निक्षान्त्र मुर्तिश्री श्री

मल्लोक्त नाथो तव मरिगा मकलो नी
 रु जर्ता मिरापि ॥ १६ ॥ इति श्रीमत्
 श्री ६ आय्या बलो भक्ते स्वर भट्टा रक्कस
 मरिगा कजलास्तब स्तौवं समाप्तम् ॥ ॥

(१३) सर्वभूत मरिगा कंपित

नमो लोक नाथाय ॥ ॥ सर्वभूत मरिगा
 कंपित तुभ्यं ^{दिव्य} सांभन्ति मेव च रितंत वरुपं
 सर्व रूपं वरु सुरुपं ॥ तं नमामि द्वावल बल
 रूपं ॥ १ ॥ भृङ्गि राय शिषि मुर्ध सुक्रे संको
 किराय शिखि दिव्य सुक्रे शं सरि धरि रं मृदु
 कुचित क्रे शं तं नमामि ॥ २ ॥ शरव कुराड कुमु
 राड विमलोग्नं जन्म दुःख विगतं विमलोग्नं शे
 ग स्वक मथ तं विमलोग्नं तं नमामि ॥ ३ ॥
 पुरा चन्द्र धूति सौमित्र वस्त्रं सर्व बुद्ध मरिगा
 भं सुभवस्त्रं बुद्ध पंच जिन भामल वस्त्रं तं
 नमामि ॥ ४ ॥ लक्ष्मी सहस्र विचित्र सुभु
 धि पुष्प वर्षे शत पूजित मुद्दि रन वर्षे श
 त पूजित मुद्दि तं नमामि ॥ ५ ॥ नेत्र ताक
 बिरं रवित शिषि कंचन द्यव वितापित शीर्षि ॥
 नेत्र बितान सु शोभित शीर्षि ॥ ६ ॥ दिप्रीब

लं मकुता मरिा मकुतं चन्द्रपुत्रा मरिाता
 मरिा मकुतं तं नमामि ॥ ७ ॥ चारु पञ्चकबर
 राय^त नेत्रं ध्यान मोक्ष सुभ शोभित नेत्रं तं
 नमामि ॥ ८ ॥ शुद्धकर्ण शुभ शुद्धकर्ण शु
 ध् ज्ञानबल शुद्धशुकर्ण ॥ शुद्ध प्रज्ञाबल शु
 ध् शुकर्ण ॥ तं नमामि ॥ ९ ॥ शुद्धकुराड श
 शी पां~~ख~~ राडल दत्त ति~~क्ष्ण~~ लक्षणा निर्म
 ल दंतं विश्वपचदश पंचशुदंतं ॥ तं नमामि
 ॥ १० ॥ उच्चवाक्म ससुरासु जिह्वाः ध
 र्म ज्ञानकृत पापक जिह्वाः गंधे धुप श
 त रासुरजिह्वा तं नमामि ॥ ११ ॥ मेघसदुंदु
 मि नादित घोषं सत्यधर्मनय नित्य^{मु} घो
 षं दिव्यवादिपर वादितघोषं ॥ तं नमामि ॥
 १२ ॥ ग्रीवग्रीव दश ग्रीव शुग्रीव शान्तिव
 कीर्त्य तव ग्रीव शुग्रीव ॥ हेमवर्गा मरिा ग्री
 व सुग्रीव ॥ तं नमामि ॥ १३ ॥ सिंह मया
 हिम कुराडसु कार्यं ध्यातकाय गुरा सागर
 कार्यं ॥ शुद्धसुलक्षणा निर्मल कार्यं ॥ तं न
 मामि ॥ १४ ॥ स्वेतपीत सुभ सोमवितवस्त्रं
 नील पीत वस्त्रं हल दश बल शुभ सोमवस्त्रं

तं नमामि ॥ १५ ॥ हेमनागकर सस्कृत बाहु
 पुजेदान सुभ सोभित बाहु धीरवीर्य सुभ सो
 भित बाहु ॥ तं नमामि ॥ १६ ॥ चाम्मल चक्रवि
 श्रुपितहस्तं विमलज कोमल ~~कोमल~~ पंक जहस्तं
 भुत प्रेतसुर भागज हस्तं ॥ तं नमामि ॥ १७ ॥ राग
 द्वेषतनु बजित चित्तं ~~दी~~ शील ज्ञानसम भावित
 चित्तं ॥ कल्पकोतिसु मनोहर चित्तं ॥ तं नमा
 मि ॥ १८ ॥ पद्मनाभं सुभ सोभित नाभं
 पद्म योनि सुभ सोभित नाभं धर्म जाति
 शुभ सोभित नाभं ॥ तं नमामि ॥ १९ ॥ लक्ष
 रा चक्र बिभ्रुषित पादं शुक्रशक्ति विरा
 जित पादं देव दानव गारा बन्दीत पादं ॥ तं न
 मामि ॥ २० ॥ भास्करश य भूति राजित
 पादं देव दानव गारा बन्दीत ~~य~~ पादं सर्वदेव
 गारा वंदित पादं ॥ तं नमामि ॥ २१ ॥ सर्व
 देवगन पुजित शीर्ष सुर्घ्य कोतिसमभा
 वित शीर्ष माल्य बिल्वपत्र पुजित शीर्षं ॥
 तं नमामि ॥ २२ ॥ पुष्पधुप सत् पुजित
 शीर्षं दीप गंध शत पुजित शीर्षं माल्य
 बिल्वपत्र पुजित शीर्षं ॥ तं नमामि ॥ २३ ॥

त्रिभुवने धर्मस्वामि ॥ त्रिभुवनस्य गुरो लक्ष्म
लं सुगत शततं निमित्तं पुजयीष्यति यत्नपूर्व
थं ति येन सुगतस्य वपुः कथं नु भवति गम
नं ॥ २४ ॥ इति श्री म दार्यो बलौकितोस्वरस्य स
पस्तव स्तोत्रं समाप्तं ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

(५४) मंजुनाथ कमलासन

ॐ नमो मंजुनाथाय ॥ ॥ मंजुनाथ कम
लासन रत्न मौरि विद्याधिपो भुवनमशङ्क
ल चक्रवर्ति ध्यानाधिपो वितविराजित सो
म्य रूपो बन्दा मेहे सुरनरा स्वरबंदिता ॥
१॥ वारोकृति कूबल योललोहस्त क्युर दार म
रिण कूराडल घृष्ट गंराड षट्पद तेष दवत सु
कुमार रूपं बंदा मेहे सुरनर वितमंजु घोष
॥ २॥ रोमात्रकूप विबलेप रिवर्त मार्तमा
नं विश्वप्रपक्क रनु सुगतात्मजस्य ॥ स्ति
मिभ मन्त तवनाथ गुरागरीब श सु
भम्पा य बुद्ध तनुया य नमोस्तु नित्य ॥ ३॥
गंभिर धर्म नय मार्ग र सुप्रधिस्त ज्ञा ना
दधि निखिलसत्त्व कृतार्थकारि ॥ ४॥
शानि धान गुरासागर उपमेयं मंजु श्री

य जिज्ञुतं सततं नमामि ॥ ४॥ विदित सक्
ल तत्त्व परीता रवसत्त्व कृत जलउप। करि ती
रार्ति दुः खहारि मन्द ममर्थेन विचारुपं च
चिरं त्रिभुवन जनतो रवः पातु मंजु घोष
॥ ५॥ शशधर मिबशुभं रवङ्ग पुस्तक पा
रिण ॥ सुर निर मतिशान्तं पंचचिलंकुमारं
॥ ६॥ पृथुदल वरमोक्षं पद्मपत्रा यातोक्षं
क्रमति दहन दक्षं मंजु घोषं नमामि ॥ ७॥
वारैन्दु रुचि रा भासवार भराभा रिवर्त ॥ ८॥
क्षालाल प्रत्रार्क्ष चन्दु मंजु श्रीयं सदा ॥ ९॥
पात्र वाम करेयस्य भुम मंजुन संनिभं मा
नोन सर्वतलक्ष्मी मंजु घोषं नमामि ॥ १०॥
६॥ रवङ्ग पुस्तक हस्तार्थं चन्दु मन्दलवर्ति
॥ ११॥ ज्ञान ध्वान्त सुखीय मंजु घोषाय
ते नमः ॥ १२॥ शानोतर भावेतु प्रनि
धानं प्रति तथा ॥ संतोदियं मंजु घोषं म
भक्ति त पुरा नमामि ॥ १३॥ शम्भुशक
र तत्त्व सत्त्वकृत्पा दिहरित ॥ सितरित
सम तोषदित मिश्रो दोषं ॥ १४॥ हतजन
भव सैषं श्री यमा मेखपोष त्वधिकत गु

राज्यौष पातुमां मंजुघोषं ॥ १३ ॥ ई
ति मंजु शिखर स्तोत्रं समाप्तं ॥ ० ॥ १० ॥

(१५) लोके स्वरं बिमल ॥ २ ॥ मास्तव
ओं नमो लोक नाथाय ॥ ॥ लोके
स्वरं बिमलसुन्य कृपादचित्तं मार्ग ज्ञा
ता पथित दर्शने पार्थिवान्वम् ॥ सर्वज्ञता
दि परिपुर्णा विशुद्ध देहं शाना धिक्काल
ललितं शिलसान्नमामि ॥ १ ॥ वैष्णवयत्ने
द्वसत्त्वबहु धावभास्य रक्तो अपि पात्र
गजरेषु शशिबयस्मात् ॥ वृद्धिस्त्वे दीप
रम धि मयि मयनुप रूपा ॥ २ ॥ संपूर्णा
वदु बदनं ललितो ललातं देशा धि नि
गत महे स्वर देव पुत्रोऽवैष्णवाराणां भव
जन प्रति बोध नार्थ देवातिदेव मतिमा
न् जमाश्च स्त्व ॥ ३ ॥ वैष्णवयकाम
लभवं प्रतिबोध नाय स्कंधा सुसंभृत
महा शुभ लक्ष मानो ॥ निर्घातन बद्धि
पितां मह देव पुत्रो लोके स्वरं सुरस्वरं
सिलं सांन्नमामि ॥ ४ ॥ वैष्णवय विष्णु
वज्रकन प्रतिबोधनाय ॥ नाजिबषा

रिग हिदयात् ॥ प्रविनिः शृतोऽसौ ना
रायनो त्रिभुवनेश्वर स्वतस्पात युसात्व
मेक पल मोक्षमय बनानान्य ॥ ५ ॥
चंद्रार्क साबर दराहित भक्ति भाजा सदैव
सनाथ मभिनिर्ल सुलोचनाभ्यां ॥ य
न्नि शृतो शशिल बिभु बिलोचनानां ॥
धस्तान्तलाल नमसंतम हं नमामि ॥ ६ ॥
सारस्वति विनय योजित भक्ति भाजा
वाधाय वैभवं बतिह सरस्वतिरैव दस्ता
य तस्तव जनात्मज यंप्रसुता प्रज्ञाभि
लाषि फलदत्त महं नमामि ॥ ७ ॥
वैष्णवय वायु जनिताक्षर मार्ग सिद्धे ये
लोके नाथ मूरवतो अथ विनिः शृतोऽसौ
॥ देव स्वप्तिर नवरो भुमि जन्म भाजा त्रि
र्था पदाथ फलदं नमामि ॥ ८ ॥ वैष्णव
य वाहरा शिवाय नमि मिंसितानां
संवोधनार्थ मुनिदासगता मया स्य ॥
यन्नि शृतो वररा देव बोलोपेक स्मा
दे श्वर्य सिद्धि फलदं शतत नमामि ॥ ९ ॥
॥ वैष्णवय संमत फलाय त्रिलाक्ष रावै

संसिद्धिय प्रबल को लक्षणा पाद पञ्च
 मात् यन्नि भूतो भगवति धरणि प्र
 सिद्धा तं लोकनाथ मसमं तमहं नमा
 मि ॥ १० ॥ संसार मुक्त मपि सुष्ठि न
 मेव तत्र कारुण्य तश्च भव चारी शित
 त्ववेग ॥ भुया छिति मम सद धिर मा
 भवंतं मेव महा सय बलं पमहं नमामि
 ॥ ११ ॥ एकन पाद त रकेन भवने
 केन वा क्रान्त मवलमेन नल लोक धा
 तो ॥ कल्पान्त दग्ध भुवने जोलितो प्रहि
 निः स्यात् सबायु बलतस्त वनिवृत स्यात् ॥
 १२ ॥ त्वत्तज निमुरवं धृतो हितमर्ज मेन
 सचालिता स्वबहुमेर गरागरा रवस्य ॥
 कौशौ धृत जल धृतो य मसेरवत स्यात् ॥
 सार्ध मादृस महो भव लक्र टोन्प ॥ १३
 ॥ कौदं च शशव परं ननु बारु हृष ॥ स
 पश नियबल को मल बाल चन्द्रं दुर्बल
 माल मथनं तु भय करोय विकारिद्र
 स हपल कोच बेष्टितं ॥ १४ ॥ यथा ब
 ताज ननिभोरु जया बलि सा कौतिरे

चा रुबिकाटा ॥ स्वशिरोरुहा ग्रां
 क्रेस्पं धन जोलित बिस्फलि तत्ववृहे
 धुमाबलि च बिमलानन नुरक्षतेते ॥ १५ ॥
 त्वकातिले शविश रेश ॥ दिक्तेताने प
 क्षा सिता क्षय कृशा शकला शुभासो
 सूर्यन्त दुस्त शशिलो भुवन पूर्यन्ते
 मन्प बिराजि निषिलं तव कान्ति ले
 शात् ॥ १६ ॥ विद्युजकुमापित सं
 मतं मतं नरानुरासा हितसं पथ पथं
 परार्थ परार्थ संपादि तसंबलं बल न
 मा मि भूमि स्वर ला जिनें जिने ॥ १७ ॥
 प्रपीत्व निर्वारा भवं स्थित स्थित प्र
 भा स्वरा धिधित संहितं हितं समाकृ
 ता शेष जना शिबं शिबं नमामि भूमि
 स्वरला जिनें जिनें ॥ १८ ॥ गर्भस्ति
 माला मितसंकुलं कुलंतत स्वपारोण
 धृत पंकजं रतानुगासा ॥ हितसरतं रतं
 नमामि भूमि स्वर ला जिनें जिनें ॥ १९ ॥
 स्वधम्म धातु कसुरा परं परं शुभा
 दिसं भाल शुसं भृतं भृतं ॥ बिक्कल

हिता ध्वनि देशकदा नमामि भूमिस्वर
 लाजिनं जिनं ॥ २० ॥ तथता तथता द्वय
 शात शंतशं सतसत् पुरि पुरित धर्म
 कथं ॥ कथमिय विराजि जित सत्प
 ल सलशीसद् रोचन चारु ~~नुर~~ नुत्तरं
 तल शाखिलं सत्वाबिद्रुद्धि परं प्ररा
 म्प धरणि स्वर लाज बल ॥ २१ ॥ ब
 ल निमित्त भोग पलाथलतं रत शुन्य
 निरंजन धर्म धरं ॥ धर निद्रु विबो
 धित सिद्धि परं प्रराम्प धरणि स्वर
 लाज बल ॥ २२ ॥ वर सत्सहजो द
 धि चन्द्र मुखं मुख भारित सर्व निमु
 क्ति पदं ॥ पद भुषण लक्षणा तानु प
 ल पुराम्प धरणि स्वर राजबलं ॥ २३ ॥
 लोके स्वराय तवरत्न रा मर्जित रत्न
 जीवरत्न पादात् ॥ अवापि यन्ते
 नन्दु भं प्रबिर्न ते नैव लोके ५ स्तु सम
 त्त भद्रं ॥ २४ ॥ इत्यार्य बलो कि तेस्म
 स्म रत्न मालास्तव स्तोत्रं समाप्तम् ॥

ॐ नमो लोक नाथाय ॥ ॥ सर्वसुरासु
 रं बा देवी भुते ज्ञानमनोहर भावित्त भस्तं मो
 ह मद्य नवे नासनब्दे ॥ श्रीजीनपाप हरा
 य नमस्ते ॥ १ ॥ वार विचारकर क्रांति सु व
 र्णा रत्न बिनिर्मित कुराडल अ पाणि गरा
 पिस वेत समस्तं ॥ श्रीजीनपाप हराय नमस्ते
 ॥ २ ॥ सर्व कबसर निजित्तमाल सर्व शिरोम
 रि चूकित पदं ॥ श्रीजीनपाप हराय नमस्ते
 ॥ ३ ॥ त्वंगातिनिजि दिल धाता के पत्रं निर्व
 ल निश्चल निक्किप शान्त व्याधिसहस्र बिना
 सन बैद्यं ॥ श्रीजीनपाप हराय नमस्ते ॥ ४ ॥
 शुक्ल सनाकबयेषीति नेजं ॥ आत्म मचु
 नम सोमित भेदं शुद्ध विधान बिभावि
 त मुक्ति ॥ श्री जिन पापहराय नमस्ते ॥ ५ ॥
 करुणा पुजित वारिा दो न कल्पा ॥ नशिड
 क पुस्त बिरोचन तब्धं ॥ श्रीजीनपाप ह
 राय नमस्ते ॥ ६ ॥ तादेसौ अब संगरवि
 तारोक जिनं भव यपि नमस्ति ॥ तापि
 हियाति भराय न भुयो ॥ श्रीजीनपाप
 हराय नमस्ते ॥ ७ ॥ निसिनि धृत मात्रे

नाशु तृतिगतस्य मरुत बिधुर घोर. गर्भ
बास्य धनुर्न. तदु भयगुरु दुःस्त्रीस्वभा
नं कृष्णारो तब शनन गतं हित्रा मादि नमरा
॥ श्री जीन पाप हराय नमस्ते ॥ ८ ॥ इति
श्री आयपी बलो कितेस्वरस्य स्वकारास्त
व समास्ता ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

(१६) स्तुत्वा गुरोरनुप

ओं नमो लोकनाथाय ॥ ॥ स्तुत्वा गुरोर
नुपसौर नु बिन्दु पात्र स्वयं याकृत मिदं ज
द बारिस्पनं ॥ लोकेस्वरं गुरारिणाधि गुन
सागरं च नित्यं नमामि शिलसा ज्वलितं
पुत्ररा ॥ १ ॥ बान्धु सुपास वतियन र
साबु पाराक्ष तृष्णा दुःख पदि पीदित स
र्व सत्वा स्वर्ग बिद्धि जं दित परिपार नाय
तस्मै नमस्त ॥ शततं धी यथा ध्याते नि
त्यं नमामि शिलसा ज्वलितं पुत्ररा ॥ २ ॥
शंक्रु कुमानव हराग कोश मानवर्षा द्वात्री
स रक्षरा ॥ विमुषित गात्र स्वर्ग ॥ स
र्व जन्म पसकायन वस्मरतो कायन वस्त्र
मनसा पुरामामि नित्यं ॥ नित्यं नमामि ॥

३ ॥ संसार सागर मदारय नासदर्श ॥
ए त्रिमेव च न भुवि नै लोक नार्थ ॥ कना
पित्व गुरागारा ~~ना~~ पमेस्व ॥ त्वलोक ना
थ ममरो कुत नासर्ज ॥ नित्यं नमामि ॥
४ ॥ रत्न कृता भरणा मरिडत दिव्य रूप वा
रेण्ड रगन जतन बिभूषितं लोक नार्थ ॥ च
रणा पुरात्वमि ॥ नित्यं नमामि ॥ ५ ॥
ब्रह्मेन्द्र यो परिवृत सरसिद्ध संधै. गंधर्व किन्न
र महोरग नाग यक्ष नाथस्य तस्य भव च
रणा पूज्य त्वं लोक नार्थ चरणे प्रजास्मिं
नित्यं नमामि ॥ ६ ॥ भुत पिशाच गरुडे
रथ राक्षसिभि कू भीर बुरड महोरक राज
राजै. बिश्वानरा शुर शतं परिवार भुतौ
लोक नाथस्य चररो सरनं यतो स्मि ॥
नित्यं नमामि ॥ ७ ॥ स्वर्ग दिवाकर कै
रै न हि श्व प्रमति. तद्धृक् बिश्व रस
वर्ते गुरा सागर रोपि ॥ लोके श्वरस्य प
थित. किंतिनि धरत्वया. न प्रीयते गु
रा निधि परमेश्वरस्य ॥ नित्यं नमामि
॥ ८ ॥ श्री काश्वं पतिदिनं प्ररु पथेते

पेते प्राप्नुवन्तो राहसा धन पुत्र मोक्ष॥
 कुष्ठा घिरोग रागीकराक्ष यतास्य गति
 च सा महेस्वर नित्त तब पादनुगपे ॥ निले
 नमामि शिलसा ज्वलीत पुतना ॥ ९१ ॥
 इति श्री कुरुरागस्तव समाप्त ॥ ० ॥ ० ॥

(११) नमामि लोके श्वर

ॐ नमो लोक नाथाय ॥ ॥ नमामि लो
 के श्वर पर्थनाय दारीवं पुष्पं मुष्प सन्नि
 भायं ॥ स्मृत मोरि शिते सोमनियं ॥ त्रैलो
 के नाथ भुवने स्वराय ॥ १ ॥ निमैल श्रुं बहु
 कोमरायं विशार सुरोचन सुन्दराय ॥ मे
 धुर बाके हरित रूपायं ॥ त्रैलोके नाथ भुव
 ने स्वरायं ॥ २ ॥ विरिचि कुशा हल बुध
 नायं दिनकर मीरा दश किरणा यं ॥ जग
 त समारित कारुणायं ॥ त्रैलोके नाथ भुव
 ने स्वराय ॥ ३ ॥ मार्ये गरे पीरुं स्वभवं सिं
 दूरत बहु पुष्पनायं ॥ गंठितमार उपदोष
 नियं ॥ त्रैलोके नाथ भुवने श्वराय ॥ ४ ॥
 कनक रत्न मीरा रं कृतायं सर्वावरन
 देह पुष्पनायं मुक्ता भैनानं परिश्व

भनानियं ॥ त्रैलोके नाथ भुवने श्वरा
 य ॥ ५ ॥ सत्वादि सर्वन्न उधार नियं नो
 दित कार्य सफलं प्रदातं ॥ आस्तादि भय
 परि मोक्षनियं त्रैलोके नाथ भुवने स्वरायं ॥
 ६ ॥ नकुब्ध व्याधि रोग सदायं देहि प्रसन्न
 मन मुक्ति शुभं ॥ उत्तर निर्त कित कार नि
 यं मोक्ष सुमार्ग फल देहनायं ॥ ७ ॥ शु
 भाधिकारं शुभ मंगलायं देवांति देव परमं
 प्रदायं ॥ जरा मरणां त्रिमलं हराय त्वं नो मि
 त्रि भुवन व्यापिनिय ॥ ८ ॥ धम्मात्म वेत्त
 जगतार नियं मोक्ष प्रदातं कुरुवं हरायं
 त्रिन नाथ गुरा सागरायं स्वस्ति नरक
 परि मोक्ष नायं ॥ ९ ॥ रक्षता रक्षता रा
 राग हर द्वेष विनास नमो हारं ॥ हर मो फल
 मार विनासकरं विग्न हर फल देह पदं १० प
 द दुर्गति नासन मोक्ष पदं पाप विनासन
 मुक्ति पद ॥ ११ ॥ लक्ष्मी कां नाम्ना चिरं
 कारं भवं ते सदा जया ॥ धन धान्य वीक्षित
 मनो भुक्ति मुक्ति फल प्रदं ॥ १२ ॥ इति आ
 र्ध बले निते श्वर स्य मुक्ति मालस्तब स्तोत्र समाप्त

(३४)

(१८) अमितरुचि

ॐ नमोलोकनाथाय ॥ १ ॥ अमित
 रुचि शिरस्थं पद्मपत्रा यता कं दुरि
 त कृत विनाश मोह माया हिताक्षं ॥ २ ॥
 र धृत कनकाक्षं लोक पालै कदक्षं पु
 शा मित शिरसाहं नौ मितं लोक नार्थ
 ॥ ३ ॥ प्ररुगा वदन शोभं बोधि विज्ञा
 न हेतुं मरिा मकुतसं सारकां बोधि से
 तु ॥ मनसिज कृत नास बोधि सत्त्वादि
 हेतुं प्रशामित शिरसाहं नौ मितं लोक ना
 र्थ ॥ ४ ॥ सरसिज कृत बासं, दुरकं दुर्जपा शं
 सुरनर दनु जासं पुरा चन्दु पुष्पासं ॥ सुकृ
 त जन बिलासं कौटि सुय्यं वभासं प्रशामि
 त ॥ ५ ॥ उरसि विहित नाभूं गं मो चिता
 शोषरागं भवजल धिबि भागं मोक्ष सौख्ये
 क मार्गं ॥ प्रतपित कनकांगं बोधि बोधे
 करार्गं ॥ ६ ॥ जिनवर सुतराजं मुक्ति
 माला विराजं सुललित फनिराजं कि
 र्तितां च विराजं ॥ प्रमुदित बलिराजं
 पालिता मर्त्य राजं प्रशामित ॥ ७ ॥ धृ
 त मधुकर रूपं क्षतिपा सात कुपं सु

(३५)

चरित ह्यरूपं सिंहला दत्त भुपं ॥ श्वरु सुर
 मिधुपं धरिता शेष रूपं प्रशामित ॥ ८ ॥
 त्रिविध विधृत पापं मेहर त्वंतुतापं प्रति
 दिम मितिजापं देव चक्रे विरापं ॥ निल
 य भय कलापं भेदया ज्ञानचापं ॥ ९ ॥
 विहित शुभ जनानां मूक्तितपो द्यताना
 बिगलित रूपानां भक्तिपुजा रतानां ॥ बल
 कूडाल समुहं संप्रमोदे स्वभक्त्या श्व
 दिकृत बिलापं माकृपा राजपापं ॥ १० ॥
 दशबल कृत सिद्धि सद धै बुद्ध बोधिं ज
 नम मरणा भितो मारपासा भितित ॥
 मन सिमलिन वृत्ते पुरिज्ञान विचे श्रवदि
 कृत बिलापं मा कृपां राजपापं ॥ ११ ॥ प्रब
 र सुगत रत्न धम्म कार्य ससंध शरणा
 मिह प्रथामि कारितानं गर्भगं ॥ प्रसु
 दित मनसाहं बोधिलो भै कयलं अब
 दि कृत बिलापं मा कृपां राजपापं ॥
 १२ ॥ श्रीलोकनाथ चरणां बुज भक्ति
 पद्मं पीयूष नन्द रुचिता भक्ति विस्तरा
 दं ॥ सप्ता विधा च न युता द्ररसां ति

दृष्टं सौषावति गगन मार्ग कमस्तु स
 द्य ॥ ११ ॥ स्तुत्वा लोको गुरु मुनिस्वर
 वरं सर्वार्थ सिद्धि पदं यत्पुरो समुपा
 जितं व्रजतु तत्पु शप नसौ रवावर्ति ॥ श्री
 लोकेस्वर पाद पंकज रसोल्लासैक हर्षो
 दितं लोके क्लेशवरं सुदुर्जय बलं जित्वा
 प्रमुक्ता मलं ॥ १२ ॥ इति श्री प्रदाय्यो
 वलो किते ह्यरस्प सप्तविधा नुत्तर स्तो
 त्रे सप्तप्राप्त ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

(१६) मार्गेश्वरं पुवर भाष.

ॐ नमो लोके नाथाय ॥ ॥ मार्गेश्वरं पु
 वर भाषण मान काय संसारिके भवति
 सत्य बिद्वेह विचर ॥ प्राराणाति पाट विरहा
 न् रक्कु मुक्ति लोकेस्वर शतं तब पाद युगं न
 माप्ति ॥ १ ॥ दुदान्त निहुर महा कसुरा
 वशेषो नागेन्दु लोक इह हलोक भय प्र
 दत्ता ॥ प्राग्दत्त दान विरहा भयभित नशो
 लोके शतेन तब ॥ २ ॥ कल्पान्त दग्ध हुत
 भुक् जोलितो गते ज ४ सन्ताप सत्व बहु
 दुःख विनाशकारि ॥ सुबुद्ध चर्य चरिताद

प्रि मोक्ष मार्ग लोके शतन ॥ ३ ॥ नाना
 तिलं कृत फनाम निपन्न गोसौ दंष्ट्र कला
 ल बटना ललात्रि हृ दंष्ट्र ४ ॥ सौरादि पान
 विरता दन्ति भित भं गोलोके श ॥ ४ ॥
 दुःखा हिक्का पुरुष तस्कर कोतिहन्ता सौव
 रीरूपे परमार्थ विघात चित्त ॥ नृत्पादि किन्न
 विरहाट् भय निहुरौ बैलोकेश ॥ ५ ॥ स्थु
 ला यसौ निगड बन्धन कोल शक्त गौवातिक
 केश खराति परोपकारि ॥ उच्चासनादि
 विरहा सम वद्ध शान्तो लोकेश ॥ ६ ॥ दु
 र्गान्ध तोय निधि चंचल भ्रं गबाहो भो
 नादिन क्र क्रम धार य पूर्ण भीत ४ ॥
 शय्या सनाय लनाजल भीत हारो लोके
 श ॥ ७ ॥ पेशाच दानव महा भय रूप
 देह को धाती भिजन तरा नर मांस भ
 क्षिप्त क्षि ॥ वैकल्प भो भोज्य विरता दभ
 यं करोसौ लोकेश ॥ ८ ॥ खडाग मा
 र्ग समुपोषध राज रत्नं लोकेस्वर स्पवर
 धर्म महा प्रसिद्ध ४ ॥ नित्यं सदा सतम महा
 भय भित वितो लोकेश ॥ ९ ॥ लोकेस्वरा

यस्तु ति संचितमेव लीला बजे रा दान
पतये शुभ संपदार्थं सत्वोपकार पमार्थ
पदं विशाल तस्मै नमोस्तु सततं जिनपुत्र
काय ॥ १० ॥ इति श्री मदार्यावलोकितेश्वर
स्वास्महाभयहरा हृदयमालास्त्रं स
मापूज ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

२० भुजेवामे मन्त्रशिरशि

ॐ नमो लोकनाथाय ॥ ॥ भुजेवामे पद्मशि
रशि शिरसं रव्या नवगत श्रुति राजिरी श्री जि
नमुकुत शोभा परिबित ॥ गलालं बिम्बाल ४
कटित कुरगा जिनधार ४ सलोकेश ४ स्वाभि
प्रतिदिन मया याद व्रतुन ॥ १ ॥ यदि याज्ञा
पुर्व स्वसिति तनुजै लघितुमरं यतते भुवन्दि
तिसुत गनास्त्रा रारागारा ४ ॥ विनेयानां
तेषां मुपकृति मकाषी तम्ब यमपिः सलो
केश ॥ २ ॥ उदन्वत् पारेय ४ समगम
यद श्वै ४ खगपथा क्षीराक सुनुं क्षोणी
पतिकमलया योजयदूफि ॥ ज्वल दि प
ज्वाला बिलुत्रित कुरगारा शितरिपु ४ स
लोकेश ॥ ३ ॥ षडरौर्जिपुं यत पिबति

मनुजो दीपकयुतं सुवीज पाला संभवति वि
रलं तस्य गरलं ॥ अहो धन्यं याम्पार्क्षं शि
खितिचिया वादिदिवसः सलोकेश ॥ ४ ॥
॥ धिमानं सद्रज्जुकृत भुजंग राजं प्रतिबसत्
सहाहा हुहुमि ४ कृतस्त्रिचिर बादित्र निनदै ॥
भुवर्च ४ स्वमेदिं रथ चररा घोषे प्रातिक्षित
सलोकेश ॥ ५ ॥ वक्रबोह सारथ्य मभ
जतदां अस्मर रिपूश्च तुर्व कुत्रो वदित्व मभ
र पतिश्च धृगभूत् ॥ विदिजिद कपाला
स्ते रथचररा धुर्या सम भवन् सलोकेश ॥
६ ॥ गिध्वत्पात हेतु ४ प्रकट यति नेपाल वि
षये सुरक्षां पंचारव्यां सुरसिखरि श्रुवे
प्रतिबसन् ॥ चकारा विस्वांगा दुहिन श्रि
मुरव्यान् सुरगरागान् सलोकेश ॥ ७ ॥
~~स्वां~~ परेतेत् स्वर्गेति को नर क
तषी ते शो दिनकर शुधांशु ४ कल्प पुवि
विधतनु धारी भयमुखः ॥ महा कौला
लेमित रुनिगुरु ४ वै च जिन पात्र सलो
केश ॥ ८ ॥ इयं यावद्वेद्यै ४ स्ततिरतु
रवसालि जनीन कृपा सिधो जीमत्पद

कमलपयो १ शोभतं चरुं ॥ मदीया विज्ञप्ती ४
कवि जयमुने स्मृतिरीब धियं त्वं भुया दि
ति कमल पारिण विजयते ॥ ८ ॥ इति
शीलौक नाथ स्प सुंदरास्तवं समाप्ता ॥

(२१) सिंधुरिलारुरा

श्रीगरोदायनमः ॥ ॥ सिंधुरीलारुरावतु
तुवं भं निलजशक्ति कला परिलंभं ॥ १ ॥
न गुराग धिप सिद्धितस्पवं नौमिसदा
गरा नायक देवं ॥ २ ॥ निलसमाधुत
लायुत लायवने वं हस्तीमनोहरं सुभन
गात्रं ॥ दान रसात्मृत पात्र द्वावं नौमिस
दा ॥ ३ ॥ सुप समाकृति करी विरं ना
एद तुवर ताल तुतल शोनरसा मृत विवि
र भावं नौमिसदा ॥ ४ ॥ पात्रा फलं
कुश निलजहस्तं पिवर कोकल देह सुपु
स्तं ॥ नन्दिकला दित मर्ज सुहाम ॥ नौमि
सदा ॥ ५ ॥ कौस्तु कन्य कभीमि गुहा
र्यं विक्त मखकृता तुनिकायं ॥ मुख कला
ज कृता मन नावं नौमिसदा ॥ ६ ॥ हेम
मनो हर कुंराडल हालं लम्बगुरु दल ताल

मुदालं चतु मनोरथ सत्पतसावं नौमि
सदा ॥ ७ ॥ तिष्ठसरिर तलोक तरा ख
बर बारुरा चंचल करी ॥ यकसिता स्फुट
न्त सुहावं नौमिसदा ॥ ८ ॥ चन्द्र धृति सम
निर्मल कायं रत्न विभूषित देव्य रूपायं ना
ग अलंकृत मुद्य सो भावं नौमिसदा ॥ ९ ॥
द्वारिं सरक्षरा वुक्त तत्वगात्रं हृदयकारं
ताल शुपुत्रं नृत्प पदासन साथि देवं नौमि
सदा ॥ १० ॥ वालचतिवर पंक्ति भाषं
सूर्यं विनायक स्तोत्र विद्वेषं येन पठति स
दा सुष चिन्तते तु भवंतु महोदय देवं नौमि सदा
॥ ११ ॥ गरानां गरा नाथायं सुधिर सुभ
मंगलं कामनासु प्रसंपन्ना देहि मे सर्व स
पद ॥ इति गरापति स्तोत्र समाप्त ॥ ॥ ॥

(२२) सर्वसुरासुर वंशे

नमो लोक नाथाय ॥ ॥ सर्वसुरासुर
वंशे विभूते शानमनोत्तर भावित चित्त ॥
मोह महाराव शोषराक्ष ४ शीतिज पाप
हराय नमस्ते ॥ १ ॥ बाल दिवाकर कं
न्ति सुवरा रत्न विनिर्मित कुराडल करी ॥

प्रारिणागरा धिल संचित् श्रेष्ठं ४ श्रीजिन
 पाप हराय नमस्ते ॥ २ ॥ अथ वत्सर नि
 जित मार ४ सर्वसिरोमरिणा चूर्णितपाद
 ॥ पौतर पर्वत देव निषादं श्रीजिन ॥ ३ ॥
 स्वर्ग नदिजल धौतक पर्द निर्मल निश्च
 य निश्चिन्त शान्त ॥ व्याधि सहश्रु निना
 षन बैद्य श्रीजिन ॥ ४ ॥ अथ शशां
 क पुयधिति तेज आतु ममरुन्म भसाई
 हभेद ४ ॥ अथ विधान विभावित मुर्ति
 श्रीजिन ॥ ५ ॥ धर्म राज सुगतालय देह प
 ज्ञलोचन दण्ड लोयत नोचनरम्प ॥ सत्कम
 लो परि सुस्थित देह श्रीजिन ॥ ६ ॥ केन
 न पुजित वानसि भक्त्या त्वन्नमाभि
 भोसिन केन च सकृत्पा ॥ नंदिक पृष्ठ वि
 लोल मितं च श्रीजिन ॥ ७ ॥ तावद सोम
 ब सागर विन्ता लोक जित भय पि न
 मन्ति ॥ तेपि हिंयांति भवायरा भुयो श्री
 जिन ॥ ८ ॥ मनसि विधृत मात्रेणा सु
 भी ति गतस्य ॥ मरणा विधुर घोरि गर्भ
 बासे ननुज ॥ ९ ॥ तदुभय गुरु दुःखं

ममानं कृपालो ॥ तव शरणा गतं हि त्रीहि
 मां हीन मेनं ॥ १० ॥ इति ध्योवलोकी तै ख
 राष्टक समाप्त ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

(२३) सौम्य मुरुति
 नमो लोक नाथाय ॥ ॥ सौम्य मुरुति
 अक्षर मरिणा सव २ अनादिवुद्ध अहर्षति प
 रमे स्वर ॥ १ ॥ त्रिभूवने जयं जयं करुणोश्च
 र बाल चन्द्र मकुताबल भुषणां २ मुकुत केश
 भयं करं व्याघ्र चर्म निवासन ॥ २ ॥ एवा
 सुकि यज्ञो पविता न रीश राबलि शीभि
 ता २ उर्ध्व कुराडल अस्थि भरणा करति
 कपाल धरा ॥ ३ ॥ एवम मल स्थिता वरमा
 र्दं परिमोचना ॥ ४ ॥ जिन जिनालय
 लोक प्रवुद्धा २ तेन तेन रूप प्रकाशिता ॥
 ४ ॥ कम कट्टेम इह गिरी यावराहा २ मत्प
 भुवन नर हृदया चित्तगुरा ॥ ५ ॥ कनक
 सुतरत तर्धनराहा मार्ग सदानपति परमे
 श्वर ॥ ६ ॥ इति श्री लोक नाथा गि
 त समाप्तं ॥ ॥ ॥ ॥

नमो मंजुनाथाय ॥ ॥ ब्रह्मादिदेव मनु
जा सुर पुजितांगं शानादि सर्व निलयं गु
रा राजमनं ॥ शानाधिपंगुरा मयं गुरावृ
द्धि वंत्तं वागीश्वर सुरगुरुं सतन्नमामि ॥
१ ॥ वेदादिशास्त्र रचना खिलमन्त्र विद्वां
स्तोत्रा कथा दिभि रशेष सुगीत शब्द ॥
यं किंति यंति मुनयो नतवा राप भिज्ञवा
गीश्वरं ॥ २ ॥ ज्ञान प्रधान सारि र भवि
न्त्य बुद्धि वाचस्प तिर्दिभुवं श्रुत कीर्ति दत्तं
॥ ज्ञानेश्वरं त्रिभुवने सचरा चरत वागी
श्वरं ॥ ३ ॥ रत्नादि शिल्प परि कल्प न
पुरा श्रयं चित्रं विचित्रि गुणां जन माननि
यः ॥ सर्व शकारक धरा हृदि ब्रह्मा युजं वागी
श्वर ॥ ४ ॥ चर्या विधिरति पतिं स्थिर धै
र्य बोधिं ध्यानाधिपं विविधिना सुख रञ्ज
नियं ॥ विद्यापतिं सतगुरुं भवने निपु
रा वागीश्वर ॥ ५ ॥ वाराण पतिं भु
ज चतुष्टय वाराचपै पुस्ती कृपा रा म
नि संक्रमत ४ दधानं ॥ तुभ्यं नमो नम ४
नमश्चररागर विन्दं वागीश्वरं ॥ ६ ॥

नमो मंजुनाथाय ॥ ॥ नमामि मं
जुनाथाय त्रैलोक्य व्यापित तुल्य मया कृ
तं तुमे पादो नम ४ श्री मंजु नाथं ॥ १ ॥
मौलि जोगतिश्वर चैत्य परि सिद्धा सनक्षी
तं बोधि सत्वन मोस्तुते नम ४ श्री मै ॥ २ ॥
लोकेश्वर जगत स्वामि अमिताभ मौ
लि धरं दुयस मोहन काम नम ४ श्री मंजु
नाथ ॥ ३ ॥ स्वर्ग मध्य च पाताले सर्व स
त्त्व उद्धाररा पद्म पारिा महावीरं नम
श्री मै ॥ ४ ॥ दहिन श्री विनायक वाम
महा भयंकरं पद्म नृत्येश्वर मध्य नम
श्री ॥ ५ ॥ रत्न मकुत सोभा य खड्ग
पुस्तक धरं धनुधारि मंजु श्री त्वं नम श्री
॥ ६ ॥ पूजनि पंच मंजु श्री पुष्प धुपू स
हितरे वाद्य सव्य सूर्य गल नम श्री ॥
७ ॥ विद्यानां विद्या राज त्वं सर्व विद्या
सिद्धि फलं सर्व सत्त्व हि धैकं नम श्री
॥ ८ ॥ चन्द्र सूर्य सु मराले बहु तेज सु
सो मितं प्रहृतेज मंजु श्री त्वं नम श्री
॥ ९ ॥ रागद्वेषा भिमेचन मोह माया वि

नासनं तत्सर्वं हरणं मोक्षनमः ४ श्री ॥
 १० ॥ मंजुश्री त्वं जगत्स्वामि कालिजले
 भिक्षोदितं नेपाल मंदलस्थापे गुरु त्वं च
 रशान्नमः श्री मंजुनाथकं ११ ॥ इति श्री
 मध्वजाचार्ये भरणा विज्यास्तवं समाप्तं ॥

(१६) नमामि जिननाथाय

ममोलोक नाथाय ॥ ॥ नमामि जिन
 नाथाय नित्या नित्यविधायिने ॥ निरवर
 विशाराय निर्विकल्पाय ते नमः ॥ १ ॥ मोक्ष
 दत्ता कृतं मोक्ष सोरव्य प्रदेशकः ॥ मेरुमरा ५
 मध्यस्थ मोक्षदाय नमोस्तुते ॥ २ ॥ लोभकं
 दर्प पासाय लोकेशाय महात्मन ॥ लोक
 रक्षा यदेवाय लोक रक्षायते नमः ॥ ३ ॥
 कनकाचर मध्यस्थ किन्नरै रूप पद्यते
 ॥ किति हेतोः समा ध्ये कक्षां तिदन्ता मु
 पास्महे ॥ ४ ॥ नानारत्न समुज्ज्वल नागा
 भरणा धारिने ॥ निरवद्याय बुद्धाय बोधि
 दाय नमोस्तुते ॥ ५ ॥ धानु रक्षा कृताधिर
 स्थान प्रसा प्रपालकः ॥ लोचना मामादिशा
 रा पाराडलाभो नमोस्तुते ॥ ६ ॥ यक्षराक्ष

सबेताल भुजंग भय भेदिने ॥ अमिताभ
 किरिताये सिद्धि दाय नमोस्तुते ॥ ७ ॥
 भिक्षु नोन सहश्राणि भिक्षु रक्षायते न
 मः ॥ श्लोकाष्टक मिदं पुराणं कीर्ति हेतो स
 माधिय ॥ ८ ॥ इति श्री मदाय्या क्लोकि
 तेश्वरस्य स्तोत्र समाप्तं ॥ ॥ ॥ ॥

(१) सौपरी नागेन्दु ॥ नमो लावनाथाय
 सौपरी नागेन्दु मनुष्य सत्वे ४० वर्षं चैत्रक नित्य स
 मर्च नाय ॥ शाल्यादि धान्य भुविजं प्रदत्तं
 तन्नोमि लोकेश्च पादपद्मं ॥ १ ॥ साह
 सु सप्ताब्द वर प्रदत्तं त्रंशत्रय स्वर्ग महा सुखा
 र्थी ॥ वेमाद्य बेसेवन पुजना प्रतन्नोमि ॥ २ ॥
 शुक्लानिधाने त्रुलुवन्द मिथा दुःखारति चं
 पारग बोधिसत्त्व ॥ महानुलंसा विदधे द
 नुत्तं तन्नोमि ॥ ३ ॥ म ~~क~~ कृत्वा सुचौ
 प्रार्थन वन्द नाय सत्कोष संजात कमदश्च
 ॥ सुस्था यता सालय कामराज तन्नोमि ॥ ४ ॥
 ॥ शुद्धार भासिततार देवै सुभावरो सत्प
 ठ तोत्रनिय ॥ प्रारणार्थं मेवं कृत कर्मनियं
 तन्नोमि ॥ ५ ॥ सहाय नान्यदि सहभ

जिवं देवालयो हासितो विवेदि ॥ नमस्त
 के नित्य तवाश्रयरा तन्नोमि ॥ ६॥ महिन्द
 नां तासम रत्नदाता होरात्रगाथा गुराभा
 व निघा ॥ यताश्विने धर्मदेसारथिथ
 तन्नोमि ॥ ७ ॥ उज्जालितो घन यप
 न्न रोगस्ते नोपचारोत्त मपुष्प निय ॥ सु
 वाष्प मेसो कल कोटि दोषित तन्नोमि
 ले चैत्र मनो हरेय तन्नोमि ॥ ८ ॥
 देलय प्राप्नुदिता सुवाससायो जिका
 सज्ज के धुपनिधि ॥ सतापने स्वकुल को
 ति दोषि तन्नोमि ॥ ९ ॥ संप्राप्य पुजो
 लिता वदार्पं त्रिकाय शुद्धे न सुखौक्य
 य ॥ सचक्रवर्ति नसु राह्य भुंजी तन्नोमि
 ॥ १० ॥ वैमाद्यै च धूमरिा पुमादो प्रमे
 यसो शोभित दिव्ययोग ॥ संयुक्त गंधर्वा
 लक प्रहिय तन्नोमि ॥ ११ ॥ तपस्पक स
 त्व सुरवोदयश्च नैव्यद्य पंचामृत दिप्रनि
 य ॥ सहस्र कन्या नृपति प्रदाता तन्नोमि
 ॥ १२ ॥ वाग्गार किंतव वरी नियं को
 भावनियं खलु रूप दर्श ॥ स्वचित्त संबो

धन कामहेतो तस्मा द्विग भीर्यवलोकनाय
 ॥ १३ ॥ मासाहमियवन वार नित्यं येपु
 नयानि स्तव पुष्प केन ॥ सदार्थ मोक्षां श्र
 य सौक्येन तेनैव लोकोस्तु शुभं भवतु ॥
 १४ ॥ वैद्वादशो मासि फलप्रसंसा मूपोष
 धा दुधृत रोनु भावा ॥ लीला सुवजो ह
 सिदं प्रवश्ये श्रीवोधिसत्वस्य गुरोरा तम
 स्व ॥ १५ ॥ इति श्रीमदार्थवलोकिते स्वस्त्य
 द्वादश मासि फला नुसंसास्तां समाप्त

(२८) वन्दे त्वां मानन्द

ॐ नमः श्रीविद्या धरिदेवि ॥ ॥ वन्दे त्वां मा
 नन्द + नविपिन्यललिते ॥ १ ॥ नन्दवन श
 त शोभा सुवन्दे मातृनिवहृ क्रीडाससुष
 दे ॥ वजयोगिनि विद्याधरि विदिते रूप
 दिप रिसर्गदिते ॥ २ ॥ विष्णु पदितत
 पर्वतकरिते भद्रादिजल संगम बलिते सुर
 पाद पतत सोभा मिलिते जोगिनि कौतिग
 निराकुरिते ॥ ३ ॥ कर विरासिद्ध पृथिव
 न मध्य रत्न मकुत मन्दिर मरिा नन्दे
 तस्मीन मीं मिद विराज नीश लीला नित्य

काल साधक हररो ॥ ३॥ चिन्ता मरिणि
 मिर्मिलवय गिरिवर मध्पटा कृक निरये ॥
 वार दिवाकर समरुचिललिते सहजानन्द
 रूप गुरावलिते ॥ ४॥ रचितचारुचि कु
 लचयराग्न खरिडत दनुज दयारस म
 ग्नास्मर वदेनरो मां जित देहे साधक प्र
 कृति ~~स्नेह~~ कृत स्नेहे ॥ ५॥ सव्यकजवाभ
 कर करवे गुरा रोचन पापिजन विमुष.
 केशल कुसुम विनिर्मित माले मुराडमा
 लर मरिणि यविशारे ॥ ६॥ रक्तपानमा
 दितव लनयेने उर्ध्व पाद तज्जित कृत भु
 वने ॥ सिंधुर कवि राजित भारे भृकुति
 कुतिर वि मरिडत काले ॥ ७॥ शुभेनि
 सुं मदल नयन दन्द मही खासुर वखन्द
 न बदे ॥ कुराडल युगले विलासितगराड
 रजित भार सुधाकर खराडे ॥ ८॥ कस
 राग कोमल सुविमल हृदये देहि समि
 हित वलमिह सदये तव मनुसाधित सि
 धुलं वशान यतिज गंधिस सुरं ॥ ९॥
 यदी भारे वनिता ततनुते किंकल ~~पुद्~~

मिव पुरुरव खलुकुसते प्रवल प्रताप म
 हि पति भजिते वितर तुमङ्गल समुजोल
 मिर्मिति ॥ १०॥ इति श्री समस्त शास्त्र
 संगिता सकल विद्यापारंगत महाराजाधि
 राज विदग्ध बुडामरिणि श्री २ राज राजेन्द्र क
 विन्दु जय प्रताप मल्लदेव विरचितं जगत मोहि
 नि नामस्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(२९) कल्यादिके भव

ॐ नमो लोका नाथाय ॥ ॥ कल्यादीके
 भव शिखो हिमहा गभावा सुंघेस्वरे स
 कररागमय विश्व मुक्ति कार्या दिके पन
 मति तिसमस्तसत्वाधी लोकरागथतव पा
 द जुगं नमेहं ॥ १॥ आकृ तस्मै नमज
 स्प ॥ हिचवर्त मानं चाय्यसि सुमिस्त
 कारे प्रति वासरे च हंसरूपरेक नुसु
 मुजोरेरा ॥ श्रीलोकनार्थ तव पाद जुगं
 नमेहं ॥ २॥ ब्रह्मत्वं भव हिस्त विपुक्ल
 प्रसिद्धो ॥ विष्णुचक्रे भव भूतैर धर्मतेतु
 सर्वज्ञक शितम ते प्रभव वैयन * श्रीलोक
 नाथ तव पाद जुगं नमेहं ॥ ३॥ वीधाद्वय

भवसिव जक सुर्प रूप योग्य स्वरादि सु
भ यागक मार्ग कषु जटा धरो भवभयो
तविनाशकारि श्रीलोकनाथ तवपा
दगुर्ग नमो हं ॥ ४ ॥ काहराप भाव ह
प्या सहज सरो दिव सौकल्यो गुरा सागर
च ॥ चिन्तामरिण रत्न मरिण रेक गुरु कृ
पस . श्रीलोक नाथ तव पाद गुर्ग नमो हं
॥ ५ ॥ बंधूकावरी वरु रूप विशार नेत्रं
प्रव प्रसुति किं गु हस्ता ॥ तं पद्म पाणि
विमलो तम तित्र रूपं ॥ श्रीलोकनाथ त
व पाद गुर्ग नमो हं ॥ ६ ॥ तव वरु गु
रा वैष्णव सम ध्वस्ति वरुं तदपि मुप द
भावे भयमेवम पात्रं यदि पिपद म
शर्व मेत क्षेम स्वस्तु तिरिति कुसुम स
भक्ति मां ताव नमस्या ॥ ७ ॥ इति आर्या
वलोकिते स्वर स्तुतव स्तोत्र समाप्तम्

(३०) नाना कृति सुकृति
ओं नमो लोक नाथाय ॥ १ ॥ नाना कृ
ति सुकृतिन जगता सर्वं २ लोके स
वह रात्म धरवर राप संसार सागर

तरं कमलायतांक्ष ॥ १ ॥ श्रीलोक ना
थं विकुचं सुभवं भजामि ॥ १ ॥ रक्षा
करं सकलान्मिति वतां जनानां ॥ अवननं
कनक कुराडल चारु करी २ गेवेयकादिम
रीना भरने सोभं ॥ श्रीलोक ॥ २ ॥ भक्
त्पानतस्य मनु यस्य विपतिं रत्तं स्वर्गा
पवम फलदं वरदं यथा रु देवा ॥ धीदेव
ममरं जिनसंघवन्दे ॥ श्रीलोक ॥ ३ ॥
सतपू रगा तिलकं सुरानां ॥ रत्न करं
कनक कत सोमहस्तं २ भाजिष्या मा
भरणा धारणा दिप्तं वर्त ॥ श्रीलोक ॥
४ ॥ दुर्गन्ध दुर्गति हरदुरिता प्रहारं दु
र्गि क्ष नाशन कर करुणा करं २ विद्या
नव गुरा निधि शुविशुद्ध देह ॥ श्रीलो
के ॥ ५ ॥ इत्यवरं सकल भूत गराणि धि
नाथं त्रैलोक्ये नाथ मसने जग पूष्टिकारं २
कान कोचित रथवले सु स्वसं प्रविष्टं ॥
श्रीलोके ॥ ६ ॥ यथा दि किन्नर नरै मु
निभि गप जागै विद्या धरे सुरगरो वनु
जे पिशाचै २ सर्वे पकाराणा नाभि

तं ग्रहसौ ॥ श्रीलोके ॥ ७ ॥ गंधा धरं
 वनपुते भृगुनाभिभिश्च कर्पूरकुंकुम
 वरैश्च रिचद्रुमाद्यै २ तस्यानुलेपन कृते
 न सुप्तो भितांगी ॥ श्रीलोके ॥ ८ ॥
 रागा धिनासन करे भवतां शुनाभं २ शोका
 दिदुःखहरां सुख विंत्त नियं २ पीयूषतुल्य
 वचनं मृदु कालगात्र ॥ श्रीलोके ॥ ९ ॥ आ
 जानु लं विंत्त करं भृगराजमध्य सौंदर्य कुराड
 शिषल फति दामदत्तं २ अल्पत सुन्दरानु
 शुभरक्षणंग ॥ श्रीलोके ॥ १० ॥ येलोके
 नाथस्य सदातनंग तोत्र पठिष्यन्ति जना
 भावाः श्रीलोक नाथ प्रिय दिप्ती तयै २
 स्तपुधस्तुते न्य स्वरितं ददातु ॥ श्रीलोके
 ॥ ११ ॥ इती श्री गारापति शष्पक विरनि
 तं श्रीलोक नाथस्तव स्तोत्रं समाप्तम् ॥ ॥

(३१) जटाधर सौम्य विसार
 ॐ नमो लोक नाथाय ॥ ॥ जटाधर सौम्य
 विसारलोचनः सदा प्रसन्नाः मुखचन्द्रम
 राडलं सुरासुरै वन्दित पादपैक जं नमामि
 नार्थ मनि पद्म संभवं ॥ १ ॥ सरोज पत्रा

यत दिव्य लोचनं कुदृष्टि संसोधनः सुदृढ लो
 चनं नमामि नार्थं मनि पद्म संभवं ॥ २ ॥
 दारैश्च शराद्यै हि माधिकेजोलं निघृष्टि ग
 राज मललाल कुराड गटिभ तिमाला कुल
 कोटि संकुलं नमामि नार्थं ॥ ३ ॥ बुद्धधर्म
~~ध्वनि~~ धर्म धातुजं सहश्रवाहु द्विचतु
 षट् भुजं षडधातु नातुल्य समनन पुष्पं
 नमामि नार्थं ॥ ४ ॥ उपराव प्रज्ञो दधिम
 स्थनो रभवं त्रिधातु संभवं ॥ नमामि नार्थं
 ॥ ५ ॥ पद्मोपरिगतं नार्थं पद्म इस्ता
 गताधरं आर्यजीवलो कितेश्वरं वंदे
 सर्वसत्त्व हितोदयं ॥ ७ ॥ इति श्री आ
 र्यजीवलो कितेश्वरस्य वासुकि नाग राजाह
 वस्तोत्रं समाप्तं ॥ ॥ ॥ ॥

(३२) देवमनुष्यां सुरनरतव
 ॐ नमो भगवते श्री आर्यजीवलो कितेश्वराय वी
 धि सत्त्वाय महासत्त्वाय महा करुणाकायेः
 नमो लोक नाथाय ॥ ॥ देवमनुष्यां सुरन
 रतव चरणां प्रतिहृतजन्म जरारुजमरणां ॥
 लोके सत्त्व माभसरसाः रक्षकपालो कुरुका

रु राप ॥१॥ संसारो दधि मध्य निमज्जं ॥ म
 न्न चिस्थे क्लेशमहोमिस माहित भज्जं ॥ मान
 व धिरय माविरुवन्तं पारिा महाकृप नो
 म विवन्तं ॥ २ ॥ तृषणातिभिरो पपुत नेत्रं
 मररा महाभय विज्वलगात्र पायर भगवन्
 नवलोकेभ्या यावद विवि यास्मिन् विषमा
 ॥ ३ ॥ कृतं मन्य स्त्रि ग्रहनमयस्पः हतमं
 शना पारिा सहश्रं ॥ नाथमया कु कृप पा
 प मस्प र्धनासय संपति कायक दुखं ॥ ४ ॥
 क्षजीवित सत्काशरा नित्यं लोकानित्यं भू न
 स्ति भ सत्यं ॥ तंलोके श्वर समय समस्तं वा
 चिक नरकं चिरमाज्यस्त ॥ ५ ॥ सत्वाना
 यक चित्तित माहितं स्वय मडु मोदित मपि
 परविस्तं ॥ तदिदानीम ममानस पापं स्फुट
 यी नाथक रौम विरापं ॥ ६ ॥ देव मनुष्या
 सुर जातिना तिर्यक नरकं प्रेतगतिना ॥ स
 त्वाय निव सन्ति सदातारक्ष सितामिति त
 व मविवाता ॥ ७ ॥ तेन मयो परी शृजका
 र्हे रापः वीक्ष सरिरा गत कारुराप ॥ इति भूमा
 भगवन् न भनस्ति भवामि यावन्नरकं नैव

विश्रामि ॥ ८ ॥ किंवा प्रेषिक रोहि परार्थ
 मुंचसि भगवन् मामकृतार्थ ॥ अथवा प्रे
 षिक पातव पु ६ राप जनयसिदृस्ता कथमपि
 पूराप ॥ ९ ॥ सुमरराप नापि भवसि परिगुहं
 क्षेपय सिक्क रु कं कि मतिन देहा ॥ तस्मा हत
 भगवन् परहित दक्ष क्षेपय माकुरु मामि
 हरक्ष ॥ १० ॥ दन्तितुरंग मपुत्र कराद्य मर्क
 थक वेस्म चित्रं ॥ मास्प शिरोषिष पथ्यत भ
 वता चित्तोदनु मदन्तं ॥ ११ ॥ अंजन गुतिक्का दु
 क सिद्धिः सिद्धोषदि मनि मन्त्र विसुद्धि ॥
 सिद्धिः सिद्धिः यस्प स्तीर पुरवस तुष्पं तुय स
 त्वलोके शः ॥ १२ ॥ येकर चररा विरोचन हिना
 विविधि व्याधि महाभय हिना ॥ तेतपि तु
 हो पूर सरिरा विरसैतनु जोगुरा गंभिरा ॥
 १३ ॥ गरुडवाधि ग्रह दाकिन्न्य शान्ति या
 न्ति सदा योगिन्य सरति नितस्प पुरय मडु
 तपित्वं यस्पस्त्वं जिन भूत ॥ १४ ॥ इति
 लोके श्वर किं प्रियमानं मुंचसि भगवन्
 मामकृतार्थं ॥ लोमिह मनुदित मुदित
 पारिा नासय नराश शमाकुलवारिा ॥

१५ ॥ अद्विषयन्दीय चंचल मनसाः कृतवहु
 पापं व्याकूलवपुषा ॥ नित्यजन्म मया भिन
 सकलं जथर मिनिहं भ्रमता विक्ल ॥ १६ ॥
 तत्कुरु सं पति समलोकेश प्रसास्तो विविधां
 जलिलं मेघा ॥ येनातुत्वा पायिक दुःखं सुग
 ति भवतो यासि सभक्ष ॥ १७ ॥ मिह द्वेषवि
 नाशन हेतुलं संसार ~~संसार~~ महोदधिसेतुः
 पतिततस्तो थापनवाहू लंगुरु दुरित निसा
 गर राहु ॥ १८ ॥ देषित सुगतानुतरं तस्मात्वं
 पारित बहु दुःखित सत्प ॥ निजित दुर्जेय म
 मधमाला त्वंसंतिरि भवानिवपाल ॥ १९ ॥
 सकलगान निकुन्तनदोहा लंपरि मखिलं
 जगतसु देहा ॥ भगवन् नु पमप करुणाग सिं
 धु त्वं जन विविधो कारुणावंधु ॥ २० ॥
 लिलाविह त रित करि विभंगे त्वं परीह
 त विषयं व्या संघा ॥ दिव्या ध्यान समाहि
 तं चित्तं त्वं जाचक साधारणा चित्तं ॥ २१ ॥
 परमुपकुं मुनिपि करुणावा मयप्ररितोषं
 नरो वि भवा ॥ कथसिह मोहो महोरदे
 शे विषय समिहा कुशलं भवन्तो ॥ २२ ॥

सकलजनार्थं प्रतियास्कुरागः शान्ति भव
 नो नियस्तर करणा ॥ यमनरसीस अद्विष
 वन्तं भगवन्त पुरतो भाविरु वन्तं ॥ २३ ॥
 नाथ कृपाव्योम विसारा सत्पं पुजयां पुजल
 धारा ॥ स्फुलजल निम्नो नत बहु देशे शरणी
 निरंतर मनिशमसेव ॥ २४ ॥ इति भगवतो
 सुमरणां यत्पुन्य ममेते नैदं जगत क्षुरा ॥ ल
 भता श्री चोतल कांचल यासं जनयितु सुन्द
 र विविधि विरासं ॥ २५ ॥ श्रीमत श्रीश्री आ
 र्यो वलो कितेश्वर भट्टारकस्य चरपाति
 पा विर चित्त स्तोत्रं समाप्ता ॥ ॥
 ॐ नमः श्रीगुरुभ्ये नमः ॥ ॥ नमो लोदनीधाय ॥

(३३) स्तुत्वा प्रसाम्य
 स्तुत्वा प्रसाम्य अर्थकर सर्वसत्त्वा १ संपुरा
 नस्य वदना वृज पत्र नेत्रं १ सर्वज्ञ शान मकुतो धृत
 मुक्ती मार्ग ॥ १ पत्र पारिावल भूषितज्ञा
 रासि ॥ १ ॥ ५ तुंग नास ओल पिनकपो
 ल कूंः रूक धरं हिम तु खार विवा सूदतं ॥
 प्रह्लेश्वर शुतिधरं मधुरं च वाक्यं ॥ १ पत्र
 प्र पारिा वल भूषित शान सति ॥ २ ॥
 भृदु वरि खरं नमो भ

मालाधरं कनकरत्न विभूषितों गा। नेत्रत्र
यं जगत् विभूषितबालचन्द्र ॥ कृष्णा ॥ जिनावर
धराय शुवरीवरां ॥ तं पद्मपाणि मृदुगात्र
धरं नमामि ॥ ३ ॥ त्रिलोकनाथ नवल्लो
कित नामधर्यं ॥ जज्ञोपवित् सदपञ्चसू
र्य राजां ॥ चिंतामणि प्रवल कुराडल पृष्ठकरी
॥ तं पद्मपाणि हुति सर्वकृतं नमामि ॥ ४ ॥
त्रिज्ञान राशि वल भूषित सर्वसत्त्वा ॥ संसा
रार्थ कतिमला नव भग्न सत्त्वा ॥ अलो
किते पद्मनुत्तरवोधि मार्गे ॥ तं पद्मपाणि
वल मार्गदं नमामि ॥ ५ ॥ गत्वा च जे
न नरके ~~ख~~ अविचिन्तनं ॥ सितीकृतं
हृदि विस्मरं रुहं सपद्मं ॥ जिनारकिं सक
ल दुःख विनाश यंति ॥ तं पद्मपाणि नर
का ग्नी समं नमामि ॥ ६ ॥ संत्रसयंति
जम पालक भग्न भूमि ई धर्म राज निव
आगत कामरूप ॥ जे कर्म भूमि निव
ध्वं तते ~~ध~~ भूमि ते ॥ तं पद्मपाणि हतसा
सततं नमामि ॥ ७ ॥ गत्वा च जेन अति
रूप मनो हराय ॥ त्रिलोके नाथ शुभ्रयं

1934

CALENDAR

1934

January				February				March			
S	...	7	14 21 28	...	...	4	11 18 25	...	...	4	11 18 25
M	1	8	15 22 29	...	...	5	12 19 26	...	...	5	12 19 26
T	2	9	16 23 30	...	...	6	13 20 27	...	...	6	13 20 27
W	3	10	17 24 31	...	...	7	14 21 28	...	...	7	14 21 28
T	4	11	18 25	...	1	8	15 22	...	1	8	15 22 29
F	5	12	19 26	...	2	9	16 23	...	2	9	16 23 30
S	6	13	20 27	...	3	10	17 24	...	3	10	17 24 31
April				May				June			
S	1	8	15 22 29	...	...	6	13 20 27	...	...	3	10 17 24
M	2	9	16 23 30	...	...	7	14 21 28	...	...	4	11 18 25
T	3	10	17 24	...	1	8	15 22 29	...	...	5	12 19 26
W	4	11	18 25	...	2	9	16 23 30	...	...	6	13 20 27
T	5	12	19 26	...	3	10	17 24 31	...	...	7	14 21 28
F	6	13	20 27	...	4	11	18 25	...	1	8	14 22 29
S	7	14	21 28	...	5	12	19 26	...	2	9	16 23 30
July				August				September			
S	1	8	15 22 29	...	...	5	12 19 26	...	...	2	9 16 23 30
M	2	9	16 23 30	...	...	6	13 20 27	...	...	3	10 17 24
T	3	10	17 24 31	...	...	7	14 21 28	...	...	4	11 18 25
W	4	11	18 25	...	1	8	15 22 29	...	...	5	12 19 26
T	5	12	19 26	...	2	9	16 23 30	...	...	6	13 20 27
F	6	13	20 27	...	3	10	17 24 31	...	...	7	14 21 28
S	7	14	21 28	...	4	11	18 25	...	1	8	15 22 29
October				November				December			
S	...	7	14 21 28	...	...	4	11 18 25	...	...	2	9 16 23 30
M	1	8	15 22 29	...	...	5	12 19 26	...	...	3	10 17 24 31
T	2	9	16 23 30	...	...	6	13 20 27	...	...	4	11 18 25
W	3	10	17 24 31	...	...	7	14 21 28	...	...	5	12 19 26
T	4	11	18 25	...	1	8	15 22 29	...	...	6	13 20 27
F	5	12	19 26	...	2	9	16 23 30	...	...	7	14 21 28
S	6	13	20 27	...	3	10	17 24	...	1	8	15 22 29

(2)

SWAN DIARY

No. 2.



0
42

Name _____

Class _____

Subject _____

मानदास सुगत दासया संकलनं मै ७
बाशा सफू-कुथियात उपहार !

- (८४) कमल परिण ल भव जगत हिला र्थ ॥ ५॥ १२५
(८५) आदिल मराडल कमलासन ॥ ७॥ १२५
(८६) चतर ध्यान के गति पारग देव नित ॥ ६॥ १२६
(८७) भगवत वादितय दनिल जलोक ॥ ५॥ १२६
(८८) कापुतर नगर स आराधिय गमने ॥ ५॥ १२७
(८९) लोके स्वर विमल सुन्य कृपा कनिका ॥ १॥ १२८
(९०) अमित सरथ पद्म पत्रा यता क्षुदीता ॥ १२१
(९१) प्रभवति सत्वय काररा गति ददा मे ॥ १२६
(९२) नेपाल मे राडल कमल से युता २ अरु पना ॥ १२७
(९३) अमल गहन नाथ ॥ ११ ॥ १३१
(९४) जय सिद्धि सुरा सुरलोक गुह ॥ ८॥ १३८
(९५) नमामि जिन नाथाय ॥ ८॥ १३९
(९६) सर्व सुख सुख वन्दे विभुत ॥ ९॥ १४०

(९७)

(९८)

(९९)

५१ + हतकिं लिखतं नमामि

कर सर्वसत्त्वा ॥ दुर्वा नवे ताच्छोस्म रा ४
मिविमुक्ति दुःखं ॥ तं पञ्च पाणि ~~दुःख~~ नस
~~दुःखं~~ ॥ ८ ॥ तं प्रेतलोकगतजे
कुरुराग वसेनं ॥ सूचिमुखं उदय पर्वत जिर्ण
मग्नं ॥ शुद्धा ४ तृष्णा दुःख विन्दित प्रेतसत्त्वा
तं पञ्च पाणि दुःख नास करं नमामि ॥ ९ ॥
अनेन तृक्ष दुग्धा पिदित प्रेतसत्त्वा ॥ सं
प्रियेते कुरुराग वसेन नदिभि ॥ पुंस्ति
सरिर हेत भुक्षतुखातुरानां ॥ तं पञ्च पा
नि हत भुक्षतु नमामि ॥ १० ॥ गत्वा त
मै भुवन वार्जित वन्द्य सुख्य ॥ चिन्ता म
रिण ज्वलित रत्न प्रभावभासे ॥ तेजस
राक्षस गमे चरौ नमस्ते ॥ तं पञ्च पा
नि तम भग्न कृतं नमामि ॥ ११ ॥ गत्वा
च जेन वलि भग्न मनोरथस्य ॥ जदियते फलम
नुत्तर पिदपात्रं ॥ धर्म कथन परिणं पि
दं दाने वदनं ॥ तं पञ्च पाणि वल धर्मद
दं नमामि ॥ १२ ॥ गत्वा च जेन दिवि क
द्वल देव पुत्रो ॥ दानस्य द्दिस्य शुद्धपि
दित दुःखं च ॥ त्वं जात्रयंति परिपुरा

समृद्धिरत्नं ॥ तं पद्म पानि धनवृद्धि करं
 नमामि ॥ १३ ॥ तौ कामरूपि सुपद
 इति राक्षसिभिः ॥ घातस्य विन्तपरिव
 जित धर्म चित्तं ॥ तं पद्म पानि बहु रूप
 धरं नमामि ॥ १४ ॥ मलमुत्र भुम्भिकु
 मि कोटि समत् भवति ॥ गत्वा च जेन
 अतिरूप मनोस्मरेन्नि ॥ निश्चारितं
 धुनु धुनाय दंति धर्म ॥ तं पद्म पानि
 बहु गात्र धरं नमामि ॥ १५ ॥ दुमि
 क्षे मार्गपिसाच भवे षु वृद्धि ॥ सुतृ
 ष्णा दुःख भयपिदित दुरितं च ॥
 धर्म्यादि वृद्धि बहु विहि सन्निधिरत्न
 तं पद्म पानि वल रूपि नमामि ॥ १६ ॥
 वाराह अशोकृत रूप महा जवेनं ॥ १७
 तुंग जेनव निज भय राक्षसिभिः ॥ आ
 तून तं पवन वेण महा समुद्रं ॥ तं पद्म
 पानि जिन मृत्पू मय नमामि ॥ १८ ॥
 गे धातुं तव स्मरा विमि मुक्ति दुःखं ॥
 नाना संसा धि परिपुरा विविन्न मर्गं ॥
 त्वल्लोम कुप निवस्य अनेक सत्वा ॥ तं

पद्म पानि क्षय नास करं नमामि ॥ १९ ॥
 नाना भयं तव स्मरामि विमुक्ति दुःखं ॥ राज
 स्पदं भय राक्षस चौर भूतं ॥ न आपि माग
 हतकं दर चाग्री दग्धं ॥ तं पद्म पानि अत्रय
 दं नमामि ॥ २० ॥ व्याघ्र भयं खड्गपि
 साच दाकिनिनां ॥ आपति व्याघ्र भय कुस्तवि
 जोग दुःखं ॥ वैराग दुःख बहु पाप विनास यनि
 ॥ तं पद्म पानि भय नास करं नमामि ॥ २१ ॥
 शुक्लाक्षमि निय धर्म अमोघ पातं ॥ यतु क
 शे मिजित निद्रिय प्रह चर्य ॥ सर्व पुत्र मजिन
 नास्य यस्य ख पापं ॥ तं पद्म पानि वलदाय
 सदां नमामि ॥ २२ ॥ नित्यं वस्त्र नगुरा सा
 मृद्धि पोतरेखु ॥ नाना दुर्मं तिलकं चंपक
 पारिजातौ ॥ रं म्यातदाग विजसा पदसो वि
 तानं ॥ तं पद्म पानि निलय ख सदां नमामि
 ॥ २३ ॥ देवै कुवेरै वरराज म वंदितस्य ॥
 गंधर्व जक्ष मुनि दानव वंदितस्य ॥ जक्ष ख
 नागेषु मनुष्य नमस करोमि भूते पिसाचै
 गस्ते नमस्करोमि ॥ २४ ॥ यत्प्रथंति क
 रमास्तव्यो नित्यकारं ॥ सौति च पुंस्तं च

धनवृद्धिकाया ॥ आयु विभूति बहु पुत्रवि
सार भागि ॥ परवान्निष्कार मपि पश्य तै
लोक नाथं ॥ २४ ॥ संकृति यं तितब्धो
विद्यं महानु भावं ॥ रात्रौ दिवा च तव नाम
मनुस्मरंति ॥ दुस्वप्न विद्यु विनाशयंति ॥ तु
ष्यं पुदेव सततं तत्रो रक्षयंति ॥ २५ ॥ इति
श्री १ आर्यावली क्विती श्वर ल्प कस्तरागस्त
वतोत्र समाप्त ॥ ॥ ॥ ॥

(३४) आराधितोपि भूजगा

नमो लोक नाथाय ॥ ॥ आरा धितोपि
भूजगा सुरदेव संघेः गंघर्व यक्ष मूनिभिः
परि वंदिताय ॥ द्वात्रिंश रक्षणा विभूषित
भूषितायः नित्यं नमामि शिरसा कहरागम
याय ॥ १ ॥ वाला क्वि कोतिसम तेज करे व
रायः श्वरोचित सुगत शेषर धारिताय ॥ शु
भा शु मौलि तिरकाय जता धरायः नित्यं नमा
मि ॥ २ ॥ शुं भोज पारिा कमला सन्न
सस्थितायः यज्ञोपवित फनिराज समरिडता
य ॥ रत्नादिहार कनको ज्वलभूषितायः
नित्यं नमामि ॥ ३ ॥ उत्पाद भंग भव

सागर तारकायः दुर्गाति दुर्गति भुबे परीमोच
नाय ॥ रागादिदोष परिमोचन निर्मरायः नि
त्यं नमामि ॥ ४ ॥ मै त्पादि भिश्चतुषु
ह विहारनायः धरामृतै सकल सत्व सु पो
ष नाय मोहां धकर कृत दुःख विहारनाय
नित्यं नमामि ॥ ५ ॥ दैत्य न्द्र वंश बलिता
ररा मोक्षदाय सत्वोपकार त्वरितं कृत
निश्चराय ॥ सर्वज्ञज्ञान परिष्कुरित दे
हा नायः नित्यं नमामि ॥ ६ ॥ अष्टाव
शौ नरक मार्ग बिश्व धनाय अज्ञानगाध
तिमिलायरी ध्वंस नाय ॥ ज्ञानैक दृष्टि
व्यव लोकिता मोक्षदायः नित्यं नमामि ॥
७ ॥ त्वं लोक नाथ भूवनेश्वर सुप्रदाय दा
री दुःख भयं पंजल दारणाय ॥ त्वं पादपंकज
युगे परिबन्ध नायः नित्यं नमामि ॥ ८ ॥ मा
र्त राड मराडल हचि तथतां स्वभाव त्वां नी
मिदं सफर देबिम ले प्रभान ॥ चिता मरिा
वस दृष्टा सत्यवतिवगोहः नित्यं नमामि ॥ ९
॥ मद् भक्ति तो दशान खा जालि चोत्तमा
गः अष्टांग भिः पुरामर्त स्तव पाद युग्मे

दुःखारोष घटितमं समुत्तारयत्वं नित्यं नमो
मि ॥ १० ॥ सप्ताह भुत गत माधव शुक्ल प
क्षः तारा पुनर्वसु सहै भृगु सुनुवारे ॥ श्री
कौच दारणा तिथौ चतुर्तिकरो मिः मेदे
दि बौद्धित फलं भुवनेक नार्थं ॥ ११ ॥ य
पूठन्ति महा पुराण पवित्रं पापनाशन ॥ स
र्वे कामार्थ मोक्षं च गमिष्यन्ति सुखावति
गमनं ॥ १२ ॥ इति श्री मदार्क बिलो कितेश्व
र भट्टारक रूप तुलु बधारा स्तोत्र समाप्त ॥ ० ॥

(३५) अलिका द्विरीरौ दृशि जौशशभृ
नमो लोक नाथाय ॥ अलिका द्विरीरौ दृशि
जौशशभृः दिन कृत्कम मलासन बाहु भवबो
॥ हंमुरक्क भवो मुख जप बनोः रद जार म
रिग जथरा दुररोग ॥ १ ॥ नल नामि भवो धि
भवा पृथिवि युग जानु भवो कमला धनपौ
॥ तनु रत्न भवासुर रात्र प्रमुखा सकल स्त्री
दशानख जौसरिता ॥ २ ॥ पाति बादव काव
मिता भ धरैः वर पद्म कर प्रगातोऽस्मी
सदा ॥ ३ ॥ इति श्री विष्णु कृतं हरि हरि
हरि वाहन लोकेश्वर स्तोत्र समाप्त ॥ ० ॥

नमो लोक नाथाय ॥ ॥ त्वंपद्मपानि अभ
यं वर मोक्षदाताः त्रैलोक्ये नाथ कमलासन संस्थि
ताय ॥ संसार त्रिदश भूषे परि श्वेदेदाय त्वंपद्मपा
णि वरदाता चरणां नमामि ॥ १ ॥ भं नाकररा
गलसं गतसाः र्थ बाह ज्योतिश्वर सकल सत्व उ
द्धार नाय ॥ श्री लोक नाथ भव भयार्तकी नाशका
रिः त्वंपद्म ॥ २ ॥ लोकेश्वरं सकल पाप विनाश
विनाश मोक्ष ॥ दिव्यश्वरं सकल सत्व उद्धार ना
य ॥ लोकेश्वरं नरक उद्धार मोक्षदाय त्वंपद्म ॥ ३
॥ विश्वपति जगत संसार रक्षनाय संपुराणं
सकल सत्व उद्धार नाय ॥ सर्वज्ञ ज्ञानगुरा निधि
गुरा सागराय तौ पद्म ॥ ४ ॥ सर्व सत्व नर
क प्रेत उद्धार नाय दारिद्र्य भेद दुःख भयं प
जरदार नाय त्रैलोक्ये नाथ शरणा चरणां न
मामिः त्वंपद्म ॥ ५ ॥ सर्व सत्व सकल प्रा
णि उद्धार नाय जगतं संकटरागा सागर म
यरूपं ॥ संसार दुःख भय नाशन मोक्ष दाता
त्वंपद्म ॥ ६ ॥ इति श्री मदार्क बिलो कितेश्व
र स्तोत्र समाप्त ॥ ० - १ - १ - ० - १ ॥

(३१) अत्यंत बौद्धमरिण धर्म

नमो लोकनाथाय ॥ ॥ अत्यंत बौद्धमरिण
धर्मधारीने शशांक बौद्धमनिकर्मधारिणो
त्पन्नपात्राणि करं शुभं धारणीः नमामि
लोके श्वल सर्वतारणीः ॥ १ ॥ नीशवास
जोक्कं गं मन गम्भ बसितः महाज्ञान पैर्थे
महादेव सन्त्र ॥ परपदज्ञान पद बोधवे
न निशान्तधरन विविन्ध पुजितं ॥ २ ॥
अत्ररे पुष्पं मुष चास हासन मिलारो पृ
ष्ठ विशाल सुलोचन ॥ पस्फल पुरा
जल कारुणार्चः कृतान्त सकृ भो भय मोक्ष
कारं ॥ ३ ॥ धुमाधुकार मनकं चटारकं
विन्दुर विस्ति न्त जगतासकं ॥ सहस्रदि
व्या युध धर्म चकृतः सहस्रभुजत्रिय अक्ष
माजितं ॥ ४ ॥ सत्पतत्वा पाब्द शिरसानमेतां
अमोघ पाशं च दर्वदु जालितं ॥ जदामया
तेन सुगतै पदामै श्रीलोकनाथ च सरां
शामै ॥ ५ ॥ जक्षादि भुता भय भंगका
लिनाः देवा सुर नर नागा हिकिं नरा ॥
नाना रत्नादि रत्न मरिण भुषितः शुगंधि
धुप शिल पुष्प स्वभितं ॥ ६ ॥ सत्पु भिनज

र वन्द मादिसै जथापि नार्थं च बपुरी रादि
तं ॥ जदा बिरापं जग बौध शाशुतं नमामि स
शा बति जिन भुषितं ॥ ७ ॥ संसाल शारा पुर
धर्म भोजितं च चक्र भेद द च मनू मोक्ष
पातः विन्ता मनित्वं भग भुषनासनं त्रैलोक्य
नार्थं च विगुराग मिधानं ॥ ८ ॥ इति श्री आ
र्य बिलो कितेश्वर महारकस्य पुराडलिका
स्तोत्र सम्पत् ॥ • ॥ • ॥ • ॥

(३८) यमाराध्य माधा भूनामा
नमो श्री अमोघ पाशालोके श्वराय ॥
यमाराध्य माधा भूना मामहो पंः श्वतु द्वीप
साम्राज्य मापन्न भोगः ॥ वतु विशासाह श्रमै
व्या वृते सौः नमो अमोघ पाशाख्य लोके श्वर तं
॥ १ ॥ वरिण क्सर्बलोक प्रियः पू प्रियाख्यः
उपा स्पाहमी रत्न द्वीपा महंति ॥ समानि
य रत्नैः सुपुरी श्वकारः नमो अमोघ ॥
२ ॥ यदाराधने कागु नितो विरूपोः लभते
भूकं दिव्यरुपां चकन्पां ॥ हृदापात दुः खा
तरे दिव्यरुपं नमो अमोघ ॥ ३ ॥ यदी यं
मनुसं जपं हि महेशः सदुर्गा महाबोधि

मासध्वकुधः भविष्यभ्य संख्ये यदि ध्ये वृत्तो
सो नमेऽमोघ ॥ ४ ॥ यदीयासितामहमि
ना श्रितास्ते विपग्धादयो निवृत्तितामवायु ॥
महाबोधिदोबोधिसत्वोपियोसो नमेऽमोघ
पाशाब्जलोकेश्वरतं ॥ ५ ॥ इति श्रीमदमोघ
पाशाब्जलोकेश्वरस्तोत्रसमाप्त ॥ ॥ ॥

(३५) हाहा हूंकारनादेः किरिकिरि
नमः श्रीमहाकाराय ॥ ॥ हाहा हूंकारनादेः
किरिकिरितरबैः भुतबेतालवृन्दैः हूंकारसम
नाः नलपसितमुखैः रंतमालाकुलांगैः ख
त्वांगैः शक्रपाशैः नलकमलधरं कामरु
पीविरुपिः पिंगाक्षेर्पिगकेशैः शक्रगरान
रतैः क्षत्रपालबताह ॥ १ ॥ हूंकारना
रनादेः प्रतिजानितवृद्धैः वृद्धिगर्भाग्रवृद्धैः व
ृद्धैः मालाविरवारजैः प्रकृतिभयवपुः भुषितंगा
सुशोभाः विलारकृश्रबोधैः नृकसकल
वृत्तैः मालिनामुग्रपाशैः कुण्डकुडाविना
डैः नरदहनभुविः क्षत्रपपातयुष्मान् ॥ २ ॥
हाहाहा हूंकारनादेः रतिशयभयकृत्ः सर्व
दायपशुनां लोकानां विघ्नहन्ताः प्रीति

दिबसमभः प्राप्तमुवाधिराजः ॥ हूंकारना
लनादेः त्रिभुवनकुहरं पुरयपुराश्रुतीः मा
याक्षत्रपालः कपिरसूतजताः शासुकेशा
पहार ॥ ३ ॥ खंखंखंखंखंखंखंखंखं
भयहरं तच्चितचराडबेगैः कं कं कं कुण्डदृष्टि
कुरुकुरुकुरतिराः कुंविताशेषमालाः डं डं डं
डपाशैः इमसकसहितैः रक्षतक्षत्रपाल
॥ ४ ॥ कं कं कं कृत्तिपाशाः कृत्तिनिपु रिमय
केशितशेषमालाः कं कं कं कूपारमारिः क
लिककुरुषहरं कान्तिचन्द्रभक्ताय ॥
चं चं चं चन्द्रबेगः पुरयतरश्चमः काललोका
नुलोकेः सं सं सं जातमानो समयसुरवर
पातुयुष्मां चक्षत्रः ॥ ५ ॥ यं यं यं यतिरुपाः
यमइषनियतं यामनो यामतत्वाः बैबैबैबैबै
बेगैः वृत्तिदिक्कमदिबः प्राप्तलोकाप्रचारं ॥
भुंभुंभुंभीषणाबाः भृकुतिकृतशबाः भु
क्तीवासाधकानां क्षं क्षं क्षं क्षेमकालि सप
यतुदुरितं रक्षतक्षेत्रपार ॥ ६ ॥ रिं रिं रिं रिं
क्षान्तिमुक्तिः कलकलधरकृतः क्षान्तिबुद्ध
प्रदुस्त्राः काभ्या कान्तिकविश्वः कहकह

कथनः नील जिमूट बरौ ॥ ह्रीं श्रीं श्रीं
 न्रदेहः पच पच दहनः जात मन्ता समन्ताः वि
 द्वात्पा साध्य मानाः समय प्रतियतः साध
 काक्षत्र पारं ॥ ७ ॥ कंकंकं कान्त मुर्तिः त्रिभु
 वरा गमनैः कृदय न्सर्वदायः पंपं पं पाप हस्तेः प
 शुति कर धृतं ॥ पार योत्पार निधाः मन्तानां
 मन्त मुर्तिः समय सुख फलाः मन्तिनां मन्त्र
 तुल्यः सेत्राना पार कोसौः सकर जिनातनुः पा
 तु युष्माच्च चिनायु ॥ ८ ॥ मन्त्रानां मन्त
 को शौः नियतु पतु मतिः यपथे सेत्रि संधेः श्र
 वाय्य साधकावाः समय शुभबलः पुरापवां
 जायते सो ॥ आयु श्री कि तिलक्ष्मीः धृ
 तिबल मनुलं का ति पुष्टि प्रभावः सर्वा
 शातस्य नित्यः दिन नितिसमनुः नाश यत्कि
 द्यु जालं ॥ ९ ॥ इति श्री महाकालास्तबस्तो
 त्र समाप्त ॥ . ॥ . ॥ . ॥ . ॥

(४०) तथागता स्तथ ताद्यः

नम श्रीमहा प्रतिसरायै ॥ ॥ ~~महा~~ तथा
 गता ~~स्तथ~~ तद्यः तत्व मापुर्न हत्तरं ॥ धार
 ती धार ताग द्रष्टाः प्रतिसरां नमामि

॥ १ ॥ ररो शक्रो जयदैत्यान्ः धारनि धोज
 धृक् बहून् ॥ संग्रान जयदा भिमाः प्रतिस
 सरां नमामिता ॥ २ ॥ सत् प्रभावा द्रुमदन्तो
 ल भद्राक्ष मकराढकं ॥ सार्व भौम प्रदां देवि प्र
 तिसरां नमामिता ॥ ३ ॥ बध्यो पराधीय
 भक्तोः राज्याधिकार मा ~~पु~~ पूतवान्
 ॥ शस्त्रादिभि तिसंहत्रिः प्रतिसरा नमा
 मिता ॥ ४ ॥ रत्नान्यबा पुर्व विजोः यां
 स्मृत्वा दधि निर्गताः ॥ सर्वबाधा प्रसम
 नीः प्रतिसरा नमामिता ॥ ५ ॥ इति श्री पु
 तिसरां स्तोत्र समाप्त ॥ . ॥ . ॥ . ॥

(४१) महा साहस्रकैलोकैः

नमौ श्री महा साहस्र पुम दिव्ये ॥ . ॥
 महासाहस्र कैलोकैः साहस्र हितकारिणी
 ॥ सहसास त्व जननिः नैमि साहस्रमर्दि
 राति ॥ १ ॥ सौ पदु बायां वैशाखां महोस
 वीयतः सदा ॥ महोप सर्ग शमनी नैमि सा
 ॥ २ ॥ यक्ष राक्षस भुतानांः दमनी दुस्तचे
 तसां ॥ दूरितो पदुब हरां नैमि ॥ ३ ॥

यच्चारणी पठतो नः रक्ष शाक्यकेशरि ॥
विषतो विष दिग्धांस्तां नौमि ॥ ४ ॥ मनु
मिशीत भैषज्यं सर्व रोग निवारणं ॥ मृत
संजिवन लोके नौमि ॥ ५ ॥ इति श्री मा
हेश्वर उपाधिनि स्तोत्र समाप्त ॥ - ॥ - ॥

(४२) दक्ष भुजंगे नानं:

नमः श्री महा मायुरि नमः ॥ १ ॥ दक्ष भुजंगे
नानं दः स्वातितं मपालयत् ॥ यस्या मं
त्रानु भावेन मायुरि प्रणामा मितं ॥ २ ॥
ब्रह्मा दयो लोक पाला यच्चारणाः समा
पूबन् ॥ स्वानि स्वल्पधिकाराणि मा
युरि ॥ ३ ॥ स्वराणि बभ्रां शिखिनं
नाल भज्जपिनं कूधीः ॥ सुमो धे नापि
पाशेन मायुरि ॥ ४ ॥ यन्मन्त्र जपतोऽग्नि
बाः प्राजिबद्ध पादपाः ॥ मृतसं जिवनं
लोके मायुरि ॥ ५ ॥ यन्मन्त्रि संगि पब
नोः मद्यो पदुब शान्ति कृत ॥ बुध्दानां वोधिदा
नित्याः मायुरि ॥ ६ ॥ इति श्री महा मायु
री स्तोत्र समाप्त ॥ - ॥ - ॥ - ॥

(४३) यधीरशी मन्त्र जपनू:

नमः श्री महा शीत बर्त्ये नमः ॥ १ ॥ यधीरशी
मन्त्र जपनूः राहुलो भद्र मापू बान् ॥ बिदे ठितो
ग्रहे सर्वैः ॥ शीत बर्ति नमाम्यहं ॥ २ ॥ पाप
तापै इति त्वरीः शीलाद्ग्र पसर्गतीः शीतो
ष्ठा दुःख क्षमनीः शीत बर्ति ॥ ३ ॥ मन्त्र
ग्रथित सूत्राणां धरणा लक्ष योजनं
नं ॥ पठिकानां पाल यतिः शीत बर्ति ॥ ४ ॥
श्मशान स्तेन मूनिनाः यासमु चरितापुरा
॥ ग्रहो पदुब शान्त्यथः शीत बर्ति ॥ ५ ॥ ग्र
हा भि भुत बालानां गंठि पदु विधारिणां
॥ ग्रह भिति प्रशमनीः शीत बर्ति ॥ ६ ॥ इति
श्री महा शीत बर्ति स्तोत्र समाप्त ॥ - ॥ - ॥

(४४) बुद्धा धिष्ठानतो बुद्धा

नमः श्री महा मन्त्रानुसारिणे ॥ १ ॥ बुद्धा
धिष्ठानतो बुद्धाः भयदा भय नाशिनी
॥ भवां बुद्धि निमज्जानां नमे मन्त्रानुसा
रीणी ॥ २ ॥ यन्मन्त्रो चारणा देवः षत्री
तयः सूदारणाः ॥ नेशुस्त मांसी बरवेः नमे
मं ॥ ३ ॥ मन्त्रानु सारिणो लोकाः नान्ये
मन्त्रो दयो ग्रहाः ॥ पीडयन्त्य पिपाश्वापीः न-

मेमं ॥ ३ ॥ बुद्धो भव भाव द्वा थास्ताः यन्मंत्र
कठनांतरं ॥ यत्रि सर्वत्र स्वस्ति स्थाः नमे मं
॥ ४ ॥ कलौ बुद्ध विही नस्मिः न्तो कानां हि
त माचरेत् ॥ पापोत्पात पुश्मनीः नमे मं
त्रा नुसा निराः ॥ ५ ॥ इति श्री मन्त्र नु
सारणी स्तोत्र समाप्त ॥ ॥ ॥ ॥

(४५) नमो मिलो के स्वर

नमो लोके नाथाय ॥ ॥ नमामि लोकेश्व
ल पाद पंकजः सदा विबुधं कुरुना मय दुर्ब ॥
अपेक्ष दोषं प्रचयं गुरा श्री यंः परथ गंधो
दय बासितं शितं ॥ १ ॥ बिशुष्क करारि मु
खा विमु धठिः रचेष्ट कायो दर रोग पिदित
॥ कथन दिष्ट हमु दार मट् भूतंः गुरो दयं हेव
र बैद्य राजेते ॥ २ ॥ तूँथा बिबक्ष गुरारे शमा
त्रकंः यथावरं भक्ति समुन्मुको कृतः ॥ प्रसि
दलोक्त श्रद्धा स्वभा रतिः यतो न गच्छामि जन
स्प वाचातां ॥ ३ ॥ त्वया माहि दोष समु
द भवा रजः श्वी किर्तिता धर्म महागद
न वै ॥ जनस्प रोगा दि कृत्वा पत्वा धानिः
कथमभिन्ने कहराग निधे प्रभो ॥ ४ ॥

जनस्प दुःखेन यदि पुत प्यस्यः कथतदाति
न समि करोमि वेः ततः समाना करराकठ
प्रभा ॥ थवाह मेवास्मि न सत्व मध्यम ॥
५ ॥ पदिल दिये पिसमाश्रये सनाति विद्वा
त्यदोष गरी रनेक धा ॥ तदा श्रज्जहं कुरुना
निधौ परंः कमेब दुःखा तपरित मानस ॥ ६ ॥
श्रुता गमादौ खरु वरा सविभाः जमेक नाथ
स्त्व ससि ह केवलं ॥ तथादि दोषे यदि पद्य ते
जनः तदा कथं नाथ इति प्रिति शुभो ॥ ७ ॥
तथापि नाथं कुरुना वरं वरंः गुरो कुरुं दोष
मरा प्रहारिणं ॥ श्रयाति नित्यं विकरी कृता
शयः स्वकिय दोषे यतैः स्वकर्म मि ॥ ८ ॥
स्ते प्रभो कश्चि दिहास्ति दोषकोः ममापरा
धो शुभ कर्म निमित्ति ॥ नय दिवायस्प तिचो
लुसंघकः तदा पराधो नाहि वांशु मारिनिः ॥
९ ॥ भवस्मि राध धन तान शक्यतेः मया
बिधातु यदि दुःख भागिना ॥ कथतहा ह
अव रभ सम प्रभोः धिगंतु मामाद् रुजाक मा
श्रयं ॥ १० ॥ जनस्प तस्यापि हि गाम नास्ति
किंः भवाक्षमा राधन हिन कर्मना ॥ भवा

दि संतारसा कारनाश्रयं; तवाश्रयं धर्म समा
 श्रयं श्रयत ॥ ११॥ भवेद्विधे कारुणिकेन
 नः कथं; पराश्रयत्वं भजते विमोहितः ॥ ३॥
 जात वक्षुश्च यथैवका दधः विहाय सत्पार्श्व
 मलं दू देशकः ॥ १२॥ भवत्समः कारुणिको
 न विद्यते; न दुःखं दृष्ट्वा न हि शुद्धं वतसाः ॥
 प्रविश्य मत्वा नरका नरत्नयाः समुद्धिताः दुः
 खपरितमामस ॥ १३॥ बिभारदुः पुरत रौद
 रः क्रिद्वः विभुक्षीतः शुचि मुखो मधुव
 तकराम्बुजाजन्म शुधारसं श्रवः पुपुलकै पु
 रित विग्रहः कृत ॥ १४॥ न संति किं देव गरागा
 मह धयु ॥ परापकारो दाय हस्त वेतसः ॥
 निहते सत्वा थकु दुःख पिदितान् कृत स्वका
 था विपरित बुद्धय ॥ १५॥ तथा। वधे; स्वा
 थ परायणैः सुरैः न मे मतो हं द्रवं प्रव्याति हि
 ॥ स्वाकाथता या च कुतः पराथताः विना परा
 र्थ ननु सेवया च किं ॥ १६॥ ततो ममेवा क्रनु
 मि न मे विभूजागद गुरु सो सतनु महाफलं ॥
 भवाच्च ग केश महात पाप हंः सुराशुल शै
 शिविहं गतं विं ॥ १७॥ भवन्पुसादे नवरा

कृ सि धयोः धुवरभंततव भक्ति भाजिन ॥ य
 दस्य माय वफल लभेनतः दि मस्तु मा भक्ति
 बिहि न मानसं ॥ १८॥ जदा भवेत् भक्ति प
 राजनो जमाः भवेत्तदा दुलतारं नतफलं ॥ न
 हा का पाप रित मानस स्पते; नरागा म मात
 स्मलं नं हि सक्क ते ॥ १९॥ न चेत कृपाते
 हृदय पू चतते पराथता नाथ कुतः समुद
 भवेत् ॥ असार संसार समुद्र पार गः पुनश्च
 तत्रै बिहि तिष्ठते कथं ॥ २०॥ महा क्षपाणे पु
 न मामि सारं, जनस्पदुः खान्ति शतापहारि
 राणि ॥ यथा विमुक्ति प्रगतौ सिरक्षिताः भवेपि
 दोष ज पराथ कारणा ॥ २१॥ भवाधिसं गन
 जनाः सु मुद्धताः तोया कृपा व्याकुर वानिनो
 सदा ॥ महासुखा मोधि महाग विवेतसा
 जहो प्रतिव पदम् प्रयन्नत ॥ २२॥ विधा
 यलोकै सनुति मया सुभंः यदाजितं कुराड
 हि मेन्दु मन्निर्गं ॥ सर्व सुखाथित स्रजना भवंतु
 रोक्तेतर धर्म धरा भिन भिन ॥ २३॥ इति श्री
 मदार्या बलो कितेश्वर भट्टा रक्कस शीलोक
 स्वरस्तव स्तोत्र समाप्त ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

(५६) भगवति बहु रूपे

नमः श्री गुरु स्वरीय ॥ १ ॥ भगवति बहु रूपे
 पे ॥ निर्विकारे रे निरंजे निवित निखिल रूपे
 निश्चया तित रूपे ॥ अखिल निगम पौर नि
 त्प नित्य स्वभावे चरणा कमल युग्म नौ मि
 देबित्वदियं ॥ २ ॥ हसन मुख सशांक ज्यो
 तस्यारात्रिभूतं; दशशत किरणोद्य ब्रह्म मा
 ध्या हिकंते; अरुणा बदनशोभा बोदयश्चा
 स्तकाले; वरणा ॥ ३ ॥ गलजठर पदेषु स्व
 र्ग मत्पा हिलोका; सकल भक्त सादं तारा
 मराजी दुमास्तैः गिरय श्वनितं वारक शुक्रा
 समुद्रा च रत्न ॥ ४ ॥ पवन देह न बेगाश्वा
 स प्रस्वास यत्र प्रलय प्रभव कोलोमीलनौ
 मिलनाभ्यां द्विदशतपन भुता भिमबक्रास्व
 दिया चरणा ॥ ५ ॥ अनुपम तनु देहं व्याप्य
 मान समंसात्; निखिल निगम सार दर्शय
 न् देबिदिब्यं ॥ त्रिभुवन मखिलं तद्दृष्टिं
 मेतिबुद्धिः चरणा ॥ ६ ॥ विधिमुख विवि
 धास्ते किकरा पाद सस्था; मुक्त विधृत
 बुद्धे सर्व मार्ग मिशुद्धे; किमुतब महिमा
 न वरार्णय गुरु देबि; चरणा ॥ ७ ॥ अनुप

ठति समाप्ते पुजने भक्तिमान् ये; नृतिमति
 बितनोति प्रभु मे वास्प बुद्धि; सकल जनजं
 न न्या भक्ति सं पति युच्चै; करतल बसगा
 स्तासिद्ध योस्ता लसंति ॥ ७ ॥ इति स्वर्णं भु
 पुराने मंजु श्री कृत गुरु स्वरी स्तोत्र समा
 प्त ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

(४) नमामि ब्रज योगिनि

नमः श्री ब्रज योगिने ॥ १ ॥ नमामि ब्रज
 योगिनि; निवासिनि मरुतो गिरौ ॥ द्विति
 य बुद्ध प्रोल्लस; शतैक जुत शोभिता ॥ २ ॥
 कृशानु भानु शीतल; कटुशं कपाल मालीनि ॥
 महोत्पला सि कर्तुका; कपाल हस्त धारिणि
 ॥ ३ ॥ तत्रित्सह सुभोजी ल दिगंत रामेश्व
 री ॥ तरङ्ग सिंह तुंदिका; वृता विधिस पुजि
 ता ॥ ४ ॥ भूजंग भूषणो ललस; त्वश धिम
 स्त कोदरा ॥ मह्य यतारिका शिवा; णगल त्र
 यैक पालिका ॥ ५ ॥ स्वभक्त काम पुरी; स
 मुदभवां महोत्करा ॥ प्रशस्ता वस्तु बर्द्धिनी
 समस्त किलिबद्धिदा ॥ ६ ॥ पठं ति येतब मु
 दा; ममो भिका धितं सदा ॥ अवाप्य राना

५२ ८१

वृत्तिकः रमनियोगिपुरे ॥ ६ ॥ इति गौतम
मुनि कृतं ब्रजयोगिनिस्तोत्रं समाप्तं ॥ . ॥

(४८) जयजय देवासुरजसैवा

नमः श्री विद्याधरी देव्यै ॥ ॥ जय जय देवा
सुरजसैवाः चित पद पद्मा कुसुमविचित्रा
जयजय मंदारः कुसुममालाः ॥ जयजय संसा
लजलधिपारा ॥ १ ॥ जयजय हंसा मृतपरबं
शा कुलिशकरोते करतल सेतेः कुमुदविराजे
शिरसि मुनिशोः मरिगमय कुशजं लसितं
जंगे ॥ २ ॥ जयजय विद्याधारि शुभकारि उ
सिभुजंगा धिप मरिगमालाः जयजय वैतेवनि
वर देहे कटितट संवेष्टि र शुभं चरोहे ॥ ३ ॥
जयजय विरेश्वरि भवहारिः मरिग बिलसन्नु
पुरलसद् धिः कनक सुपुष्पा सुराशतवरीः
तपिदयुताधि सुतिर विताशे ॥ ४ ॥ जयज
य दुर्गे जिननि भवानिः जननजरारक
निधनस पत्ने ॥ षट् अधिक विशाक्षरम
नुमालेः प्रलय निशगी त्सुजननिदाने ॥ ५ ॥
कुसुम विचित्रां पठति यथाः नभतिशस्य
कृत जनवदपः निगम सुशार सकल रहस्यो

५३ ८३

भवजल धेपार कुदप बर्गा ॥ ६ ॥ इति
स्तुत्वा देवी परिचित यप्ता शक्य परैः प्र
नम्य प्रा नर्चयामित गुरा यशोताम सुखदां
महा कर्तो मे है भगवति सदा त्रैब बसतात
ये त्पूजां तर्क्षी त्वममीपि य शसे गद्यनगरं
॥ ७ ॥ इति श्री स्वायंभू पुराने ब्रजपाद
कृतं विद्याधारि देव्यै स्तोत्रं समाप्तं ॥ ॥

(४९) कल्पोदितेन विधिना

नमः श्री वसुंधरायै ॥ ॥ कल्पो दितेन
विधिना परीपथ्य मानाः याधारया विवि
धि रत्न सुवर्गा मर्या ॥ पुरां करोति भ
वनसह सैब सर्वः तां सर्वलोक जननि प्ररा
मामि भक्त्या ॥ १ ॥ त्वं देवि सर्वे गुरारत्न
महानिधानंः सत्त्वार्थकार्यं धन धान्य समृ
द्धि हेतोः ॥ हारार्द्धहार मुकुता मनि कल्प
वृक्षाः त्रैलोक्ये नाथ वसुधा वसुधा रत्नामा
॥ २ ॥ उत्सृष्ट रोग भय मृत्यु ररोग दोषाः
न्दारिद्र दुःख वृन रोहन् मौषधिनांः सौ
भाग्य रूप गुरा पुष्कल गोत्र वरार्ताः सर्व
वदाति तव पाद यगन्ममामि ॥ ३ ॥

६४

यासम्पगुक् विधिभि परिपथ्यमानालक्ष्मी
न्ददाति विपुला सुगतो पभोगान् ॥ तान्धा
र निसकल सत्व हितैक चित्ताः भक्त्या
नमामि सततं वसुंधारानाम् ॥ ४ ॥ या
सुस्मृता सुचिर सुस्तुतेरं पुबुद्धं; दारिड दुःख
दुरितं शमते नराणां तां कल्प वृक्ष सदृशी
वसुधार संज्ञाः भक्त्या नमामि शिरसा
जगतौ हिताय ॥ ५ ॥ यारत्न पारिा स
फला ममैवै सपत्नि त्यागावतं सदयरो ख
रमु वहन्ति ॥ हाराद्धं हारव र कुराडल भुषि
तोक्तिं मार्यान्ममामि वसु वृष्टि ददा शरणं
॥ ६ ॥ रत्नाकरा रत्न निधान कोशा विचि
त्र रत्ना प्रतिभा सबर्षी ॥ रत्नावति रत्न
मयि विचित्रा नमामि चार्या वसुधार
धारा ॥ ७ ॥ इति श्री वसु धारा देव्ये स्तोत्र
समाप्त ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

(५०) मार्गेश्वर प्रवर भाषणा

ममो लोक नाथाय ॥ ॥ मार्गेश्वर
प्रवर भाषणा मान कायः सैसारिकेभ
व सि सत्व बिहेथ चित्तं ॥ प्रारातिपत

६५

बिरहा खलु मुक्ति लोके; लोके शतेन तव
पाद युगं नमामि ॥ १ ॥ दूदान्त निधूर
महा कहराग वशेषो; नागेन्दु बशपि ह्री
अभयं प्रदत्ता ॥ प्रादत्तदान रीहिता भव
ता भराशो; लोकै श्व ॥ २ ॥ कल्पान्ता
दग्ध दूत भुजज लिताग्र तेजं सैतापसत्वं
बहु दुःख विनाश कारि ॥ ३ ॥ ब्रह्म चर्ये
विरता दमि मौक्षमार्गः लोकस्व ॥ ३ ॥ ना
ना तिलंकृत फराग मनि पन्न गोसौ; दु
ष्टा कलाल बदनो लल जिह्व दुष्ट ॥ सौरा
दि पाश विरतादपि भित्त भंगो; लोकेश्व
॥ ४ ॥ दुस्ताहि का पुरुष तस्कर कोति नस्त
मौवरा रूप्य पर मार्य विद्यात चित्त ॥ नृ
पादि चित्र विर हाट भय निस्तार वै; लोकै
श्व ॥ ५ ॥ स्तुलाप शौमि गड बंधन कारकै;
गोवातिक कडा खरोति परोप कारी ॥ उवा
सनामि हरनास्म मबद्ध शातो; लोकै श्व ॥
६ ॥ दूगाट तोप निधि चंवर भंग बाहो; मि
नादि नेक कम थाल पुरा भीत ॥ संपासना
द्य लय नाञ्जल भीतहारो; लोकै श्व ॥ ७ ॥

५८६

पैसाच दानब महाभय रूपदेहः क्रोधाति
भिमनयना नरमांसभक्षि ॥ वैकाल्यमौ
ज्य बिरतादुभयं करो शीः लोकेश्वर ॥ ८ ॥
अष्टांगमार्ग समुपाष धराजरत्नः लोकेश्वर
रूपवर धर्ममहाप्रसिद्ध ॥ नित्यं सदाष्टम
महोभयभीत तोषि लोकेश्वर ॥ ९ ॥ लोकेश्वरा
यस्तु तिसंचित तेबलिलाः वजेरादानपतयेद्भुम
सं पदार्थः ॥ सत्वोपकार परमार्थपदं विशालं त
स्मै नमस्तु सततं जिनपूत्रकाय ॥ १० ॥ इति श्रीमदा
र्यावलोकितेश्वर भट्टारकस्य अष्टमहामहाभ
यहराण हृदयमालास्तवस्तोत्रसमाप्त ॥ ॥

(५१) कल्पादिते भवसिद्धो

नमोलोकनाथाय ॥ ॥ कल्पादिते भवसिद्धो
कोहि महाप्रभाव सर्वेश्वर सकल गुराण मय
विश्वमुक्ति ॥ कल्पादिर्कं पुराणमिति तमस्त
कस्त्वाः श्रीलोकनाथ तवपादयुगं नमोहं ॥ १ ॥
॥ प्राकस्मिकेन रक्ष कोहि च वर्तमान विश्वासि
भूमि सकले प्रतिपादरेव ॥ हेमस्वरूप रथकेन
समुक्षरेणः श्रीलोक ॥ २ ॥ ब्रह्मात्ममेव हि
सर्वप्रकृते प्रसिद्धाः विष्णुश्चैवैषावमते

५८७

बल धर्मकेतु ॥ सर्वत्रकं शिवमते प्रभाख्ययश्चः
श्रीलोक ॥ ३ ॥ बोधाधये भवसि वज्रसूर्य स्वत
पो योगेश्वरो हि शुभयोगकमार्गकेषु ॥ ज
य धरो भवभयोर्त्ति विनाश करिह श्रीलोकना
॥ ४ ॥ कारुण्य भव हृदय सहज सरोजं विश्वे
करोचन बरो गुरा सागरश्च ॥ विन्ता मीरास्त्व
मसिलोक गुरु कृपेशः श्रीलोक ॥ ५ ॥ वंधुक
बर्णवह रूप विशाल नेत्रं सब प्रसुति कृत तीर्थ ति
कृत्सु हस्ता ॥ सेपद्रपारिण विमलोत्तम मित्र
रूपः श्रीलोक ॥ ६ ॥ तव बहु गुरावैकः स
मर्थोस्तिः बबकं ॥ तदीपि मुखर भाषैः सुयसे
त्वं मयात्र ॥ पदं सि पदम शब्दः सर्वमेतत् क्षम
स्वः स्तुतिरिति कुसुम सुभुक्ति मात्रा चर्चनं
स्पात ॥ ७ ॥ इति श्रीमदाय्यवलोकितेश्वर
भट्टारकस्य लोकेश्वरस्तोत्रसमाप्त ॥ ॥

(५२) पदं कैरुहस्ताय पदां कुजाय

नमोलोकनाथाय ॥ ॥ पदेरुहस्ताय
पदां कुजाय वंधुक पुष्पा द्युति सुन्दराय ॥ स
रोज हस्ताय जटाधरायः नमोस्तु तस्मै करुणा
मयाय ॥ १ ॥ कापुत देसोर् भवमंगरायः जिने

दृष्ट्वाय तथा गताय ॥ संसा दुःखारोपि पार
नायः नमोस्तु ॥ २ ॥ समन्तप्रभदाय सुराचिताय
सुवर्णं श्रीबायकसु सिताय ॥ तार्किक कर्ताय वि
नायकाय नमोस्तु ॥ ३ ॥ सौदाम्य शोदाय वृं
खासनायः बुडामरिणः शीर्षिकराजतुभ्यं ॥ अ
नर्घ रत्नैः परिमण्डनायः नमोस्तु ॥ ४ ॥ स
र्वं बुकं टाय मनोहराय त्रैलोक्यं संपुजित संपदा
य ॥ कारुण्य संपूर्णं हृदयं पुजाय नमोस्तु ॥ ५ ॥
स्तोत्रं प्रचक्रे बुगमे श्वपटकं : पुराणार्थतोयं दु
त राज धिमान् ॥ येये पठिष्यंति नराप्रयत्नात्
तेते गताः श्री सुर स झरमे ॥ ६ ॥ इति श्री खड्गस्त
व स्तोत्र समाप्त ॥ - ॥ - ॥ - ॥ - ॥

(५३) संभासं त्रिभुवन

ममोलोक नाथाय ॥ ॥ संभासं त्रिभुवन
जिन राज दिपैः यश्चोद्धरन्ति तय भिन्न वि
लज्ज सत्त्व ॥ सौखा बति पुर बरे युगवासदत्तं
तं धर्म्म राज गुण दं सततं नमो हं ॥ १ ॥ यबु
द्ध ज शिव करं परमं भयघ्नः दृस्त्वा करं गुणानि
धैः सक लाञ्छ सत्त्वा ॥ पारं गता विषय पु
रा ज रो भवा पृथे तं धर्म्म ॥ २ ॥ सत्त्वा

गृहाक्ष नम व्याधि जरान्त दुस्ताः स्वेनोद्धृता
मदन येन महान्धकारात् ॥ लब्धा गृहं परम
ज्ञान विशुद्ध राजं तं धर्म्म ॥ ३ ॥ यस्मै ददं
कुसुम धुप विलेपनादिभ्यः सार श्रुते विवि
ध धर्म्म विदे सुवित्तः ॥ प्राप्ता कला विबुधरा
ज पदत्व युक्तं : तं धर्म्म ॥ ४ ॥ यस्माद्वला
नि परि लभ्य विधु य विद्वान् : सौख्यान् वि
त सूख भरैः परि तुष्ट मानेः ॥ मर्त्य कृता विवि
ध दान सुशिल ध्यानं तं धर्म्म ॥ ५ ॥ शु
द्ध पुर्ण जिन करैः परि मिश्र भूतं ज्ञानोद्धृ
तं कमलजं परि प्रिय यस्य ॥ देवो मृत सुगताज
जो मरेन्दुः तं धर्म्म ॥ ६ ॥ यस्मिन् सदा शरण
चित्त प्रलोल भूतं : यस्य मदैः कलुष हेह मनर्थ
भूतं ॥ त्यक्त्वा तमे जल जलासन लपथ बास
तं धर्म्म ॥ ७ ॥ सत्त्वोद्धरे सकल देव विरूप
रीन् : ब्रह्मा गरौः सतत पूजित पादपद्मा
॥ नाना विधे सकल भुत दयादु वित्तः तं
धर्म्म ॥ ८ ॥ भुत्वा शुचिः परम पुराण जिनिस्त
वतः तुष्टा पठन्ति शुद्ध विशुद्ध भावः भावां प
यायात् कल पदवरं जिन राज भावं तं धर्म्म

॥८॥ क्षेमो मां करोतु हि पदे परिशुद्धभावे कामं
 दद सुगतज्ञान सुलपधहेतोः सत्त्वाश्चरक्ष
 तु सह भव विघ्न मारातः श्रुत्वा पथन्तु शत्रु
 नास विमर्द दक्ष ॥ १० ॥ इति श्री महायजुर्वि
 लोकिते स्वर भक्तारकस्य धर्मराजस्तोत्रसम्प्राप्तम्

(५४) प्रतिसरा अमराद्यैः

नमः श्री प्रतिसरायै ॥ ॥ प्रतिसरा अमराद्यैः
 पुजितां त्वां नतोस्मि ॥ प्रतिप्रद जनरक्षा का
 रिणि सर्वकालं ॥ भृगुदहन समुद्रा पाटदुः
 खे सुरक्षाः रिपु विष भय हर्ति राज्ञ भोगपाधि
 किति ॥ १ ॥ परिवृत निजवर्गा भक्त दत्तां प
 वर्गाः कलित दुरित वर्गा मोक्षलाभैः क मार्गा
 कृतनर सुर सर्गां कारीतानं गर्भंगास्तुतिकृ
 त मुनिगर्गा सर्वरक्षैः क संगं ॥ २ ॥ प्रहृत
 सकल विघ्ने सर्वलोकैः क मान्यैः दशबलकृत
 धन्य पंच देवि वररूपे ॥ विषम पद शररूपे
 सर्वदा त्वां नमस्तेः वीसित इव अररूपे दान
 दग्धे विरम्ये ॥ ३ ॥ सकल जन सुखांघ्रा
 पुरशो कामधेनु मभिलषित फला प्रो कल्प
 वृक्षा गवल्ली ॥ असुर सुर नरोद्यैः वैदितं

द्ये कुयुग्मांः उरलिललित नाना रत्न माला
 रुक् मां ॥ ४ ॥ उडुपति वशत दीप्तां शिख
 कुंदावदातांः ग्रह भय परि शांतां वज्र सत्त्वा
 त्मीकांतां ॥ श्रवणा ललित लोल कुराडले स
 बहंतिः मुकुत मरिगा शिखा मिदु कशि ताशां
 नमामि ॥ ५ ॥ जननिसकल दुःखोत्ता
 रिणि त्वं प्रसीदः सप दिनि गतरक्षां रक्ष
 मे मातरं च ॥ सकहरा रुदितं मां त्वदया
 स्वदुःख भुतांः कृतशरसि निपातां त्वंगतिस्त्वं ग
 तिनी ॥ ६ ॥ पठति प्रतिसरा यास्तोत्र मे
 तत्सदायं ज्वलन जल विचारानां चौर सादु
 लब्धानां ॥ सगदति धन काना भीतयो ना
 शयंतिः पतिपद मल भक्त कामुना धैके
 लार्भ ॥ ७ ॥ निजपरिगृहा युक्ता धर्मे
 कामार्थ वृक्षाः रिपुगणापरि मुक्ता सौरव्य
 मेव प भुक्ताः ददति पुल भोग्य कामदा स
 र्वदासो विहित सकल पारं मोक्ष मायां इति
 चाते ॥ ८ ॥ विगलित नयनां वु सांजलिः
 संबिलापिः स्तुतिमिति प्रचाकरे त्रे भवानां
 जनन्याः भवतु मम तु मातुः संपतंत्पाकृशा

नीः तनुकशल सुरक्षा ई ल मेवं सुचित्र ॥
 ६॥ विष चतु मीधे सर्व मादृशं कर्म भोग्यं ससु
 र नर चयानां भातृ मानु दुहनां ॥ कृतत कू
 रत धर्म येन मोक्षं सुलभं जठर निलय
 बासं मातृपापं कदाचित् ॥ १०॥ प्रभवति न
 क्रीष्णे कर्म यता हनु दुःशनु उदर नल्ल बासं
 येन दाशा बतार ॥ शुभ सतत सूचताः सा
 ध विष्णामि बोधिः कृत जगति सुरक्षां य
 न कैवल्य प्राप्ति ॥ ११॥ इति समुदित चे
 तक मे शा दिग्ध नितः प्रतिसर अव तात्मा
 सां विष्णामा बिलब ॥ अनिशमिती वदसे
 नि द्यतत स्वकर्मः प्रति भयं विष दिग्ध
 स्तलि बान्न भक्त सन् ॥ १२॥ इति श्री
 भद्र कल्पा बदानी धृतं जसोदरादेवि ग
 र्भ स्थित बालख कृत प्रतिसरास्तुति समाप्त ॥

(५५) ऊता धर सौम्य विशाल
 नमो लोक नाथ ॥ ॥ जता धर शौम्य वि
 शाल लोचनः सदा प्रसन्ना मुख चन्द्र मण्ड
 लं ॥ सुरासुरै बन्दीत पाद पंकज ॥ नमामि
 नाथ मणि पद्म संभव ॥ १॥ सलोज पत्रा

यत दिव्य रोचनः कूटस्थि सशोचन सूक्ष्म
 वनः कृपा मृतादः जगदेक रोचनः जता
 धरं सौम्य विशाल रोचनं ॥ २॥ हारेन्दु
 हाराब्ध हिमा धिको ज्वरः निदृष्ट गराडा
 मल लोल कुराडलं ॥ गं भदि मारा कृत कोटि
 संकूलः सदा प्रसन्न मुख चन्द्र मण्डलं ॥ ३॥
 प्रबुद्ध धर्म ध्वनि धर्म धातुजः सहश्र बाहु
 धि चतुर षट् भुजं ॥ ख धातु ना तुल्य मनन्त
 माधिजः सुरासुरै बन्दीत पाद पंकज ॥ ४॥
 उपाय पुज्ञो दधि मन्त उट् भवः त्रिधातु सं
 रक्षरा हेतु संभव ॥ जिनेन्दु मोरि जिन
 धातु संभव नमामि नाथं मनि पद्म संभव
 ॥ ५॥ पज्ञो परिगत नाथ पद्म हस्तं जया
 धर ॥ आर्या बलोकितेश्वर वन्दे सर्वस्व
 त्वा नुक् पुन ॥ ६॥ इति श्री मदायर्षि
 बलोकितेश्वर गद्वारकल्प बाल शुक्ति कु
 तं स्तोत्र समाप्तं ॥ ॥ ॥ ॥

(५६) श्री वाग्मति अमोघं च
 नमो रत्न त्रयाय ॥ ॥ श्री वाग्मति अमोघं च
 फर दायनि संगमे रक्ते वर्णा तक्षकं चः पुराण-

तिर्थ नमाम् ॥ १॥ पुण्य तिर्थे स्नानं कृत्वाः
 दशा कुश पाप नासः तक्षक तिर्थ संतपेः रक्षकं लोक
 नाथक ॥ २॥ बागमतिमारवायनि संगमे
 शान्ति तिर्थकंः श्वेतवर्ग स्वम शिखिः शान्ति तिर्थ
 नमाम् ॥ ३॥ शान्ति तिर्थे स्नानं कृत्वाः वृ
 षट् पाप नासनः पार्वति तिर्थ संतपेः रक्षकं
 श्री गुह्य स्वति ॥ ४॥ बागमति मरिगरोहिनिः
 हृद धारा त्रिसंगमेः गौरवर्ग शंखापारः शंख
 तिर्थ नमाम् ॥ ५॥ शंख तिर्थे स्नानं कृ
 त्वाः कोष्ठ रोग पाप नासनः गोपाल प्राप्ति
 तपेः रक्षकं शंख तिर्थकं ॥ ६॥ वाग्मतिरा
 ज मंजारीः संगमे राज तिर्थकः श्वेतवर्ग स्वर
 पंचः राज तिर्थ नमाम् ॥ ७॥ राज तिर्थे
 स्नानं कृत्वाः राजा प्राप्ति फलपदंः विरूपं ति
 र्थ संतपेः स्वरूप राज प्राप्ति ॥ ८॥ केशा
 बति विमला बतिः संगमे श्री मनोरथः भयं
 कर कुलीकं वः नम्य मनोरथ तिर्थ ॥ ९॥
 मनोरथ तिर्थे स्नानंः मनो बांछा फलपदंः
 बराह व्याघ्र मूलार्थः प्रतिज्ञा पुरा तिर्थकं ॥
 १०॥ केशाबति भद्र नदीः संगमे निर्मल तिर्थ

पीतवर्ग उपलालः नमामि निर्मल तिर्थ ॥ ११॥
 ॥ निर्मल तिर्थ सं स्नानंः निर्मल जस प्राप्ति
 वज्र पद तपं तिर्थः रक्षकं श्री विद्य धीर् ॥ १२॥
 केशाबति स्वर्गाबतिः संगमे निधान तिर्थः निल
 रूपामद्वय नागः नमामि निधान तिर्थ ॥ १३॥
 निधान तिर्थ सं स्नानंः दारिद्र्य दुःख नासनं ॥ दि
 नचुदं तपे तिर्थः धनाथ फल प्राप्ति ॥ १४॥
 केशाबति पाप नासनिः संगमे शान्ति तिर्थकः श्वे
 तवर्ग कल सुकिः शान्ति तिर्थ नमाम् ॥ १५॥
 शान्ति तिर्थे स्नानं कृत्वाः अज्ञान पाप नासनं
 अज्ञान श्वो धन राजाः सत शान फल प्राप्ति
 ॥ १६॥ बागमति केशाबतिः संगमे श्री चि
 न्ता मरिगः श्वेतवर्ग वरुणागः नम्य चिन्ता
 मरिग तिर्थ ॥ १७॥ चिन्ता मरिग तिर्थे स्ना
 नंः चिन्ता मरिग फलपदंः कोटि करोत्तपं तिर्थ
 पित्र लोक मुक्तिपदं ॥ १८॥ बागमति रत्नबति
 संगमे श्री प्रमोदकंः पीतवर्ग पद्म नागः न
 मामि प्रमोद तिर्थ ॥ १९॥ प्रमोद तिर्थ सं स्ना
 नंः विद्या बाक्सी वि संपदंः तिर्थिकं ताकिं
 बाध्यः रक्षक प्रमोद तिर्थ ॥ २०॥ वाग्मति

चारुमतिः संगमे श्री सुलक्षणाः श्वेतवर्णा
महा पद्मः नमः सुलक्षणा तिर्थ ॥ २१ ॥ सुल
क्षन तिर्थ स्नानंः द्वात्रिंशलक्षणा पुराः अ
लक्षिं कुमारतपेः सुलक्षणा फलपदं ॥ २२ ॥
वागमति पुनाबतीः संगमे जय तिर्थकंः श्वेतव
र्णा कान्ति नागः जय तिर्थे नमः ॥ २३ ॥
जय तिर्थे स्नानं कृत्वाः भयनासं जयपदंः प
तुनि कान्ति तपे तिर्थः रक्षकं श्री वसुधारे
॥ २४ ॥ अनालिङ्ग तिर्थ स्नानं विरजिषि फ
लं पदं ॥ मरिण शिला तिर्थ स्नानंः निर्मल
जस प्राप्ति ॥ २५ ॥ गोदावरि तिर्थ स्नानं
प्रज्ञा ज्ञान फलपदं ॥ माता तिर्थ स्नान कृत्वा
माता दर्शन सत्सुखं ॥ २६ ॥ नदीकोष्ठ तिर्थ
स्नानंः आरोग्य फल प्राप्ति ॥ मत्स्य मुषति
र्थ स्नानंः रत्न दुब्ध फल पदं ॥ २७ ॥ इन्द्र
फिल तिर्थ स्नानंः संतान वृद्धि प्राप्ति ॥
लुति तिर्थ स्नानं कृत्वाः स्त्री पुरुष फल पदं
॥ २८ ॥ नवल्लिङ्ग तिर्थ स्नानंः स्वदृष्टा फ
ल प्राप्ति ॥ काकेश्वर तिर्थ स्नानंः इक्षु बंधु फ
ल पदं ॥ २९ ॥ तिन्वाण तिर्थ सं स्नानंः तेजबं

त फल पदं ॥ वागि श्वर तिर्थ स्नानं बाष्प
सिद्धि फल पदं ॥ ३० ॥ सहस्र सुंदरी तिर्थः ई
श्या पुरा फल पदं ॥ अगस्त्य तिर्थ सं स्नानंः
धुव लोक फल पदं ॥ ३१ ॥ आनन्त तिर्थ सं
स्नानंः तेति स्कोवि नागराजं ॥ तारा हृदं तिर्थ
स्नानंः आर्य तारा दरसनं ॥ ३२ ॥ बाग द्वा
र तिर्थ स्नानं सकल फल प्राप्ति ॥ केशा
वति मूल तिर्थः उत्पन्न उत्तम फलं ॥ ३३ ॥
कालि तिर्थ स्नानं कृत्वाः सुभसं फल प्राप्ति
क ॥ विश्व तिर्थ महा स्नानंः सर्व तिर्थ फल प
दं ॥ ३४ ॥ मंजु श्रीर्न स्थापयित्वाः कापौर ति
र्थ सिद्धः दाल पाल बाल सुकिः पद्म परिणत
मस्तुते ॥ ३५ ॥ नेपाले द्वादश तिर्थ उप तिर्थ
शोभितं ॥ इति ते तिर्थ सं स्नानं सर्व तपायना
मं ॥ ३६ ॥ इति श्री नेपाले द्वादश तिर्थ उप
तिर्थ स्तोत्र समाप्त ॥ ४ ॥ - ॥ - ॥

(५७) लोकेश्वरं जगत्स्वामि
नमो श्री वितरागय नमः ॥ ॥ लोकेश्वरं
जगत्स्वामिः सुखावति समागतं ॥ पुरा पतिर्थ
तक्षकादि गरुडादि उद्धारनं ॥ १ ॥ चारु

गिरी निवासितं सर्व सत्त्व उधारण ॥ हरिहर
 हरि बाहुं; लोकै श्वरन्नमाम्प हं ॥ २ ॥ गिराली
 गे मैत्रै बोधि मरिचुदु प्रभावकं ॥ श्रीवत्साका
 र संसिद्धं; वीतरा ॥ ३ ॥ गोकर्णी
 गगन गञ्जः पितृलोक उधारणः पद्म आ
 कार संसिद्धं; वीतरा ॥ ४ ॥ किलेशि
 मन्त भद्रः कुलिक बोधि दीयन् ॥ ध्वं जडा
 कार संसिद्धं; वीतरा ॥ ५ ॥ कुम्भेश्वर
 पारिाः सर्व पाद रक्षकरं ॥ कलाशाकार सं
 सिद्धं; वीतरा ॥ ६ ॥ गणेश्वर मञ्जु घोषः मं
 गुगर्त उधारणः ॥ वामराकार संसिद्धः वीतरा ॥
 ७ ॥ फरिाकेश विष्कं भिज्ञः शोदियान
 सिद्धि पदं ॥ मत्स्य आकार संसिद्धं वीतरा
 ८ ॥ गंधेश्वर छिती हर्म अष्ट सिद्धि पीर
 शकं ॥ छत्र आकार सिद्धः वीतरा ॥ ९ ॥ वि
 क्रमेद्रा श्री खगर्भः शंख सब्द सुमंगरं ॥
 सख आकार संसिद्धः वीतरा ॥ १० ॥ वि
 भुवतिर्थ पद्म पारिाः जल कृदा सुसंस्थितिं
 ॥ सर्वतिर्थ फदायः संधरनायते नमः ॥ ११ ॥
 जेपठं ति हृदस्तोत्रः पढां पपानासनं ॥ इह

लोके सुख भुक्त्वा; परत्रय सुखावर्ति ॥
 ॥ १२ ॥ इति श्री अष्टमैत राग स्तोत्र समाप्ता ॥

(५८) सुबर्णचुडामुनि श्रीरघ्वर
 नमो लोक नाथाय ॥ सुबर्णचुडामुनि श्रीरघ्वर
 नः मुनिद्व राज सिरशि पठालं; मैत्रेय नार्थक
 रराग बालं त्वं धर्म राजं सततं नमो ॥ १ ॥
 भो बोधन श्री कहरा मयसः शानो पदेशं शु
 त्वे नाकमिसं; दशभुजे सुसुताः जमिद्राः तौ
 ध ॥ २ ॥ कुरादेर दुबरा कुमुदो पद्म मसः
 शहं सवं श्री कमराशराप शः त्रै लोक नाथ
 भुवने स्वरेसं तौ धर्म ॥ ३ ॥ त्रैधातु भुमेश्वर
 सिद्ध रूपः संपुरा बिाक्य श्वर सौद रूप द्वात्रिंश
 रक्षरा संपुरा रूपः त्व धर्म ॥ ४ ॥ संसारा
 ल भव कृच्छु तालं; शान्त पद्मान्त सुविशुद्ध
 देहः नमा मिलोश्वर लाज मिहं; त्वं धर्म ॥
 ५ ॥ श्रवदवतु ध्यानः अश्व गजानित्यसु
 कृतिमिति स्तुति सिद्धः मैत्रिनाथं सहेश
 षरगाति भवतारः सर्वग्न बान्देशः दिविमु
 विनाशितं श्रीः लोक नाथं शुरेस ॥ ६ ॥
 इति श्री मदाय्य बिलो कित्यश्वर मत्तारकस्य
 श्रीगुरा सागर अकलो कित्यश्वर स्तोत्र समाप्त

(५६) चित्तेश्वर प्रभु मनो

नमो लोकनाथाय ॥ ॥ चित्तेश्वर प्र
भु मनो मरिा पञ्च जातः श्रिता मरिाप
वत् भुषरा भूषितांग ॥ संबोधनतृगुणा
भूत्कसुराग मयोसिः शीलोकनाथ चरणां
भवतो भजेहं ॥ १ ॥ धर्मेश्वरः सुक
ल पाप विनाश हेतु सौखावतिगती
महाजन सार्थ बाह ॥ पञ्चालयः प्रति
ददास्य भिवांछितार्थः श्रीलोक ॥ २ ॥ सम्प
पुपाय नरको धृतिशुद्ध शीलक्रे सातुर प्रश
मनो तम बैद्यराज ॥ नाथो विरोच सी सदा
जिनराज मोलिः श्रीलोक ॥ ३ ॥ शान्तिकृषि
त त्रिमल पुष्कलि रोदुबहिः शान्तिप्रसूति
त मखां बुज धिर मुर्ति ॥ बोधि प्रबोधनकरो
प्रतिभाषिलोके श्रीलोक ॥ ४ ॥ दुरवापधि
पार गमनेत्तम करीधारः बोद्ध पद प्रणिधरं
वत् सबिभर्ता ॥ लोकेश्वरो विजयसे जितमा
र सैन्यः श्रीलोक ॥ ५ ॥ ध्याना हितो मद
न जोट् ग्रम दुःख हारिः वैनेयकः प्रतिवि
बोधन विश्वमुर्ति ॥ प्रद्योतस्य त्रिषु समाहित
वेधि सत्त्वः श्रीलोक ॥ ६ ॥ मोहां धकार नि

हितो तिष्ठामुः वागीश्वरो जित तीर्थी कोद्य
॥ प्रज्ञानिधि प्रतिविद दशयवोधिपालः शीले
क ॥ ७ ॥ मिथ्याकुल प्रतिनिधिः संस्कृति विश्व
कर्माः ज्ञान प्रभा विरसितोन्नत धर्मराज ॥ संबो
धि मार्ग पठितं परीरक्षतां मां श्रीलोके ॥ ८ ॥
स्तुतमपि मुनिसंघैः सर्वलोकाधिदेवं ॥ अ
हमपि नुति पुष्पंः श्रभीर भ्यर्चयतां ॥ यदपि
पदमसुद्धं तक्षमस्वत्रनार्थः तव गुरामखिलं
के च समर्थे हि ब्रह्म ॥ ९ ॥ तव पद कमलोये
भक्ति नम्रो तमां गाः प्रति दिनमनुमोदात्स
पठंति सावतत् ॥ १० ॥ त्रिमल भव बिभुको
स्तै त्रिवर्ग प्रयाताः ॥ शुभ गुरा सुरवराजं सं
लभंतु प्रमोक्षं ॥ ११ ॥ इति श्री मदायकोलो
चित्तेश्वर भट्टारकस्य जय मुनिविरचित वि
तराजस्तव समाप्त ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

(६०) आनन्द कन्द मति सु प्र
नमो लोकनाथाय ॥ ॥ आनन्दकन्द म
ति सु प्र मनन्तकाद्यः मार्तन्द चन्द्र दहनाल
य मध्यवासं ॥ बिभुवाट भव स्थिति विनाश
निदानमेकः श्रीलोकनाथ मखिला विगुहं

नमामि ॥ १ ॥ संसार लुप्ति समय दुहि रास्त्व
मेवः वित्तु स्थितौ प्रबलयः पुनर्मेव रदु ॥ कि
ते कबामि महिमान मनन मुर्ति श्रीलोकनाथ म
विबिधे हि कृपा कटाक्ष ॥ २ ॥ सारस्त्वमेव व
जं गतांजन तापहारिः त्रैगुण भाव रहितो गुरा
ताभिनाम ॥ लीलावतारि तत मुस्तब सांनि
धान श्रीलोकनाथ भुविमा मवतान् समन्ता ॥
३ ॥ लावराप मुर्ति मर बिन्दु विशाल नेत्रैः नीला
भिर्भुवि त लुकोमल चारु केशं ॥ दन्तावलि
विजित दन्तावलि विजित बाल निसाकराभं
श्रीलोकनाथ मति सुन्दर मश्रया मी ॥ ४ ॥
॥ रत्नावत शपथि मरिडत चारु गरुडक
राठावलं वितलु निर्मल दिव्य हारं हस्तिबु
जापित महा मरिडकं करान्तं श्रीलोकना
थ मरिडासं शरणां प्रयामि ॥ ५ ॥ वक्षस्थलं
तव महाद् भुत चक्र रत्नं ज्योतिप्रकाशितम
नंत्य गुरां गुरि यः ॥ व्योमेव भास्कर रसत्प
रितो बिभाति श्रीलोकनाथ मम चेत सिम
सदास्तु ॥ ६ ॥ देवत्वदीय बपुषखलु मध्या
भागं पंचाननो ननु निमज्जति हि समुद्रे ॥

दृत्वा सुवर्ण तनु सन्नीभ सान्त सार श्री
लोक नाथ सततं तमि हस्तरामि ॥ ७ ॥
साध त्रयोबाले विराजित निम्न मध्यं नाभिसन
सुजन कल्मषतोपहारि ॥ ज्ञानोन्मिसं बलित
पुन्य महारविन्दं श्रीलोकनाथ मम समं निक्षिप्त
दास्तां ॥ ८ ॥ रंभाकरिन्दु करकोमल चारु चंच
त्यस्तां वरी वृत्त मसे स गुरागुण मध्यं जलद्वयं
तव सुरेश्वर सर्व तोषिः श्रीलोकनाथ मम मंग
ल मातनोतु ॥ ९ ॥ जानुद्वयं तव सुवर्तल मुन्न
त श्रीः मोहो धकार दिवसा धिप विव कल्पं ॥
भाक्कानु रूप फलदं दलित सिरसं श्रीलोक
नाथ मम दुःख तर धूनीतु ॥ १० ॥ पादांबुजं
सुरनरा सुरनागयक्ष रक्षाधिराज वरमो
लि मरिड पुमाभि ॥ ११ ॥ धो धित लुजन सां
ति दान श्रीलं श्रीलोक नाथ तव दं जयदं य
जामि ॥ १२ ॥ प्रातर्भजामि भव भित्ति विर्भ
गद्वेतुः भूक्ता विभक्ष्य फलदान विशाल बाहुं
॥ बालार्क कोटि निभमद् भूत मदिदेवं श्री
लोकनाथ मम लङ्घति मूढकाशं ॥ १३ ॥
मध्ये दनि प्रवर चराडकर वपुचराडं नि

तामशिवा प्रति ममोत्तमजने सुमित्त ॥ सत्पा
 स्पदं परतरं वपु राय धानं ॥ श्रीलोकनाथ म
 र्त्तनंतरननमा मि ॥ १३ ॥ साया हूतो पिक
 ररागकर मंबु जाक्षः ॥ रूपात प्रभाव मोखि ले
 पु जगत्सुसान्त ॥ सर्वार्थदं दलित भक्तजनाधि
 मिदे श्रीलोकनाथ मनघं पुरुषं पुरानं ॥
 १४ ॥ जाग्रं स्वपं रित्त्रिभुवने सतर्थे विभूजं स्ति
 क्त्तन् वज्रस्तव मण्ड भूत रूप मेतर् निलं
 स्मरामि शरणा वसरेपि चित्ते ॥ तमे प्रकाश
 मधि गच्छतु लोक नाथ ॥ १५ ॥ दुर्विरा
 बिरहयोगा लोभ मोहं धकारः ॥ पुचयति मि
 त बुद्ध्या चिन्तितं नाम येवं ॥ चरणा सरसि
 गातं ॥ भित्तिरेषा यस्वमे तदिह सुरैरेशत्रा
 हिमां लोक नाथ ॥ १६ ॥ हरति कलुषजा
 रं सज्जनानां मन्ता वि शतु सुख मसैसं
 सर्वदा सर्व नातं ॥ स्फुरतु हृदि हरिशबुह
 ना मेव्य भूत शरनद पर मात्म सावर्कचा
 दि रूपं ॥ १७ ॥ सुरनर दिती जेन्दे रवि
 तं प्राद पन्न परम पद निधानं किं पुन
 र्बराय हं ॥ तदपि तव गुराणा कीर्तिना सान

नोमे ॥ त्यजनु नव कदा चिल्लोक नाथ प्रति
 द ॥ १८ ॥ भक्त्या नमो तमागाः स्तव वररा
 तले ॥ संस्थिता यच देव ॥ नागा यक्षा मुनिव्हा
 दिवित नय वरा ॥ भूत वेताल संध्या सौम्यग्ग
 स्तथैव ॥ प्रमुदित हृदयाः सज्जनानां समन्ता
 र्भ भव्या न्यवै किं पासुर्वदर नुतिमिताः स
 र्वदा लोक नाथ ॥ १९ ॥ आनंद मुक्ताबलिना
 नकं हरिहर प्रनितं स्तवमावर विय ॥ तैभ्यो
 ददा प्रिय मेवः जन्म निमोक्षं परत्रै पिचना
 थः ॥ २० ॥ इति हरीहर विरचितं श्रीलोकनाथ
 स्प आनन्द मुक्ताबलि स्तव स्तोत्र समाप्त ॥

(६५) सौवर्णानागैन्दु मनुष्य सत्त्वैः

नमो लोक नाथाय ॥ ॥ सौवर्णानागैन्दु म
 नुष्य सत्त्वैः ॥ त्वं वैत्रके नित्य सर्वनाय ॥ शाल्पा
 दि धान्यं भुक्तिं प्रपतः ॥ तं नो मिलाकैश्चर्या
 द पदं ॥ १ ॥ सहस्र सताब्द वर प्रदत्तं तं स
 त्रय शब्द महाशुखाथे ॥ वैमाद्य वेसेवन पुज
 नायः तनो मि ॥ २ ॥ शुक्रावधाने खलु बन्दनि
 या दुखाराविं पारग बोधि सत्व ॥ महानु संशं
 विध धेनु दत्तः तनो मि ॥ ३ ॥ भक्त्या शुचौ

प्रार्थन वन्दनाय सत्कीर्ण संजात कहेन दश ॥
 सुस्थाय ता सल यकाम राज तनौमि ॥ ४ ॥
 शुक्ल भस्मित रतार दोबै; सश्रावने सत्पठ तो
 व निय ॥ प्रारणार्थ मेबं कृत कर्म नियं; तनौमि०
 ॥ ५ ॥ सहाय नाषाहि सहश्र जिब देवालयो
 हसित तोषितोहि ॥ नमस्ते नित्य तवाश्रय
 राः तनौमि० ॥ ६ ॥ मेहेन्दु नांता समर
 तन पाता; होरात्र गाथा गुरा भारा निय ॥
 यता श्विने धर्म दशार थियः तनौमि० ॥ ७ ॥
 ॥ ५ ज्वालितो नद्यर पद्म रागः स्तेनो पचा
 रीतम पुष्पनीय ॥ सबाहु लोचै त्र मनो हरेयः
 तनौमि० ॥ ८ ॥ देवालय प्रामुदिता सुवाराः सां
 जोजिका सर्जक धुपनिय ॥ संताप नेस्व कु
 ल कोटि दोषिः तनौमि० ॥ ९ ॥ संप्राप्य के प्र
 ज्वलिता व दिपः त्रैकाय शुद्धौ न सुध्वक नि
 य ॥ सचक्र वर्ति नसू राज्य भुंजी; तनौमि०
 ॥ १० ॥ बैमाद्य केचः धूमरा प्रभादो पुमेय
 शे सोभित दिव्ययोग ॥ संयुक्त गन्धालि
 लक प्रहीयः तनौमि० ॥ ११ ॥ तपस्स के स
 त्व शुखो दयश्चः नैबैध पंचामृत दीपनिय ॥

सहस्र कन्या नृपति प्रदाताः तनौमि० ॥ १२ ॥
 व्यगोचर किं तव वरी नियं; को भाव नियं खलुरप
 दर्श ॥ स्वाचित संबोधन काम हेतोः सत्स्माद्विगं
 भीर्य बलोक नाथ ॥ १३ ॥ मासाष्टमि पवन बारि
 तं; ये पुज यंति तव पुष्प केन ॥ सवार्थ मोक्षा अय
 सौ फलेन; तेनैव लोक सुशुभं भवन्तु ॥ १४ ॥ बै
 दादश मासि फल प्रशंस्य; मुषोष धा दुद्ध तरो नु
 भावा ॥ लिला सुबजा; दमिदं प्रबक्ष शीवीधि
 सत्व स्प गुरो तन स्प ॥ १५ ॥ इति श्री मदाय्याव
 लौकितेश्वर भट्टारक स्य द्वादश मासि फला
 नुसं सास्तोत्र समाप्त ॥ . ॥ . ॥ . ॥

(६१) जवाकुसुम संकासं
 नमो नव ग्रहाय ॥ ॥ जवाकुसुम संकासं
 कर स्वपेय महाद्यति ॥ सर्व पाप विघ्न हं
 प्रणामाभि दिवाकर ॥ ॥ ॥ यधि संख
 तुसालाभ क्षीरो दान बैसंभवं ॥ नमामि
 शक्ति नंदेवः शं भोर्म कृत भूषण ॥ सो ॥
 धर राणा गर्भ संभुतः विद्युते जस्सम प्रभ ॥
 कुमारं शक्ति दस्तं च; अंगारं प्रणा
 माम्पदं ॥ ॥ ॥ पृथग्गुकरिका श्यामं ;

रूपेना प्रतिम बुद्ध ॥ सोम्या सर्व गुरोपे
तः नमामि शशिनं स्तुत ॥ बु ॥ देवानां च
भूषिणा चः गुरुकांचन सुनिर्भ ॥ ब्रह्मा मु
र्ति गीलो के शंः पुरा माभि बृहस्पति ॥ वृ ॥
हिमकुंद मृदाराभंः देवानां परमं गुरु ॥ स
ब्रह्मास्त्र प्रवर्तनंः भार्गवं पुरा माभि हं ॥
सु ॥ नीरांजन निर्भंदेवंः रविपुत्रं महाग्रहं ॥
द्यायायोग देवं भूतंः बन्दे भक्त्या सनिश्चरं ॥
श ॥ अर्द्धकायं महाविष्य चन्द्रा दित्य प्रमोदकं
॥ सहिष्णो दर संजातंः राहु नित्य नमाम्यहं ॥
रा ॥ पुरा सु चर्म संकाशंः ताराग्रहः विमर्दनं ॥
रुद्र रोद्रात्मकं घोरंः त्वां केतु प्र नमामिह ॥
के ॥ शुभां भोरु हसंकाशं सर्व देव नमस्कृ
तंः सं विष्य जन्मकालेषुः जन्म देव नमाम्य
हं ॥ ज ॥ व्यास्ये नोक्तं मिदं स्तोत्रंः प्रतस्तु
तथाय यपथेत् ॥ दिवा चायः स्व दिवा
चाय दिवा रात्रौः सिद्धिस्तु न संशय
त ॥ ११ ॥ ऐ स्वर्ग मत्तुल तेजः प्रालोप्य
पुष्टि वर्धनं ॥ नरनारि रूपानाश्चः प्री
यन्तु स्वप्न नासन ॥ १२ ॥ दस्प कोमी

यमो बापि ये चान्ते रोग पि दिवा ॥ ते सर्वे
विरयं यान्तिः व्यास बुधा न संसय ॥ १३ ॥
इति श्री नव ग्रहस्तोत्र समाप्त ॥ ॥ ॥

(६१) अमित रुचि शिरस्थः पद्म पत्रायता
नमो लोकनाथाय ॥ ॥ अमित रुचि शिरस्थः प
द्म पत्रायता १०० दुरित कृत विनाशः मोहमा
या हिताक्ष ॥ करधृत कनकाक्षं लोक पालो
क दक्षः पुरा मित शिरसा हं नौ मितं लोकनाथं
॥ १ ॥ अरुणा वदन शोभं बोधि विज्ञान देवः म
रिग मय मुकुत संसारका ~~मोहिम~~ मोहिस्थ
तुः मन सिज कृत नाशः बोधिसत्ता दि केतुः प्र
रामि ॥ २ ॥ सर सिज कृत वासं दुर कर्षण
संः सुरनर वनु जाशः पुरा वन्द्य उकाशः सुकि
त जन बिलाशः कोति सूर्य वभाशः पुरामि ॥
॥ ३ ॥ उरसि विहित नागं मोचिता शेष सुगं भ
व जल धि बि भागं मोक्ष सौख्यैक मार्ग ॥ प्रत
पित कनकागं बोधि बोधैक रागंः प्रशान्ति
॥ ४ ॥ जिनवर स्तुत राज मीकि माला विराजः
सुलालित कराराजः किरिता च भिलाज
प्रमुदित बलिराजः पालिता मत्पूराजः प्ररामि

॥ ५ ॥ धृत मधुकर रूपं: श्रुतिपासात्तकृपं:
 सिंहनादप्रभं सुचरितहयरूपं: सिंहलादात्त
 भुपं: अगुरुसुर मिथुपं धारिता शेष रूपं:
 प्रणामि ॥ ६ ॥ त्रिविधविधृत पापं: मेहरूपं
 तु पापं: प्रतिदिन मितिजापं: देवचक्रे विलापं: नि
 रय भयकलापं भेदयो ज्ञानचापं: अबहितकृतीवि
 लाप मांकुपा राजपाप ॥ ७ ॥ बिहित शुभजनानां
 मुक्तितापे द्युतानां: बिगलित कलुषाना भक्ति
 पुजारतानां: वरकुसल समुहं संप्रमोदे स्वभ
 क्त्या: अवहि ॥ ८ ॥ पुनर सुगतरत्नं धर्म
 काय ससंध: शरणा मिहब्रजामि: कारिता न
 गभगं प्रमुदित मनसाहं: बोधिलाभैकयन्न अ
 वहि ॥ ९ ॥ दशबल कृत सिद्धि संधे बुद्धबोधे
 जनन भरणा भित्तौ मार पाशा भिनितो: मनसि
 मलि वृत्ते पुर याज्ञा नान्विते: अवहि ॥ १० ॥ श्री
 लोक नार्थ चरणांबुज भक्ति पदं: पीपुषनन्द
 रचितान विस्तराद्यं: सप्ता विधार्चन युता दुरसा
 ति हृद्यं: सौखावतिगमन मार्ग कमस्तु संधं: ॥
 ११ ॥ स्तुत्वा पञ्चधरं गुरुमुनिवरं: सर्वार्थसि
 धि पदं: पुरापं यत्नमुपाजित ब्रजतुतत्पुत्रा

नसौखावति: श्रीलोकेश्वर पादपंकज रसोल्ला
 से कहवेदितां: लोक: केशबलं सुदुर्जयबलं
 जित्वा प्रमुक्तामलं ॥ ११ ॥ शक्तिश्रीम
 दाय्या वलो कितेश्वर भट्टारकस्य सप्तविधा
 नुत्तर पुजा स्तोत्र समाप्त ॥ ५ ॥ ॥ ॥

(६) मोक्ष पद्म भवापञ्च:

नमो लोक नाथाय ॥ ॥ मोक्षपद्म भवा
 पञ्च पञ्च पारिता भयंहर: चक्र पीशा भय
 मोरव्य: पञ्च पानि नमोस्तुते ॥ ५ ॥ दान
 सौम्य प्राभा दान: पञ्च शोम्य पनाराकं
 ॥ सुरआस्य देव पञ्च: पञ्चपा ॥ २ ॥ पालिजा
 त पभा जात: रक्त बर्रा पारिजात ॥ दिनभूम
 सनदेव: पञ्चपा ॥ ३ ॥ बिन्धे नारा यनं देव
 लोकेश्वर देव मुर्ति ॥ पञ्च बर्रा लोकेश्वर:
 पञ्चपा ॥ ४ ॥ करारिया मंडल भूमि: चन्द्र
 मण्डलनं देव ॥ सान्तिपुलि प्रभा यज्ञो: पञ्च
 पा ॥ ५ ॥ ध्वज छत्र पताकादि: सान्तभार
 सनापञ्च ॥ नील बर्रा समदेव: पञ्चपा ॥
 ६ ॥ पञ्चकन पंच करार: शुर मान लवेन्तर ॥
 पंच वन देओ कंन्या: पञ्चपा ॥ ७ ॥ शोक पंच

देव मुर्तिः सा च मानमिना देव ॥ अमिताभ
किलो सूर्यः पद्मपाणिनमोस्तुते ॥ ७ ॥ इति
श्री मदाय्यावलोकितेश्वर भट्टारकस्य वन्द्य
प्रभास्तव स्तोत्र समाप्त ॥ ॥ ॥ ॥

(६४) ओंकारं परमं विजं:

नमो लोकाधाय ॥ ॥ ओंकारं परमं विजं
सर्वरक्षाकरं परं ॥ वकाराकार संयोगाः ओं
काराय नमो नमः ॥ १ ॥ मकारं मानसं विजं
महासत्त्ववरप्रदं ॥ महारक्षाकरं नृणां म
काराय नमो नमः ॥ २ ॥ शिवाकारं तथीयते मो
क्षं; नित्यानित्यविचारनात् ॥ निःशेषपाप
नासाय; शिवाकाराय नमो नमः ॥ ३ ॥ पकारं पं
कजाकारं; परमार्थवदं परं ॥ परमं पदमं पु
राणं; पकाराय नमो नमः ॥ ४ ॥ झेकारं मेरुं बुद्धेः
मेरुमण्डलसंस्थितं स्थीत्रैः ॥ महाभयप्रणाशा
य; झेकाराय नमो नमः ॥ ५ ॥ हूंकारं सिद्धि
दातरं; हूंकाराग्निनाशकः ॥ हुयते होमसंस्थे
र्यत्; हुंकाराय नमो नमः ॥ ६ ॥ पठक्षर
महावीजं; मन्त्रराजात्मकं शुभं ॥ षट्त्रभिज्ञषका
राय; नमामि षट्क्षरि ॥ ७ ॥ वदभिपारमि

ताश्च; षडायतनसंज्ञके ॥ समापन्नं खधा
तुष्टं; नमामितं षट्क्षरि ॥ ८ ॥ षट्कामावच
राद्यैस्तैः खधातुष्टं नमस्कृतं ॥ षट्क्षरि
समाधाय; नमामितं षट्क्षरि ॥ ९ ॥ पंक्त्या
सनमासीनः पद्मापर्यङ्कमुत्तमं ॥ सरदिन्दु
समानार्थः नमामितं षट्क्षरि ॥ १० ॥ प्रदक्षि
णो न हस्तेन; जपमालधरं विभ्रं ॥ वामेनां
बुजमाधाय; नमामितं षट्क्षरि ॥ ११ ॥ हृदि कु
तंजलिपुतं; विभ्राणां जनदक्षिणे ॥ द्वाभ्यामकारा
भ्यासततं नमामितं षट्क्षरि ॥ १२ ॥ असंख्य
घातसंभुद्धा; श्रितराजितमस्तकं ॥ लोका
वने महादक्षा; नमामितं षट्क्षरि ॥ १३ ॥ साय्या
भृकुति ताराभ्यां; वामदक्षिणतो वृता ॥ करुराग
मयदेवेसं; नमामितं षट्क्षरि ॥ १४ ॥ लोकनाथं
विश्वरूपं; भुक्तिमुक्तिप्रदायकं ॥ विधपर्यते श्व
रे पुज्यं; नमामितं षट्क्षरि ॥ १५ ॥ षट्क्षरिद्वि
यत्पीयूषानन्दं निर्मिता ॥ सपठन्ति मुदा भक्ता
ते यायुस्तां सुखावतिं ॥ १६ ॥ इति श्री षट्क्षरि
लोके श्वर भट्टारकस्य षट्क्षरि स्तोत्र समाप्त ॥

१०४ (६५) त्वन्नामोषधवर्धरा

नमो लोकनाथाय ॥ ॥ त्वन्नामोषधवर्धरा;
बलीनोबपवामम ॥ निबेद्याः श्रीमहेशानामायो
जयस्वबाहने ॥ १ ॥ सहस्रबदेनः शेषः सशेषं
बहुमिश्वरं ॥ नतुष्टप्रमुखसौहं; मौनभक्तिग
रियीसि ॥ २ ॥ योसौमद्विजिताक्षरः सयनबहि
निकृतः ॥ महिमस्तबनाशकः विष्णुतुशामु
पाययौ ॥ ३ ॥ स्वापराधिनिमद्वेहः कायवान्
चित्तसंचितः ॥ समस्वजपतोनाथः नाथबार्ह
स्मिसाप्रतं ॥ ४ ॥ मेतयस्तुष्टआयासिः रक्षा
भुदुष्टपक्षिराः ॥ सर्वस्वरक्षकस्वामः अहोमहन्म
नोमह ॥ ५ ॥ कायनमनसाबन्वाः प्रणामेन
त्पप्रस्तुमे ॥ नजानाम्पर्वणविधिः नचविधिः
कृताञ्जलि ॥ ६ ॥ इति श्रीस्वयंभुपुरारो
तक्षकनागकृतं श्रीलोकेश्वरस्तोत्रसमाप्तं ॥

(६७) सुखावतिसमागतः

नमो गोकरोश्वराय ॥ ॥ सुखावतिसमा
गतः स्वभक्तवत्सपलने ॥ स्वयंभुवंमहाविभ्रं
नमामिबोधिसत्त्वकं ॥ १ ॥ सरश्वतिवतितटे
समुज्ज्वलत्सुलिंगक ॥ अनंतगंजसंज्ञकं बली
कितेश्वरं शया ॥ २ ॥ समस्तपापखराडनं

१०५

सुरादिलोकवर्धनं ॥ शशांकचुडमंडनः विले
पितांगचन्दनं ॥ ३ ॥ अनादिबुद्धनन्दनः वि
ष्वादिबुद्धभूषणं ॥ कृताभीषेकरंजनः नमा
मिभक्तनन्दनं ॥ ४ ॥ वराक्षपाशिरापंकजः
विद्योतकामपंकजः ॥ प्रपादितार्थरंजनः वि
नासिताय शंकजं ॥ ५ ॥ सुवर्गसारसासनं
रत्नादिगावभासनं ॥ नमामितं महेश्वरं
महेशविष्णुकाचितं ॥ ६ ॥ पठन्ति पञ्च
चामरं विष्णुशिवो विनिर्मितं ॥ वृषाद्यकरिर्विश्व
राः प्रतप्तशुद्धमानस ॥ ७ ॥ सपित्रलोक
मुधरनुसुरववतिमुपासयन् ॥ सलोकना
थमर्चयन् जिनेन्द्रपादसेवकं ॥ ८ ॥ प्र
दक्षिरांससार्चनं निजपुरं समाविशत् ॥
सदाबलौकितेश्वरः भजेनप्रालयत्पजां
॥ ९ ॥ इति श्रीस्वयंभुपुरारापगोकुरा
कृतं गोकरोश्वरस्तोत्रसमाप्तं ॥ ॥

(६७) नौमिसमन्तसुभद्रः

नमः कीलेश्वराय ॥ ॥ नौमिसमन्तसुभद्रं
रुद्रमुखा मरबंयं ॥ हृद्यपदाबलिगम्यः नौमि
पदां बुजयुग्मं ॥ १ ॥ मादृषरक्षरापार्तउत्पलसंदू

१०५

शपातं ॥ ५ ॥ स्वमहानल कर्षाः लोकसेदो बन्धनं
 ॥ १ ॥ मञ्जुकुमार वरिष्ठः सर्वभूषणदिगडरिष्ठं ॥
 सङ्गतिलोक् हृदिस्थः कारुण्यपुर्बजबिष्ठ ॥ ३ ॥
 बुद्धविराजित इरिष्यः शुद्धसमस्त हृषीकं ॥ चारु
 गिरीकृतवासः कीलवातिबिलाशं ॥ ४ ॥ पारमि
 तानवपारं ब्रह्मविहारसुसारं ॥ ५ ॥ कृतपर्वतदारुणः
 निजितदुज्जयमानं ॥ ५ ॥ ज्ञानप्रकाशनसूर्यः सा
 मरबादिततूर्यं ॥ सर्वजाधितधूर्यः दुःखमिमो
 चनसूर्यं ॥ ६ ॥ लक्ष्मणसुन्दरं गात्रं श्रीघन
 सन्धरासास्त्रं ॥ मंगलधर्मसुपात्रं विघ्नविदा
 रणदारुणं ॥ ७ ॥ कायबन्धो मतिपापः नाशायमह्य
 तितापं ॥ सत्वविवोधिततत्वं नत्वदृते सुकृतिर्त्वं
 ॥ ८ ॥ त्वं प्रणामस्मिन्निन्दुः नौमिसुभुक्प्र
 शीन्दुं ॥ यस्तुतिमाचरः तीर्मा तस्य समस्तसुभद्रं
 ॥ ९ ॥ तुष्यतिदास्पतिचार्यः यास्पतियतनबुद्ध
 ॥ सन्निधिभाजपिबुद्धे पुनरावृत्तिनिवृत्तं ॥ १०
 ॥ इति श्रीस्वयंभूपुराण क्लीकनागकृत
 कीलेश्वरस्तोत्रसमाप्त ॥ ॥ ॥ ॥

(६६) नौमिमहाब्रह्मधरः बादिघगठ
 नमः श्रीकृष्णश्चरितरागाय ॥ ॥ नौमिमहा

१०७

ब्रह्मधरः बादिघगठ ललितं ॥ डामरुशुलो ज्वलि
 तः मालिकभूषो ललितं ॥ १ ॥ स्वर्णकिरीट
 स्थजिनः कस्मविलेपांगवर ॥ चक्रसुमुद्राकू
 लितः द्वीपिषूचर्मविरितं ॥ २ ॥ शृङ्गलकल्पा
 दुरितः भीषरा मुर्त्यानिचितं ॥ हास्यविलासा
 रसितं पात्रसुधासतुपित ॥ ३ ॥ भक्तजना
 शारसिकः स्वधकृताश्रयकं ॥ पादिसदात्वं
 सकलं रागमदाश्रयिकर ॥ ४ ॥ ब्रह्मविलासा
 सहितः योगिनिजालाविरितं ॥ भोगिगरालं
 करणः योगिजना नावरणं ॥ ५ ॥ यत्कुलि
 शं ब्रह्मभयः कोटिद्वारः सृशुभेति ॥ रत्नचयं य
 द्गलितं तं परामाभि शसर्वं ॥ ६ ॥ यत्करधं
 ठानिनदोः कं पय देवं भुवनं ॥ मरुचमुत्राशप
 दांस्तं परामाभि शसर्वं ॥ ७ ॥ यज्जपमाला
 गलिकाः विदूदिवासो ज्वलिकां ॥ यत्सु सतर्प
 णि धिनिकां सां परामाभि शसर्वं ॥ ८ ॥
 यन्मुवुताक्षो भयजिनस्तत्रमपारससृजे ॥ सं
 पदासारात्रतलेः तं परामाभि शसर्वं ॥ ९ ॥
 तत्रमिदयः प्रठिता योगवरसंभविता ॥

दूर्गम मोक्षं गमितं काममवाप्ताशुसु
धि ॥ १० ॥ इति श्रीकुम्भेश्वरविरागस्तो
त्र समाप्त ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

(१०९) बालविश्रुषित बालमृगांक

नमः श्रीफरिा के स्वराय ॥ ॥ बालविश्रु
षित बालमृगांक; त्रिशरा मंडित भालपदेशं
॥ शारद चार्वरा चन्द्र प्रकाशः तं प्रमामि सदा
फनिकेशं ॥ १ ॥ हातक पंकज सुन्दर हस्तः
दान समुद्यमलं बित हस्तं ॥ ते भव जापितः ना
म पशस्तं ॥ ते भव जापित नाम पशस्तं तं प्र
मामि सदा फरिा केश ॥ २ ॥ प्रेषित सौगत
भक्त समस्तं हृक्म समुज्ज्वल सारस सस्थं ॥ बी
द्युदि बोजोल हार गलस्थं; तं प्रमामि सदा फ
रिा केशं ॥ ३ ॥ सर्व निवारण विष्कम्भि संशं
पंच जिनेन्दु किरिट विराजं ॥ बांछित धि पद
कर राग द्यौं तं प्रमामि सदा फरिा केशं ॥ ४ ॥
दुःखमहोदधि तारण सेतुः दुर्गति मोचन सौग
ति देतुं ॥ करी सुकुराडल प्रोज्ज्वल रत्नं तं प्रम
मामि सदा फनिकेशं ॥ ५ ॥ यः पठति श्वर
पंच प्रकथं; सोष्ठ क सिद्धि मवाप्स्य महेशं ॥

जन्म जरांश्च मृत्यु मत्तोर्मि तारिप ता भव तीप
भीक्ष्णं ॥ ६ ॥ इति श्री श्रीदिया चार्य कृत
फनिकेश्वर स्तोत्रं समाप्तं ॥ ॥ ॥

(११०) गजवन्दति मुसर

गरुडपति देवराय ॥ ॥ गजवन्दति मुसर
वाहात मुटलाय दुमि धारितं सर्व विघ्नी
हरण देव नमोस्तुते ॥ १ ॥ कुन्जोल
वदन चतुर भुज अक्षमर धराजिता
स्थित वरी पर श्रीरानी रोचन गरुडपति
देव नमोस्तुते ॥ २ ॥ इति गरुडपति गीत ॥ ॥

(१११) रार पैदु मन्त्रव कलंकल

राग वसन्त ॥ ॥ मार मान ॥ ॥ राट पैद
मन्त्रव कलंकल कमल विराज सतकोति
रवि स दह विराजं श्री जयलोक नाथं स्या
नाथतु ॥ १ ॥ तव नन्द रुचि दस्त सन्त नक्षत्र
राज तवप्पा दल वास फुल सुभिन्न सुख
राजं ॥ २ ॥ तव मुख दर्शन पाप नाशतं
तव नाम सुमरत सुखावति गमतं ॥ ३ ॥
त्वय मुक्ति भुव जत कृत प्रति नम्र यीजित
गुरावज क्षात अपाव ॥ ४ ॥ रसुरा अस-

रत जन पुज इक्ष पादा विरिञ्ची हरिहर
इन्दु भुगुरां विवादा ॥ ५ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

(७३). चन्द्र नमलिमल कर्पूर
राग ललित ॥ ॥ ताल माय ॥ चन्द्र पलि
मल कर्पूर कुकुम नात्रि सिरादिमं ज्ञाता
कुधवरन चम्पक केतकि पञ्चपदार्थ पुजितां
॥ १ ॥ देव श्रीलोकस्वर पुजित प्रमदित मनो
वाधिता सिद्धि देहि प्रसन्न ॥ २ ॥ १ ॥ १ ॥

(७४). प्रस्फुल पुष्प चन्द्र
राग ललित ॥ ॥ ताल माय ॥ प्रस्फुल
पुष्प चन्द्र माल धारि युवाति जोरी रस
लोचन श्री विनीय चरण वासो गृहातो
प्रजासो विलासु रमोललितं प्रति सो ॥ १ ॥ १ ॥

(७५). वद्धराते घार हीनु
राग वसन्त ॥ ॥ ताल माय ॥ ॥ वद्धयाते
घार रिनु वसु सागर सैजुत मार्ग
मास सित पक्ष अष्टमी तिथि सैजुत
मृग सिर विष्णु अतना कुम्ह ससि
विष तथा मिनेर विवाटे श्री मधिरु
नाम्य प्रति दत्त चुदा मरिग सुवर्ण पत्र

रललित स कम्पित कन्दु पङ्क्त नित्य
विद्याले साति गरा धिपति प्रजा प्रति
पाल श्री तिवास मल्लप्रिति जगत
प्रख्यात मृगावति देवी पति पुष्पांति
नाहो यथा दृष्ट तथा कृपा भक्षणा पुष्ट
विलि चितारायण पालव त्यादि नृप
गत ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

(७६). नेपाल वद्धल भुज सागर
राग वसन्त ॥ ॥ ताल माय ॥ ॥ नेपाल
वद्धल भुज सागर हुरगे माधवमा
दाशित विरिञ्ची तिथी लिखा सलवनां
सुर वर्ण निमित्त द्याति दत्त कुशुम माला
र हना ॥ १ ॥ दात प्रति शीललिता पुष्टी
त्रिप श्री सिद्धी नर सिद्ध मल्लदेव ॥ २ ॥
पतगति सिसारोद धारण दाता पाद
पङ्कज युगे नोमि सिरसा श्री कुमलोके-
धर जित सुमंगल ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

(७७):

राग मालार ॥ ॥ ताल २ ॥ ॥ स्त्री
सत सम मुख तेज विराज अम्बुज रोचन

१०२

१२२

सम स्वन्नित तेज श्री परमेश्वर अष्टरूप
॥१॥ कटधर पदमे सुन्दर तेज धन्यमहि
कटशा मयजे नटका दुधर मोक्ष पद साले
रिपु ह ग्रहात मुज उधाले ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥

(७८).

राग नाटक ॥ ॥ ताल दुर्जमान ॥ ॥ नेपाल
मण्डल कमल सैयुक्त अनुपम कमल अत्रय
प्रदाता ~~वाम कमल जुत अत्रय प्रदाता~~
~~रत्न मणी कुन्दल करी स्वभाव नाता रत्न~~
~~मणी हेरवज सहिता ॥१॥ नमामि श्री लोक~~
नाथ श्री भुवनेश्वर ॥१॥ दहित कमल
पम वल प्रदाता वाम कमल जुत अत्रय
प्रदाता ॥२॥ रत्न मणी कुन्दल करी
स्वभाव नाता रत्न मणि हेरवज सहिता
॥३॥ मणि मन्दल प्रजापति पाल श्री
योग नरेन्द्र मल्ल देव सहिता ॥ ११ ॥ ११ ॥

मानदात सुवत दासया संकलनं
भाषा सकृ-कृषियात उपहार !

॥

1934 CALENDAR 1934

January					February					March								
S	...	7	14	21	28	...	...	4	11	18	25	...	...	4	11	18	25	...
M	1	8	15	22	29	...	...	5	12	19	26	...	...	5	12	19	26	...
T	2	9	16	23	30	...	...	6	13	20	27	...	...	6	13	20	27	...
W	3	10	17	24	31	...	...	7	14	21	28	...	...	7	14	21	28	...
T	4	11	18	25	...	...	1	8	15	22	...	...	1	8	15	22	29	...
F	5	12	19	26	...	...	2	9	16	23	...	...	2	9	16	23	30	...
S	6	13	20	27	...	...	3	10	17	24	...	...	3	10	17	24	31	...
April					May					June								
S	1	8	15	22	29	...	...	6	13	20	27	...	...	3	10	17	24	...
M	2	9	16	23	30	...	...	7	14	21	28	...	...	4	11	18	25	...
T	3	10	17	24	...	...	1	8	15	22	29	...	...	5	12	19	26	...
W	4	11	18	25	...	...	2	9	16	23	30	...	...	6	13	20	27	...
T	5	12	19	26	...	...	3	10	17	24	31	...	...	7	14	21	28	...
F	6	13	20	27	...	...	4	11	18	25	...	...	1	8	14	22	29	...
S	7	14	21	28	...	...	5	12	19	26	...	...	2	9	16	23	30	...
July					August					September								
S	1	8	15	22	29	...	...	5	12	19	26	...	...	2	9	16	23	30
M	2	9	16	23	30	...	...	6	13	20	27	...	...	3	10	17	24	...
T	3	10	17	24	31	...	...	7	14	21	28	...	...	4	11	18	25	...
W	4	11	18	25	...	...	1	8	15	22	29	...	...	5	12	19	26	...
T	5	12	19	26	...	...	2	9	16	23	30	...	...	6	13	20	27	...
F	6	13	20	27	...	...	3	10	17	24	31	...	...	7	14	21	28	...
S	7	14	21	28	...	...	4	11	18	25	...	...	1	8	15	22	29	...
October					November					December								
S	...	7	14	21	28	...	...	4	11	18	25	...	...	2	9	16	23	30
M	1	8	15	22	29	...	...	5	12	19	26	...	...	3	10	17	24	31
T	2	9	16	23	30	...	...	6	13	20	27	...	...	4	11	18	25	...
W	3	10	17	24	31	...	...	7	14	21	28	...	...	5	12	19	26	...
T	4	11	18	25	...	...	1	8	15	22	29	...	...	6	13	20	27	...
F	5	12	19	26	...	...	2	9	16	23	30	...	...	7	14	21	28	...
S	6	13	20	27	...	...	3	10	17	24	...	...	1	8	15	22	29	...

SWAN DIARY

~~SWAN~~ ~~Diary~~

No. 2.

जिनेन्द्र दास गुलाशन



असन्तुल

काठमाडौं

नेपाल.

०
नं ३

Name _____

Class _____

Subject _____

मानदास सुगत दासया संकलनं ३
भाषा सफु-कुथियात उपहार !

	पृ	पृ
(१) ५ ति मंजु श्री नेपाल संधि ॥ १३ ॥	१	१
(२) ग्व पुछं पर्वत सहित ॥ ॥ ५ ॥	२	२
(३) आदि ५ भय भुपति देवा ॥ ॥ २५ ॥	३	३
(४) मंजु श्री कृत रम्प पर्वत ॥ १९ ॥	६	६
(५) अतसिक् सुम संधास देहा ॥ ७ ॥	११	११
(६) श्री धर्म धातु चैत्य जिन बल ॥ २२ ॥	१२	१२
(७) वंकारं वज्र सत्वं च वजासन ॥ ७ ॥	१५	१५
(८) कमल विकसित धर्म धातु ॥ ८ ॥	१६	१६
(९) जातिवो धिं पवर मतुर धर्म ॥ ५ ॥	१७	१७
(१०) कालि हृद समुद्र भव सुगत स्वयं ॥ ५ ॥	१८	१८
(११) कमल विकसित धर्म धातु ॥ ८ ॥	१९	१९
(१२) उद्या गिरि गलम मर मुनि ॥ ७ ॥	२०	२०
(१३) सिंहा सने स्थिति मर्त गिरुणा ॥ ६ ॥	२१	२१
(१४) विरव क्रम स्तोत्र ॥ राडा धर ० ॥ ० ॥	२३	२३
(१५) मंजु श्री लोक नाथ जिनवर ॥ ८ ॥	२५	२५
(१६) नमस्ते बुद्ध रूपाय धर्म रूपाय ॥ १४ ॥	२८	२८
(१७) ओंकारोत्पत्ता ॥ ॥ ॥ ११ ॥	२९	२९
(१८) नमामि मज्जु नाथाय त्रैलोक्य ॥ ११ ॥	३०	३०
(१९) कारिज देश मुनवं ॥ ॥ ॥ ५ ॥	३२	३२
(२०) लफल देवताया स्तोत्र ॥ ॥ २५ ॥	३३	३३

- (२१) विवि कल्पे निरालम्बे ॥ ॥ ॥ ५ ॥ ३६
 (२२) जागत् कृत्य स्वयंभुव ॥ ॥ ५ ॥ ३६
 (२३) पुरा कला तिष्ठि सतिन ॥ ॥ ७ ॥ ३७
 (२४) श्री धर्म धातु महीस ॥ ॥ ४ ॥ ३८
 (२५) ज्ञात प्रजाता मम पातुनाय ॥ १३ ॥ ३९
 (२६) श्री मानाद्य स्वयंभु ॥ ॥ २५ ॥ ४०
 (२७) वैशेचन महा शुद्ध ॥ ॥ ५ ॥ ४१
 (२८) बद्ध चन्द्रा समासिन ॥ ॥ ५ ॥ ४२
 (२९) कुर्यान्दु पुष्प सैकासदेहा ॥ ७ ॥ ४३
 (३०) अष्ट फल कमला ॥ ॥ ८ ॥ ४४
 (३१) सर्व शुद्धवर ॥ ॥ ५ ॥ ४५
 (३२) बुद्ध रूप शाक्य सिंह ॥ ४ ॥ ४६

(५) उत्तिमंञ्जुशी नेपालं सं आदि

१ उं नमो बुद्धायः ॥ उत्तिमंञ्जुशी नेपाल
सं आदिः उभय स्थिर स्वयं भू चैत्य २ त्प-
तिस को तिदेव पुन मामि धर्म धातु जि
नालयं ॥ १ ॥ नमामि बुद्धं त्रैलोके नाथः
संकल जगत गुरु २ मामकि लोचनि-
पद्म निताबा पंचजिन धातु मंशला ॥
२ ॥ बुद्ध दशबल तव नित्यं पुन्यकाय गु-
नो दाधि लोभ मोह विषय काम सर्वदा
दित वाक् सिद्धि ॥ ३ ॥ पूर्व मुंशी इति
बाहून इन्दुनिल वरुण देहा २ अने देव
गरा माल निर्जित बजा सन श्री अ-
क्षो भ ॥ ४ ॥ दक्षिण मुख श्री तुरंग बा-
हून उदित सुवर्ण देहा २ विविधैरत्न सं-
पन्न दायक नमामि श्री रत्न सं भवा ॥
५ ॥ पश्चिम मुख श्री मयूर बाहून अदि-
त पद्म राग नैति देहा ॥ अमृताम्भक
रु राग मय सर्वलोक पति परिता ॥
६ ॥ उत्तर मुख श्री गरुड बाहून हरि-
वरुण देहा २ सप्त फणि स्वभाव श्री
अमोघ श्री सिद्धि गुण विद्या दायक

॥ ७ ॥ धर्म धातु म राडल मोहे. फति
क वरार् देहा २ सिंह बाहन ध्यान भुति
त्रैलो नाथ श्री बेलोचनं ॥ ८ ॥ बुद्ध २
सूमल नित्यं. क्षान्ति सपद्मराजितं २ जग
त पालित करुणामय सर्व देव गरा सिरो
मरिगा ॥ ९ ॥ धर्म दानव अचल निरति
भय सुरक्षा दिप संभ्वरं २ पाप नासय
बुद्ध सरनं. मुक्ति पर बर देहि मे ॥ १० ॥
नमोस्तु चैत्य थापन धर्म धातु रत्न
चैत्य ॥ बोदश दुवात द्वाविंस रक्षरा
संपुरा नव बंध धाने ॥ ११ ॥ विवि
धि रत्न बजु लेपन सुवर्ण मुख छत्र संपुरा ॥
जन्म कान्ति पाप हरनं. सफल भवन्तु अनु
तरं ॥ १२ ॥ देव मुनिरितु नेपाल बहला.
फाल्गुना कृष्ण सप्तमि ॥ चैत्य थापन जज्ञ
संपुरा आयु आरोग्य सम्पदे ॥ १३ ॥ इती
श्री चैत्य वंदना स्तोत्रो समाप्त ॥ -०- ॥

(२) ज्वपुष्प पर्वत ॥

नमो बुद्धायः ॥ • ॥ ज्वपुष्प पर्वत सल्लित
मूर्ध्नि पञ्चबुद्ध पञ्च ज्ञान स्वरूपं २ जाति

मय करुणामय रूपं ॥ संभु नाथ नम पाद
कमले ॥ १ ॥ चन्द्र सू वरार् सु. सूर्य सुतेज
ज्ञान सु बुद्धित. बोधि सत्वं २ पाद सुख दाने
नाथ ससंज्ञे ॥ संभु नाथ ॥ २ ॥ बुद्धा विष्णु
रुद्र महेश्वर देव. इन्द्र जम जक्ष वरुण
नै २ वायु अग्नी राक्षसि वन्दित पाद ॥ संभु
नाथ ॥ ३ ॥ सर्व तथागत बोधि सत्त्व भि
क्षु भिक्षु निमि पुजित पाद २ अग्नि सब
न्दित मानुज राजे ॥ संभु नाथ ॥ ४ ॥
वारिदु दुःख विनासन ती. नागल उदल
मोक्ष सुदाता २ मार्ग सुदेसक बोधित नाथं
॥ संभु नाथ म पाद कमले ॥ ५ ॥ इती श्री
स्वयं भु गित स्तोत्र समाप्त ॥ -०- ॥

(३) आदि उभय ॥

नमो रत्न त्रयाय ॥ नमो बुद्धायः ॥ आदि उभय
जननि प्रज्ञा पारमिता जिनं ॥ त्रिभुवन
भुपति देवा. पूग जुग नमोस्तुते ॥ १ ॥
हरीहर बुद्धा सत्कर. नाग जक्ष सुरासुर
॥ बहु विविधि उपहार न पूष्य मार
सुरोहनं ॥ २ ॥ पुनर्माभि महा बुद्ध ॥

पुजराय पुकारितं ॥ विं चैत्प ध्यानेस्व
 रि ॥ शुभ किर्ति नमोस्तुते ॥ ३ ॥ रय न
 चैत्प मद्य सोभा ॥ तेज वरी पुज्वलितं ॥
 ज्वति आलं कृत देहा ॥ पोता किर्ति नमो
 स्तुते ॥ ४ ॥ रत्न चैत्प मद्य सोभा ॥ तेज
 वरी पुकारितं ॥ पद्मगिरि स्वयं भूचैत्प
 ॥ ज्योतिरूप नमोस्तुते ॥ ५ ॥ जिनगन धू
 र्म धातु ॥ वागिश्वर पुसस्थितं ॥ पंचवरी
 पंच मुद्रा ॥ पंच बुद्ध नमोस्तुते ॥ ६ ॥ लो
 चनादि चतुर देवि ॥ तारागन सुप मुदिते ॥
 मैत्रि बोधि सत्व आदि ॥ सर्व देव नमोस्तुते ॥
 ७ ॥ हरि दन्ति आक्षि सिद्धि ॥ खड्ग रायदी
 र दृढ ॥ श्वेत नील वरी देहा ॥ स्पाम पंच
 नमोस्तुते ॥ ८ ॥ अष्ट दिग अष्ट चैत्प ॥ अ
 ष्ट बोधि पद दिन ॥ मेरु मंराऽऽप संस्थी
 त ॥ वर्ज सत्व नमोस्तुते ॥ ९ ॥ काली
 सर्प कृपितेन ॥ नेपाले भूवर थलं ॥
 धर्मा आत्मा मञ्जु शीन ॥ धौन्दीता
 भुवन छापिता ॥ १० ॥ धर्म भूमि गिरि
 गुहा ॥ बुद्ध ध्यान मानो हरं ॥ हेमवरी ध्या

नमुद्रा ॥ नागा जुग नमोस्तुते ॥ ११ ॥
 गी विपंस्वि ककुब्ध ॥ कनकमूनि सिद्धि
 राजितं ॥ विश्व भुकाश्च प श्री ॥ शाक्य
 सिंह नमोस्तुते ॥ १२ ॥ घोषिराना गी
 वरे ॥ वासितं सुगते स्वरि ॥ धर्म पाल म
 हाराय ॥ दसितं पद पापजं ॥ १३ ॥ धर्म
 गुप्त सर्व जन ॥ देह विकि किंन्याकृत ॥
 आर्य तारा बुद्ध सारनं ॥ तत्वसार मुक्ती
 द ॥ १४ ॥ जात मृत्यु चित्त गुप्त ॥ पाप पु
 न्य धर्माधिकं ॥ पुराण मार्ग चैत्प भ
 क्त ॥ सर्व पाप बिनासनं ॥ १५ ॥ गुर देश
 उपकारि ॥ धर्मा किति नेपालितं ॥ नै
 त्प थापित पाप चंदित ॥ मोदेव मोक्ष मु
 क्तिदं ॥ १६ ॥ सुखहारि माया जाल ॥
 धर्मा वाके सुजानिकं ॥ इह जन्म गते पु
 न्य ॥ वासुकि पाद पंकज ॥ १७ ॥ धर्मा
 चैत्प तेज यते ॥ कुध दुर्म प्रभेदितं ॥
 पुर्व जन्म फल पापं ॥ सर्वानन्द भुवने
 स्वरं ॥ १८ ॥ भुक्ति मुक्ति चित्त भिन्न ॥
 शुक्रास्मि धर्मा चतं ॥ विशुद्ध अ किति

वक्षा ॥ नागलाय मल प्रभ ॥ १९ ॥ कि
मितेन इह कर्म ॥ दारिद्र्य दुःख कारणां ॥ बु
द्ध धर्म महा मुनि ॥ सर्व दुःख विनाशनं ॥ २० ॥
सूचन्द्वा अचिन्त वेद ॥ किंपुन्य किं फले फ
लं ॥ सुद्ध चैतै सुभ काले ॥ कर्म लाभ
ल नाशनं ॥ २१ ॥ मे श्रजानि यते भवति ॥
सर्व दुःख ककारां ॥ जन्म जन्म सुमरे सु
॥ सर्व लक्ष्मी देपदं ॥ २२ ॥ जिन भक्त म
हा सोभा ॥ राग द्वेष विनाशनं ॥ सुमरेषु
सर्व पापं ॥ सुभ किर्ति नमोस्तुते ॥ २३ ॥
गन्ध धूप पुष्पा दीप ॥ पूजनाय प्रमोदि
तं ॥ स्वेत घृत प्रताप चामल ॥ लोह नाथ
नमोस्तुते ॥ २४ ॥ मूनिजन सुमरे नो ॥
वां छित सुफला फलं ॥ जिन गुण सुर आ
शा ॥ मोक्ष मार्ग संप्रापदं ॥ २५ ॥ इति श्री
इति श्री आर्य आदि बुद्ध गित तीव समाप्त

(४) मञ्जुश्री कृत ॥

ओं नमो श्री ३ स्वयं भूरूप मेहे स्वराय ॥ ॥
मञ्जुश्री कृत रम्प पर्वत विविध दर्प सु
दायकं सत्य मंत्रक युगवले पुरु पद्म पु

र्व गिरीश्वरं २ विमलतेता यान्त देव तु
वर्जकृतकं मय भूवं द्वापरे वसुदायके कलि
दायके गेसिंहकं ॥ १ ॥ ललितनाम विरं
कितं किर कलिजुगे गोपुष्टकं जन्त्र सि
द्धि नि ध्यान करन नन्द नाद विसुन्दरं
वकुलकुलवक्त्र कोकनन्द बुक्क चंका
दिभि सोभितं कासकेतकि पातरागुह
नागकेसर वासितं ॥ २ ॥ युधि मा रूति
कुंशकुंकुम मधुर मधुकर विक्कासितं म
ल्लिकासित कमलदानम पालिजात
समाकुलं २ विविध सौरभि रत्नमास्त
वीचके ध्व निपूरितं सकलदं पा वि
मुग्ध मधुकर गुंजितं दुम मंछितं ॥ ३ ॥
रकुचतालप लासकिं सुक्क कल्लिकाल
विभुषितं सरसासारव सारकैरव राक्क चं
न्दन राजितं २ शुगर गुंगुर तगर सरज
क खन्दीर सिप सोभितं दारिद्र्य त्रिभ पु
नस नागर विजपुर कपूरितं ॥ ४ ॥
कदारिवदरि जम्बुखर्जुनि दाक्षे यापि
त सोभितं नारिकेरक पीछ शीफ

ल. क्षीरिकादि भिरावितं. २ विश्ववै
 रक्त. लवचेकुर. नन्द कंराठ किंतायि
 कं. जीववन्धक. दीनतीदुल. किंतिरे
 त ररावितं ॥ ५ ॥ तत्ररत्नस. रौजतो
 भूमि. धर्म धातु समुद्र भवं. शाक्यसिं
 ह मूर्तिद्वन्द्वीत. मन्त्रमाद्य षडक्षरं ॥ च
 न्द्रकोति. सुसितल सिद्धि. सूर्यकोति सम
 प्रभं ॥ तंनमामि परात्परं पर स्वयं भू धर्म
 मयं विभू ॥ ६ ॥ स्थूल सूक्ष्मवि. दुरदुरक
 पर्व दीर्घ विधायकं. यक्ष राक्षस सुरेन्द्र हानव
 सिद्धि साध्य सुसेवितं २ कर्तिकारन. पाप
 मङ्गर. रूपिरेजम पारितं ॥ तंनमामि ॥
 ७ ॥ कर्मवन्धन. कासनासन. कर्मवन्ध
 न कारनं. रूपरूपक. भावभावक
 लिपु लेपक वज्रितं २ विश्वरूपनि. रूप
 निस्कल. सर्व कारन कारनं ॥ तंनमा
 मि ॥ ८ ॥ तंत्रजन्त्रक. मंत्रमन्त्रक. पु
 ष्य पुजक वज्रितं. तन्तुजन्तुक. मन्तु म
 न्तुक. पुष्य पुजक कारणा ॥ भृष्टि नाष्टि
 च्युतिकारन. जीव नारक कारन ॥ तंनमा

मि. ॥ ९ ॥ ध्यानरूप प्रसिद्ध मेकक. भ
 क्क जन्म. विवारितं. तत्वमोघ प्रसिद्ध विंति
 त. मीसमार सर्व जीतं २ देहसुन्यस देह
 देहज. देहदेह निवासितं ॥ तंनमामि ॥
 १० ॥ लोभ मोह प्रमुख वज्रितं. लोभमो
 ह कारनं. शानकारण. कार नात्मक. नाद
 विंदु विचिर्तित ॥ वराविजित. वरा वन्दित
 वरा भाव्य निरामयं ॥ तंनमामि ॥ ११ ॥
 त्रिगुन संभव. रज्जुवज्रित. तुष्यमार्य मम
 न्दित ॥ त्रिगुनकारमा. कार नातक मा
 धितं जन माधितं. आदिमध्य मकात त
 वज्रित. मोक्ष कारन निर्मलं ॥ तंनमा
 मि ॥ १२ ॥ रागरंगिस. मंगवज्रित. भाग
 मादिक वज्रित. रागरंगिम. संगकारन
 मंगिमादिकारण २ हसवाहन. पन्न
 गासन भाविनं ॥ तंनमामि ॥ १३ ॥
 भुमि जिवन. व्याश्र घासन. गंधवा
 हन वज्रितं. व्योमवज्रित. सर्व कारन.
 रूपरेष विवज्रितं ॥ भुक्ति मुक्ति. दु
 श्लेषकारन. नामधातु विनिर्जितं ॥ तं

नमामि ॥ १४ ॥ रवः दृष्टान्, रक्तवर्जितः
 मुक्तिदिककारणं, अस्ति नास्ति
 प्रमुरवचन, श्वेतरातृषितमोहनात् २.
 नित्यशुद्धनिःस्पृहसर्वगः सच्चिदानन्दमयः
 विशु ॥ तं नमामि ॥ १५ ॥ भवैव स्वर्गजितः
 शान्तो वैज्ञकः सौरदशनकारणं, सर्वकारण
 करणात्तकः रूपिनेन जनमानितं २ बुद्ध
 शेषवः योवनात्तकः वारादिव्यक्तसंभवं ॥
 तं नमामि ॥ १६ ॥ नेपालपप्रतापमल्ल
 निमित्तं किरनदभुतं, स्तोत्रमुक्तिमुक्त
 दानः संयुतं गुणवधनं २ विविधसिद्धि
 निः ध्यानभाजन, मुक्तमसुरदायकं सो
 खमोहविः नासकारणः मुक्तमुक्तिप्रद
 क्षिप्तं ॥ तं नमामि ॥ १७ ॥ नवसिमोहि
 विः धाय प्रोजलिः मुक्तिमार्गविनाशनकं
 पथतिजदिभूविः मालवप्रतिः वारसपति
 दायकं २ चित्तसपजः शेषदायकः स्वर्ग
 स्तोत्र सपुत्रदं कासकुलमगदरासुवि
 प्रमुरव्याघ्रनिवारणं ॥ तं नमामि ॥ १८ ॥
 नेपालसंगतेः स्मिन्नजिरिधुतेः श्रावने

शुक्रपक्षः, शुक्रवारे, प्रतिपदा, वादि
 पातयोगे, अश्लेषायां धर्मधातुः प्र
 तिविमलनिर्मिततोवराजं ॥ १९ ॥ इति
 श्री महाराजधिराजभुपकेसकावि
 न्द्रश्री जयप्रतापमल्लदेवविरचितं
 स्वयंभूभक्तारकल्पस्तोत्रसमाप्तं ॥ ॥
 शुभमस्तु सर्वदा ॥

(५) अतसिक् ॥

नमोबुद्धाय ॥ अतसिक् शुभः संकासदेहाः पु
 र्वमुखदिलदासनं २ कुलदागतविघ्नहितं
 ॥ नमो श्री अक्षोभ्यमुरीति ॥ १० ॥ सुगता
 सुमरनः महोरात्रः ॥ वलंतकृतनरलोकसं
 २ मोक्षवांछितमानसं स्वामिचरनस
 रत्नश्री ॥ सुगताः ॥ २ ॥ दक्षिणमुख
 शि रत्नसंभवः विभुवसंपददायकं २ ५
 दितसुवर्गासंकासदेहा नमामितुरं
 गवाहनं ॥ सुगताः ॥ ३ ॥ नवउदितरवि
 किरनदेहा जोगमुरतिधारीता २ मयु
 रवाहनसंस्थिता ॥ नमामि अमृता
 भवं ॥ सुगताः ॥ ४ ॥ सप्तफणिमयः

आलंकृता. हरितवर्णा विराजिता २ उत्तर
मुखशी अमोघसिद्धि ॥ नमामि गरुड
वाहनं ॥ सुगन्तः ॥ ५ ॥ इन्दुकुमुदुतिका
सदेहा. त्रिदश भुवपति पारिता २ सिंहवाह
न ध्यानमुरुति नमामि श्रीवैलोचनं ॥ ६
॥ गगनविन्दु कुमारवदनं. वदला श्रीनेपा
लिता २ गीतवाङ्मय. कुसुममाला ॥ न
मामि श्री धर्म धातु सरनं ॥ शुगन्त ॥ ७ ॥
इति श्री धर्म धातु गितोत्र समाप्त ॥ ० ॥

श्री धर्म धातु चैत्य (६)

ओम् नमः श्री धर्म धातवे ॥ ॥ श्री धर्म धातु
चैत्य जिनवल. वंदित पाद पंकजं. मासिद्धा
दश पुराणमासि भामिता परिमण्डित ॥
१ ॥ नमोस्तु २ पंचजिनवर. धर्मराज महाशुभे
२ येनमेव प्रदक्षि. नान्ते. पापरासि विषण्ण
तं ॥ २ ॥ चन्द्रमण्डलसू मध्य संस्थित चक्र
धारिमहाबलं २ सिंह मारुट राय मुनिबल
श्वेतवर्ण महोज्ज्वलं ॥ ३ ॥ प्राच्यादिगस्थित
इन्द्र निलसम दन्तिमहारुढ रायते २ रवस
म सम शुभे ध्यानधारित बुद्ध नाथ महा

मुनि ॥ ४ ॥ याम्पादिगस्थि रत्नसंभव द-
रिद्र लोचक संपारिता २ तुरंग मारुट कान्ता
नाभं वरद हस्त सूनिर्मितं ॥ ५ ॥ पश्चिम
दिगस्थित राय मुनिवर अमृत प्रभ जिनका
पिता २ मयुत मासन ध्यानधारित पद्मरा
ग मरिण प्रभं ॥ ६ ॥ उत्तर दिगस्थित. अ
मोघसिद्धि स्वामवर्ण. सूसोमिता २ गरुड
मासन अभय मुद्रा सर्व सत्त्व उधारणा ॥
७ ॥ श्री बज्र सत्त्व मेरु मण्डल बज्र घराठ सू
धारिता २ विश्वव्यापित जगतनाथ मानसे
श्वर वशिष्ठतं ॥ ८ ॥ जातिचं चक्र. मालति
वन मारति सूभ केतकि २ पारिजात कुमु
राड धवर. नागकैसर संयुक्तं ॥ ९ ॥ ना
भि शिरक कपुर कुंकुम चदनेन बिलो
पिता २ विविध पुष्प कमल उत्तर वि
नय संयुक्त व्यापिता ॥ १० ॥ वैना वंसा
मृदङ्ग मुरुजे संरवबाध मुसु मङ्गला ॥
लं भाव तासिलोत्तमा उच्च श्री भिपु दक्षणा
॥ ११ ॥ इन्द्र आदिलोक पालं अयासू म
मोरमा २ दुरीत बन्दीत देव चैत्य पुष्पा

रोहन मालिका ॥ १२ ॥ वृक्षा रेत स
 भ किरां. पुरी चतु सूनिमलां. देव मा
 नव यक्ष चिन्नर मार्ग लोक सूपुजिता
 ॥ १३ ॥ काय बाक चित्त निर्मल विनित बुद्ध
 गरा प्रदक्षरां २ श्वेत छत्र पुताप चामल. घ
 राठ वद्य मनोरथा ॥ १४ ॥ त्रयो दश भूमि
 छत्र चुक्रा बलि शोभितां समनो ज्ञकं. हरीहर
 बुद्धा पुरराडर. देव सरसूज पुजिता ॥ १५ ॥
 शुन्पाति शुन्प महा शुन्प शर्व शुन्प निरैजवं
 निलालंब निलाकालं बाचा सिद्धिमनोमयं
 ॥ १६ ॥ श्री स्वयंभू ^{धर्मधारु} जातिरुप पुक्का सिता २
 देवातिदेव महादेव सर्व देव सूपुजिता ॥
 १७ ॥ शैरबेपु महानरके. पंच तेनक जन्मसू
 पूर्वजन्म कृतं पूनजन्म स्वयंभूका जन्म प्रा
 पिता ॥ १८ ॥ शुद्ध मृत्ति भवतु भवतु
 य मुक्तिदं २ चैत्य गर्भ महा सर सि. मेव
 काभि पदक्षरां ॥ १९ ॥ सप्तस्पं ^{वृक्ष} न
 म रवारीडत राज कन्या सुरंभते २ किंकि
 नामा महाराय स्वयंभू जन्म तपोवनं ॥
 २० ॥ राव सवन शमल हालित. बुद्ध श

रा सूरंगला २ चैत्य अर्चनकाल चर्कि
 सिद्धिं भाव सूरुकी ॥ २१ ॥ दारी
 व निय सत्वमज्ज उर्ध्व तत्व महा मुनि
 सटो रात्र प्रदक्षि नान्ते सूरुवा ^{वति} सम
 प्राप्नुया ॥ २२ ॥ इतीश्री धर्म धातुवै
 त्प बरान्कि स्ता गित समाप्त ॥ ॥

(७) वंकारं वज्र सत्व

नमोवुद्धाय ॥ ॥ वंकारं वज्र सत्वं
 च वज्रासन सदास्थितं ॥ वारुणामराड
 लब्धापि बैलौचन नमोस्तुते ॥ १ ॥ अ
 कार मादिस्वभावं आकशे व्यापितं तथा
 ॥ अर्क निलशम तेजं अक्षोभ्य जी न
 मोस्तुते ॥ २ ॥ रकार लक्ष्मी स्वभावं
 रत्न नाना मनेक धारं ~~सं~~ व्यापितं
 पृथिवि रत्न संभव नमोस्तुते ॥ ३ ॥ अ
 कार नास्थिर भावं पञ्चराग सम पुभं
 शुजनी तेज समाधिस्थ अमिताभं नमो
 स्तुते ॥ ४ ॥ अकार तत्व भावं गंध
 बाहा सम पुभ ॥ अकार विश्व वज्रं च
 अमोघ सिद्धि नमोस्तुते ॥ ५ ॥ धका

रन्धर्म स्वभाव धर्म संघ स्वरूपकं ॥
धातु अस्त प्रकृति धर्म धातु नमोस्तुते ॥
६ ॥ सकारं सर्व सम्पत्ति सर्व मंगल मर्धनं ॥
सर्व सिद्धि त्वमेनाथ सिद्धि वज शरणांग
ति ॥ ७ ॥ इति श्री धर्म धातु नामास्तव समाप्त ॥

(८) कर्म बिकसित धर्म

नमो बुद्धाय ॥ ॥ कर्म बिकसित ध
र्म धातु वागि श्वर भुक्ति मुक्ति वर प्रदा
ता नेपाल मराठल स्थित स्वयं भू ॥ १ ॥
नमामि २ श्री स्वयं भू चैत्य भुक्ति मुक्ति वर
प्रसादता ॥ २ ॥ पूर्व दिग स्थित अक्षो
भ्य मुनिवर निल वर्रा गज मासनं ॥ ३ ॥
दक्षिण दिग स्थित रत्न संभव मुनि ल
तुरंग मासन पित वर्रा ॥ ४ ॥ पश्चिम
दिग स्थित अमिताभव मुनिवर मयूर
मासन रत्न वर्रा ॥ ५ ॥ उत्तर दिग स्थि
त अमोघ सिद्धि मुनिवर गरुड मासन
स्वाम वर्रा ॥ ६ ॥ मेरु मराठल स्थित वै
लोचन मुनिवर सिंह मासन श्वेत वर्रा
॥ ७ ॥ नेपाल मराठल स्थित भास्कर मल्ल

व्यापित भुवन लक्ष्मी देवि जगत जननि
नमामि २ श्री स्वयं भू चैत्य ॥ ८ ॥ इति ध
र्म धातु गित समाप्त ॥ ॥ - ० - ॥

(९) जाति बोधि

नमो बुद्धाय ॥ ॥ जाति बोधिं प्रवरम
पुर धर्म चक्रे चरणे चैत्य चैत्य . त्रिभुवन
नमितं श्री मितं प्रातिहा स्मर्यं ॥ स्थाने चै
त्य गिमगिरि निभं देव देवा वतारं वन्दे भ
वत्वा प्रणामित सिरसां निवृता ये च
बुद्धा ॥ १ ॥ वैशाल्यां धम्म चक्रे प्रथीत
जिन वरे पर्वते गृह्य कृते आबत्तां श्री वि
निच कूशि नगर बले लू विनि कापि ला
क्षे ॥ कोशाल्यां स्थल कैटिम धर वर
पुरे नन्द गोपा सराते येवान्धे धातु चै
त्य द्वावल बलिता तान्मम स्थापि कु
द्धान ॥ २ ॥ कैलास्प द्दम कृते हिमूव
ति मलय मन्दले मेरु शृंगे पाताले
वैजन्ते धन पति निलये सिद्धि गन्धर्व
लोके ॥ ब्रह्मानन्द विष्णु भुम्पां पशुपाति
नगरे चन्द्र सुर्या तिरेके ये चान्धे

धातु चैत्पा दशबल बलिना ता न्न मग्नि
 बुद्धान् ॥ ३ ॥ काश्मिरे चिनदैरो रवा
 रपुरे बलकरे सिंहलेवा रातो द्यौ सिंह
 पादे सतम विरत वरकरे कापि ह्ये ॥ नेपाले
 कामरूपे कवसपर पुर काति शोभासरोते
 वाज्य धातु चैत्पा दशबल बलिना तांन
 म स्पाग्नि बुद्धान् ॥ ४ ॥ येचान्य धातु
 गर्भा दशबल तनुजां कुंभ संज्ञा चैत्पा
 अंग लाक्षा गुद्या नोद मरचतरुमान्तु
 परत्न प्रकाश ॥ पाताले येच भुम्भोगि
 रि सिखर गङ्गायेच वित्तसमन्ता बुद्धा
 नां येच बिम्बा प्रीतिदिन मस कृत्तान्
 नमस्पाग्नि बुद्धान् ॥ ५ ॥ इति चैत्प बंदा
 ना स्तव समापुम् ॥ ० ॥ ॥

(१०) कालिहृद समुद्रभव
 ओ नमो धर्म धातु वागि श्वराय ॥ ॥
 कालिहृद समुद्रभव स्वयं भू ४ ज्योति
 मय कन क बराधूति सदेहाहं २ च
 द भिशनाथ कररागमय विष्णु
 ह सुभूय भव सुभूय स्वनाथ

सर्व ज्ञानाथ तव पाद युगे नमे हं ॥ ५ ॥ वा
 रु राप दिशि स्थित मुनि सुपरी मीतायु
 ध्यान मुद्रा मरिण प्रभं परिशोभितांग
 ॥ कर्मोदिद जगत नाथ सुसम्पद कुरु भव
 सर्व ज्ञानाथ ॥ २ ॥ पूर्व दिशि स्थित ह
 स्त मुद्रा आकाशवरा धूतिदेह सुभा
 वि तांग ॥ विद्यादिदसु गनार्थस सङ्ग
 नांग सर्व ज्ञान ॥ ३ ॥ याम्या दिशि स्थि
 त सुवरा धूतिदेह सवेन हस्तवरदान स
 मुद्र युक्त ॥ रत्नादिद फनक धातु धना
 धिप भव सर्व ज्ञान ॥ ४ ॥ सिद्धि अ मोघ
 फलदं शुभय प्रदाता सु रपामवरा लक्ष्मी
 देह सुशो भितांग ॥ सङ्गादिद सकरु
 नामय स्वभाव सर्व ज्ञानाथ ॥ ५ ॥ इति पं
 च बुद्ध गीतं समाप्तं ॥ ॥ ॥ ॥

(११) कमल विकारात
 नमो बुद्धाय ॥ ॥ कमल विकारात
 धर्म धातु वागिस्वर २ भुक्ति मुक्तिव
 र प्रदाता नेपाल मराजल स्थित स्वयं
 भू ॥ १ ॥ नमामि नमामि श्री स्वयं

भुवैत्य भुक्तिमुक्ति प्रसादाता ॥ २ ॥
 पूर्व दिगस्थित ~~अक्षोभ~~ भव मुनिवर ~~तुरंग~~
~~मस्य~~ ~~विषय~~ ~~मस्य~~ ~~मस्य~~ ~~निर~~ ~~मस्य~~ ~~वरा~~
 गजमाशन ॥ ३ ॥ दक्षिण दिगस्थित
 रत्न संभव मुनिवर तुरंग मासन पितव
 र्गा ॥ ४ ॥ पश्चिम दिगस्थित अमिता
 भ मुनिवर मयुर मासन रत्न वरा ॥ ५ ॥
 उत्तर दिगस्थित अमोघ सिद्धि मुनिवर
 गरुड मासन रूपा मवरा ॥ ६ ॥ मेरु मण्ड
 लस्थित वेलोचन मुनिबल सिंह मासन
 श्वेतवरा ॥ ७ ॥ नेपाल मण्डलस्थित
 भास्कर मल्ल व्यापित भुवन लक्ष्मी देवि
 जगत जननि नमामि शीर्ष स्वयं भू चैत्य ॥
 ८ ॥ इति धर्म धातु गीतं समाप्तं ॥ ॥

(१२) उदयागिरीगत

नमो बुधाय ॥ ॥ उदयागिरीगत
 ममर मुनिनत मधिक कसुराग कारक
 २ तं नमामि गजेन्द्र स स्थितं अक्षोभ
 नाम सुधाकरं ॥ १ ॥ धर्म धातु ध्यान
 संयुक्त दुरित दुरव विनाशनं बुद्ध विर

धर्मे विर संच विर नमाम् ॥ २ ॥ दक्षि
 नासागर धर्म दिनपर्वतो परीराजितं २
 रत्न सम्भव मश्व वाहन मिन्दु मुखसुर
 पुजिता ॥ ३ ॥ बरुणा दिशि गोडावीर ट
 त मधिक सुरनरवन्दीतं १ तन्न नमामि
 मिताभ मुज्वल द्वा द्वि वाहन नन्दिता ॥ ४ ॥
 उत्तर हिम पर्वतो परी गरुड वाहन नन्दिता ॥
 ५ ॥ नम मोघ सिद्धि मनेक सिद्धि दमा
 नमामि सुमरिडतं ॥ ६ ॥ चन्द्र मण्डल म
 चर राजित सिद्ध वाहन नमादित ॥ धर्म
 धातु मने मुनिगरा सेवितां दिविनोदि
 तं ॥ ७ ॥ चरणा युगनत भुवन लक्ष्मी
 विविध कसुरा ^{का.} ^{रकं} ॥ नृपति भास्कर
 भविक कारम खिल जनतारक ॥ ८ ॥
 इति बुद्ध गित समाप्तं ॥ ॥ ॥

(१३) सिंहासने स्थिति

नमो बुधाय ॥ ॥ उं नमः पंच तथा
 गताय ॥ ॥ सिंहसने स्थिति मनं वि
 गुराग धिपाल क्षिराम्बुरासि धवरायत
 वासु गिता १ वेलोचन मुनिबलं तथा

ता स्वर्भावं त्रैलोक्य नाथ प्रसन्नं सिरसां
नमामि ॥ १ ॥ सनिग्धं दनिरमणि
संफुलितं ब्राह्म वभा समस्तं दिगं तरा
नारं ॥ अक्षो भू बुद्ध महाभयं विर
दा समस्तं त्रैलोक्ये नाथं विस्मयकरसि
रसौ नमामि ॥ २ ॥ रत्नाभिः कमिवद्विज
गदर्थं दक्षं साक्षा सुमेरु मिवं वज्रम पुराण
राक्षसं तं रत्न संभव मुनिगुरुरंगा सनस्थं सौ
वर्ण सागर निर्भयचसं नमामि ॥ ३ ॥ स
धर्म पुपुशत विराकृता वभावं सधर्म कु
क्षपप मया भिरामं ॥ तं पद्म रागमणि प
र्वत सौभमानं मयुरा सनस्थं उमिताभ
मुनिं ॥ नमामि ॥ ४ ॥ स धर्मलक्ष्मी नि
वहे जगदर्थं दक्षं भास्वत्प्रवरं वितं सर्वेन
भो विभार्गं वैदुर्य सागर निर्भं गरुडा
सनस्थं बुद्धं नमामि सततं प्रमोद्यसिद्धि
॥ ५ ॥ सिंह भास्वसि सौ गरुडा गन्धर्वजा
विपज्ज किति सुजां भो धवर हेम रत्न
निवहे स्पामा भवरा कगात वोध्यं श्री
वल ४ दास्य भो धप मभयं भुपस्व मु

दा कितानं वंदे रत्न किति स्वकुरिनां
त्वज्ञान पंचात्मकं ॥ ६ ॥ इति पंच तथा
गतस्तोत्रं समाप्तं ॥ ॥ ॥ ॥

(१४) शशधरमिव शुभं

ओं नमः मंजुनाथाय ॥ ॥ शशधरमि
व शुभं खड्ग पुस्तंगपारिण सुर विर मति
सानां पंचचिलं कुमारं पृथुदल पद मो
क्षं पद्म पत्रा यातां क्षं कूमतिहन दक्षं
मंजु घोषं नमामि ॥ ॥ ॐ नमो विष्णु
नां तत्काय गराणां गन पतिश्चैव स्क
दन्तां त्रिलोचनं वज्र सत्व भुव नित्यं वरदा
ता विनायकं मनर्वा द्वा पुजितं सर्वपा
प विघ्न हरतां देवा गन्धानां गरापति
स्वाहा ॥ ॐ नमो स्पामि महाकारा
य ॥ सर्व संपत्तिदायक खर्वलं वीदरं मि
लं शुद्ध नाग द्विभुजकं सुरवं विरक्त
पाल किति मेषल व्याघ्र चर्मयि वस्थि
ताय शवारुढा मुराड माला धनु किति
कपालास्य क्रोध विग्रह सुधर्म प्रकृति
निर्मलं भावाभावतमक नाथं जगत सा

सम लक्षक भावा भाव विधि मुक्तं
 बुद्ध सासनलक्षकं कर्तिकपालिकं ना
 थं महा कालं नमामि ॥ बुद्ध त्रेलोक्ये
 नार्थं सुरनर नमितं पार संसार धिरं
 धीर भाग्यवन्तं सकल गुरा निधि ध
 र्मराजा मिषिकं तृषा मोक्षं धकार
 कलिकलुष हरो कामरो भाग्यवन्तं त्वं
 न्देशाक्य सिद्धं पुरा मित शिरसा ४ स
 र्व कालं नमामि ॥ ह्रींकारं संभव नार्थ
 कुराणा धर्मसनिग्ध मानसं शुभोद्य
 पास नामानां लोक नार्थं नमामि ॥
 हेरम्ब परमं देव कार्य सिद्धि विनायक
 स्वभागे रूप संपन्न देहि मे सुख संप
 दं ॥ ॐ नमः ॥ जीवन् महा कालाय कृ
 षा वरा सवारुढ बुद्ध सासन लक्षकं
 कर्तिकपालिकं नाथं महा कालं नमा
 मि ॥ जीवन् पुराडरीक ध्वज वरक
 लसं चामलं मद्य युगतं त्वं द्रव्यं हेमदन्तं
 रवि ससि उभया दाहिना वरा दैव्य गो
 र्धन्या शंख मेरी दधि फल कुसुमोया

मका दिपमाला पुन्य सिरध नरो राजा ध
 शृङ्ख युधिष्ठिर ॥ ७३ स्कन्हा मावलि व्यास
 मारक शो त थैव च कृपा पशु भामे च ह
 री मन्त विच सबा ७५ हन्ता दुष्पति सि
 ता १ तारा मनो धरि युते पंचकन्या सु
 मररां नित्य नित्य पाप नाशनं गम
 नं च अर्थ रात्राय क्षमाय विजराय च
 शत्रु पक्ष विनाशाय पुनराय गमरा
 पुनराय गमनं च द्रव्यं ध्वजं वाज पद्मं ध्व
 जवर नमितं लोचना मद्य सुर्य वारादि
 पुराणं कुंभ मुनिवर वचनं वज्र घन्टा
 नि धाना बुद्धानां प्राति हाय सुरवर
 नमितं हास्य लास्य विरास्य गुरुत्वा सर्वा
 र्थ सिद्धि विमल सुमरसु मंगलं बोधि
 सत्त्व ॥ ॥ इति विश्व कर्मास्तुति स
 माप्तम् ॥ ॥ ॥ ॥

(७५) मंजुशी लोक नार्थ
 ॐ नमो मंजु नाथाय ॥ ॥ मंजु शी
 लोक नार्थं जिनवर भक्तो जंवलं वज
 सत्त्व मैत्रिया वृज पारिा सुखवर दि

करो. राहुरो भद्र पारो बुद्धो वैरोचना आ
 त्रिभुवन नमितं हिर निषेस दोषो. तुस्त्वा
 स्त्वा सर्वार्थ सिद्धि विमल शुभलसु मं
 गलं वोधि सत्व ॥ १ ॥ हितो हूँ कालवज्रो
 पसु प्रतिदमको वज्र घंठा जहस्ता. पीतो हा
 रा हुराजो रिपुगन मथनो ट किराजो महे
 म्मा पुद्गोष्प रत्न केतु प्रतिदिन मचरे
 गन्ध हस्ति जमालि. तुस्त्वा ४ ॥ २ ॥ संघं
 त्रैलोक्ये वंधु गुरागरा निलयो वोधि नि
 त्सुनिता बुद्धो सौरेन्दु राजो विजित जि
 न गुरागो हेस्को निलदराड बुद्धो सा
 रिन्दु राजो विदित जिन गुरागो सर्व
 सत्वा मुक्त पा तुस्त्वा ॥ ३ ॥ पुत्रा
 बुडा वतार तदनुज भृकुति ज्ञान संभार
 भारा मारिचि माल माला सकल भय
 दरा पितवरारि त्रिवक्त्रा मायुरिमान्न
 दिव क्षपित रिपुगारा पाद्मालालोच
 ना वर्य तुस्त्वा ॥ ४ ॥ गंधालि जां
 गुलि च भुजन हितकरा खड्ग पासाकु
 सश्या वाराहि कज हस्ता. असि परस्फुरा ध

मि धाते श्वरी च केयुरी ज्ञान सुरा भुजन हि
 तकरा. खड्ग पासा वलिच. तुस्त्वा ॥ ५ ॥
 विद्या माल्या स्वर्ज वतारा पठित जिनवरे
 सावारे धुवका वेतालि गन्ध वजा प्रह
 सित वदना स्वर्गते आर्यपतारा रस्मि बु
 द्ध स्पवोद्ये सकल भय दरा सारथि दि
 प वजा तुस्त्वा ॥ ६ ॥ वैशाल्या धर्म ध
 र्म चक्रं पथित जिनवरे पर्व ते वृद्ध कुते
 आवत्पां हं विनिच क्षपित हित सने कोष
 ने वोधि वृक्ष श्री मत्पं द्रावतारा सुरवर न
 मितं श्री फलं संख चक्रं तुस्त्वा स ॥
 ७ ॥ ध्वजं ध्वज वाद पद्मं ध्वज वर नमि
 तं लोचना मधु सुर्य वाराही पुरीकु
 भ मुनिवर वचनं वज्र घराठा निधाना
 बुद्धाना प्रातिहास्य स्प सुरवार नमितं
 हास्प लास्प विलास्प तुस्त्वा ॥ ८ ॥
 इति श्री गुरु मंगल गाथा स्तोत्र
 समाप्त ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

(१६) नमस्ते बुद्ध रूपाय

नमो बुद्धाय ॥ ॥ नमस्ते बुद्ध रूपाय.
धर्म रूपायते नमः ॥ नमस्ते संघ रूपाय
पंच बुद्धात्मने नमः ॥ १ ॥ पृथ्वी रूपा
य रूपाय. तेजो रूपा यते नमः ॥ नमस्ते
वायु रूपाय. काश रूपायते नमः ॥ २ ॥
ब्रह्मरूप सत्वरूपाय. रजो रूपाय विशाखे
॥ तमो रूपाय महेशाय. ज्ञानरूपायते
नमः ॥ ३ ॥ प्रज्ञोपायात्म रूपाय. मुख्य
रूपा यते नमः ॥ दिग्रूप लोकपालाय.
विष्णु रूपा यते नमः ॥ ४ ॥ चक्षु रूपाय
करणाय. धारा रूपाय क्षैद्विका ॥ काय रू
पाय श्री धर्म रूपाय मनसंतमः ॥ ५ ॥ न
मस्ते रूपरूपायशब्दरूपा यते नमः ॥
गंध रूपाय रसाय. स्पर्शरूपायते नमः ॥
६ ॥ धारकाय धर्मरूप. षट्त्रिं प्रियात्म
ने नमः ॥ मांसास्थि मेद मज्जा त. संघात
रूपीने नमः ॥ ७ ॥ रूपाय जंगमानान्ते
स्थावरा नाच मुर्तये ॥ त्रिरश्चा मोहर
याय. रूपाया श्रवण मुर्तये ॥ ८ ॥ शृङ्खि
कृती जन्म रूप. कालरूपाय मूलबे ॥ म

व्याय बुद्ध रूपाय बाल यते नमो नमः ॥ ९ ॥
प्राणोपाय समानो दान व्यान मुर्तये न
मः ॥ वराय वरी रूपाय मे क्रेन मुर्तये
नमः ॥ १० ॥ दिनरूपाय सुष्याय चन्द्ररूपा
य रात्रि मुर्तये ॥ तिथि रूपाय नक्षत्र
योग वारादि मुर्तये ॥ ११ ॥ वाह्याभ्यन्त
ररूपाय लौकिकाय नमो नमः ॥ नैर्वाणा
ये नमस्तुभ्यं. बहुरूपा यते नमः ॥ १२ ॥
आदि बुद्ध द्वादशकं पूराप प्रातः पाविष्यति
॥ यदि द्यतिल भेन्नुनं मनुना नित्य निश्चयं
॥ १३ ॥ ओर्जिकायां पैरि माग्ना मा
दि बुद्ध स्प दशनि ॥ प्राप्त मन्त्रकुमारेन
ससुरा सुर दुर्लभं ॥ १४ ॥ इति श्री स्वा
र्ध भूपुरारोग कृतं मञ्जुश्रीकृत आदि बुद्धो
दशनाम स्तोत्र समाप्त ॥

(१७) ओंकारोत्पन्न

ॐ नमो बुद्धाय ॥ ॥ ओंकारोत्पन्न शु
क्लाभं मध्यसिंहासनस्थितं बोध्यं गमु
दया युक्तं वैरोचन मुर्ति नमः ॥ १ ॥ हूं
कारोत्पन्न निलाभः पुर्बगजासनस्थितं

॥ भूस्पर्शया मुद्रा युक्तं अक्षोभ्यः शीघ्रं नमः ॥ २ ॥ त्रौंकारोत्पन्न हेमभंः दक्षिणाभ
 श्व मरुतं ॥ वरद संयुतं बुद्धं नमामि रत्न
 संभव ॥ ३ ॥ द्विंकारोत्पन्न रक्ताभं प
 श्विमे मयुरासनं ॥ ध्यानमूर्तिधरं नाथं
 श्रुमिताभ मुनि नमः ॥ ४ ॥ खंकारोत्प
 न्न श्यामभं उत्तरे गरुडासनं ॥ अभय
 मुद्रं संबुद्धं नमामि अमोघसिद्धिं ॥ ५ ॥
 रोचना मामाकिं श्वैव पाराजरातारनितथा
 ॥ ब्रह्मादि कोनस्थित श्वतुदेबिनने नमः ॥
 ६ ॥ निलांकार निलंजनः पुत्पक ज्योति
 रुपिनः ॥ चैत्य मध्यस्थितं देवः वज्र सत्वं न
 मोस्तुते ॥ ७ ॥ इति श्री पञ्च बुद्धादि विज्ञा
 क्षरस्तव स्तावं समाप्त ॥ ॥ -०- ॥

(१८) नमामि मञ्जुनाथाय त्रैलोके
 नमो मञ्जुनाथाय नमः ॥ ॥ नमो मञ्जु
 नाथाय त्रैलोके व्यापितो मय ॥ मया कृ
 त्वा तु मे पादोः नमः श्री मञ्जुनाथकं ॥ १ ॥
 मोरि ज्योतिश्वरं चैत्यः पारी सिंहासनस्थि
 त ॥ बोधिसत्वं नमस्तुते नमः श्री ॥ २ ॥

लोके श्वर जगत स्वामि श्रुमिताभ मोरीध
 रं ॥ दुयस मोहनकार्यः नमः श्री ॥ ३ ॥
 त्वर्गमध्यवपातले सर्वसत्त्व उधारनं ॥ महा
 पारिा महा बिरं नमः श्री ॥ ४ ॥ त्रैलोके
 सर्व सत्त्वकं सर्वज्ञानसिद्धिफलं ॥ मञ्जु
 शीत्वं महाबिरं नमः श्री ॥ ५ ॥ त्रैलोके
 सर्वसत्त्वकं दहिनः शीविनायकः वामम
 हाभयंकरं ॥ पञ्चपानिश्चर मध्यः नमः
 श्री ॥ ६ ॥ रत्न मकुत स्वभाय खड्गपु
 स्तक हस्तधरं ॥ धनुधारि मञ्जु शीत्वं
 नमः श्री ॥ ७ ॥ पुजयितुं मञ्जु शी पु
 ष्पाधुप सहितरे ॥ बाद्यसर्व समंगरेः नमः श्री
 ॥ ८ ॥ विद्यानां विद्याराजत्वं सर्व विद्यासि
 द्धि फलं ॥ सर्वसत्त्व हितार्थकं नमः श्री ॥ ९ ॥
 ॥ वन्द्यसूर्य सुमंदरे बहुतेज सुसोभित ॥ ईदृ
 तेज मञ्जु शीत्वं नमः श्री ॥ १० ॥ मञ्जु
 शीत्वं जगत्स्वामि कालिंजले निक्षेपिते
 ॥ नेपारे मेराडरं धापेः गुरुत्वं वरना न
 मो ॥ ११ ॥ इति श्री मन्त्र वज्राचार्य सर
 नं विद्यातव स्तोत्र समाप्त ॥ ० ॥ ० ॥

नमो बुधाय ॥ ॥ कारिंज देस मुभव सुग
 ता स्वयं भूः ज्योतिमयं कनक सुवरां पुरी सु
 देहं ॥ खट्बिण्ण नाथ बलदं मय विश्व नाथ
 सर्व नाथा तव पादयुगं नमो ॥ १ ॥ वारम
 दिजे स्थित मुनि चरी मितायु ध्यान मुद्रा
 मरिण प्रभं परितोत मात ॥ कर्मादिदं जगत
 नाथ सूशालु नाथः सर्वज्ञाना ॥ २ ॥
 पूर्व दिशि स्थित शुभु धिष्ट हस्त मुद्राः आ
 कासवरां शुभे दुर्ति सुहृद् सोमितायु
 ॥ विद्या दिदं सुगत नाथ शुभु गुरुचः सर्व
 ज्ञाना ॥ ३ ॥ याम्पा दिशि स्थित शुभ
 रां नुस्ति सुदेहंः सुव्यन हस्त बल दान सु
 मुद्र युक्त ॥ रत्ना दिद कनक धातु ठना
 धिपचः सर्वज्ञाना ॥ ४ ॥ सिद्धि अमो
 धरुद शुभय प्रदाता ॥ इषामा भव
 रन लख्या देह सूरितार ॥ सिद्धा दिदं
 श करुणा मय विश्वभावः सर्वज्ञाना ॥
 ५ ॥ इति श्री बुद्ध भट्टा रक्ख पंच बुद्ध
 स्तोत्र समाप्त ॥ ० ॥ ॥ ॥ ॥

नमो रत्न त्रयाय ॥ ॥ गुरु बुद्धो गुरु धर्म्मो
 गुरु संघस्तथैव च ॥ गुरु बज धरश्चैवः गुरु
 सर्वान् नमाम्पहं ॥ १ ॥ विश्व नाथ जि
 न बुद्धः विश्व भद्र जगद्गुरु ॥ विश्व नाथ
 सदा वंदेः विश्व मुर्ति नमाम्पहं ॥ २ ॥ प्र
 शा पार मिता नित्यं प्रज्ञारूपं निरु प
 तां ॥ प्रज्ञा भाषं सदा वंदेः प्रज्ञा मुर्ति नमा
 म्पहं ॥ ३ ॥ लोके श्वरं शिरं सान्तः अमो
 घ गुरा सागर शुमिता भ कृतं मौरिः अ
 मोघ पासं नमाम्पहं ॥ ४ ॥ नमस्ते पं
 च बुद्धास्तांः जिन धातु करं दकां ॥ मध्य
 वैरा च नौ नाथैः पंच बुद्धं नमाम्पहं ॥ ५ ॥
 स्वयं भूवा विनिष्क्रमः युगत्रय जमानं ॥ बो
 धि सत्व कलौ बुद्धः शाक्य सिंह मूपासय
 ॥ ६ ॥ नमस्ते पुरुषोत्तमः नमस्ते पुरु
 षोत्तम ॥ कृतांजलि करास्मामोः धर्म्मराजं
 नमाम्पहं ॥ ७ ॥ वसु धारा सदानत्वां दा
 रिद्र नव तारिणी ॥ सधनो पायका प्र
 ज्ञाः लक्ष्मी सिद्धि वर प्रदा ॥ ८ ॥ नमस्तु
 रे तुरे बिरेः तुतारे भय नाभिनि ॥ तुर सबा

धदेतारेः स्वाहाकारे नमोस्तुते ॥ ९८ ॥ सर्वभा
 वमकं नत्वाः योगिनीजालनायकं ॥ योगी
 नरजगन्नाथः ॥ जगत्पुरु नमामहे ॥ १०१ ॥
 शानदाकिनि महादेविः सहजानन्दरुपि
 नी ॥ प्रज्ञाज्ञानस्वरतात्माः बन्देहं मोक्ष
 दायनि ॥ १११ ॥ विश्वव्यापिमहाज्ञानः
 सर्वा मराणी सुसंस्थितं ॥ कृपाक्रोधमहा
 रदुं श्रीसंवरं नमाम्पहं ॥ १२१ ॥ आरिधा
 सन संस्थापिः कल्याणं मुकुतो जगत् ॥ आ
 रि कालि समादोयः संवरं प्रणमाम्पहं ॥
 १३॥ नत्वा श्रीवज्रवाराहः सर्वपापप्रमो
 चनि ॥ मारविध्वं सती देविः बुद्धत्वं फल
 दायानी ॥ १४॥ निरवरा महाचोरः चतु
 वरा दिगंबरं ॥ मेरात्मा लिंगितं बिलं हृद
 यं प्रणमाम्पहं ॥ १५॥ शुन्यता कररागा
 त्मानः त्रैधातुकं नमस्कृतं ॥ ज्वलर कल्पा
 णिचतैजः नमस्ते वज्रयोगिनि ॥ १६॥
 मंशुघोषं महाविरं ॥ धर्मधातु महाजि
 न ॥ सर्वसिद्धिस्वरनाथः वादिराजं न
 मांम्पहं ॥ १७॥ गरापतिं चहेरं बः

विघ्नराज विनायकं ॥ सर्वविघ्नहरं देवं
 गरापतिं नमाम्पहं ॥ १८॥ कृष्णावरी
 मारुतं बुद्धसासनरक्षकं ॥ कर्तिकजा
 लधरं नाथः महाकालं नमाम्पहं ॥ १९॥
 नमस्ते क्रोधराजानां सर्वदुष्टनिवारणां ॥
 त्रैलोक्यविजयादिनां दशको धान्नमा
 म्पहं ॥ २०॥ इन्द्रादयो महाविरालोक
 पाला महर्षिणाः ॥ दशदिक्षु स्थिता वि
 राः लोकपालान् नमाम्पहं ॥ २१॥ अ
 ष्टदिक्षु स्थिता देविः अष्टवृक्षनिवासि
 नि ॥ अष्टभैरवसंयुक्ताः ५४ मांत्रिका
 प्रतेनम ॥ २२॥ पद्मनृत्यश्वरं भिर्ज्ञः
 लोकेश्वरजगद्गुरुं ॥ नव रसाधिपं विरं
 अष्टसिद्धिपदं नमः ॥ २३॥ रक्ताभं श्री
 महातेजः सर्वदुष्टनिवारणां ॥ वा नित्य
 सिद्धिदातारं भीमराजं नमोस्तुते ॥ २४॥
 नमोऽर्पतिदेवि वीर्ये सर्वा कालमु
 पराणी ॥ चराडचराडे श्रीदेविः सगरा
 प्रणमाम्पहं ॥ २५॥ इति श्री सकलदेव
 ताभट्टाख्य श्रीजीरता विसम्बदे
 ववता क्वचित्तिस्तोत्रसमाप्त ॥ ॥

नमः श्रीपुत्रा पारमितायै ॥ ॥ नि
र्विकल्पे निरालंबैः निरवश्या निरजने ॥
नित्या नित्य निर्विकारेः पुत्रदेवि नमोस्तु
ते ॥ १ ॥ बुद्धानां जनानि शानिः बोधि
सत्व पितामाह ॥ पुपिता माह सत्वानां पु
त्रदेवि ॥ २ ॥ मातर्मतिर्जगत्मातः इति
सं जपतां नृणां मनोरथ प्रदे शुद्धैः पु
त्रदेवि ॥ ३ ॥ लक्ष्मीस्त्व मसि कल्याणिः
ग्रीचीः सद्धाधृतिः स्मृतिः ॥ सर्व स्वरूप स
र्वेशैः पुत्रदेवि ॥ ४ ॥ लोकोत्तरे लोकि
केचः पुत्रा पारमिते मिते ॥ दशपार मि
ताकारैः पुत्रदेवि नमोस्तुते ॥ ५ ॥ इ
ति श्री पुत्रा पारमिता स्तुति समाप्त ॥

(२२) जगत्कृप स्वयं भूवः

नमो श्रीस्वयं भूवे नमः ॥ ॥ जगत्कृप स्वयं भू
वं अनादिन मवयम् शु जनु विपज्जरान्तकं स्व
यं भूवं नमामहे ॥ १ ॥ सहस्रपत्र पंकजो
लसत्सकरि कोट्यंभवं ॥ समस्त कामना प्रदं
स्वयं भूवं ॥ २ ॥ सहस्र भानु रंजनः मुनियु
क्त कोटि वन्दनं ॥ स्वराद्य लो वंदनः स्वयं भूवं ॥

३ ॥ त्वमेव स्क राजस गुरो विवि सिराजसे ॥
त्रिधातुं विभावस्पः स्वयं भूवं ॥ ४ ॥ अयं
क ईत्थं पददाः भिमां सितु न सकृबान् ॥ पुभा
स मात्र मिक्षितः स्वयं भूवं ॥ ५ ॥ इति श्री स्वयं
भूस्तोत्र समाप्त ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

(२३) पुराकिलानिधि संनिभ

नमः श्रीधम्म धातु बागि श्वराय ॥ ॥ पुराकि
लानिधि संनिभदेवः मृगपत्यासन योगध्या
नः वदे सुरा धिस्त्रिशः श्रीवैरोचनः श्रीधम्मधा
तु महं पुनमाभि ॥ १ ॥ इन्द्र निल द्युतिभा
स्वर पतदंति समारुह भुपस हस्तं ॥ नैमिशी
अक्षपोभ पूर्वदिगस्थः श्रीधम्म ॥ २ ॥ वा
जिब रासन नामिक राभं लोके वरप्रद याम्पू
मधीशं ॥ वदे श्री रत्न संभवनाथः श्रीधम्म
॥ ३ ॥ पद्मराग निभ पश्चिमा धिशां ध्यान
मुद्राधार मयुरारुह ॥ नमोस्तु श्री अमिता
भ मुनिन्दुः श्रीधम्म ॥ ४ ॥ तासासन
फि नि लंकृतः इषाम मुत्तरा शापति मभय
करं ॥ श्री अमोघ सिद्धि जिन नमोऽहं श्रीध
म्म ॥ ५ ॥ सर्व देवालय श्रीवज्र धातु शुद्ध

नमो पाति विश्व व्यापितं ॥ त्रेधा तु सर्व भवा
गु मधीसं श्रीधर्म ॥ ५ ॥ इयं भक्त्या
मया यतत बाग्भितोत्रं कृतं मया ॥ यद्वा दो
षो परा धतक्षम स्वमुनिन्दुं ॥ शुद्धं वा शुद्ध
मेव च ॥ अन्तमहसि बोध मुक्ते ह दीनद्राक्कि
रक्ष मां लोक नार्थं ॥ ७ ॥ इति श्री धर्म
धातु बाग्भितोत्रं भट्टारक स्वरत्न पुष्पा
ञ्जो लिखित स्तोत्र समाप्त ॥ १ ॥ ॥ ॥

(२४) श्री धर्म धातु मरिा सं
नमो श्री स्वयं भूवे ॥ ॥ श्री धर्म धातु मरिा
संकरागवतारः नागादिवास हृद पंकज कीर्ति
का स्थः नैरंजनं निरुपमं खसमं महेशं ॥ ज्यो
तिस्वरूप मसमं पुरा तोत्ति नित्य ॥ १ ॥
अत्वा समं महिमते श्रवनेन दृष्ट्वा नेत्रे रा
रूप मरिा सं चररो नगत्वा ॥ हस्तेन पु
ज्य चररां मनसा नुचित्य ॥ ज्योतिस्वरूप ॥ २ ॥
किं वरार्थिामि तवरूप मचित्य मेतत ॥ जिह्वं
दियरा भव दिय नूतिं करोमि ॥ दोषोस्त्व
दोष सुथवा भव दिय स्व ज्योतिस्वरूप ॥ ३ ॥
ज्योतिस्वरूप नुतिमिय कृतिं पठति ॥ निष्क

द्रा शुद्ध बिलस हृदय स्वभावा ॥ पाठोजक
रिा कन्करागमृत माप्नुवन्ति ॥ स्वयं भूवेति ह
विरेर्विषिते लयन्ते ॥ ४ ॥ इति श्री स्वयं भू
परारो दिाखी तथागत कृतं स्वयं भूतो
त्र समाप्त ॥ . ॥ . ॥ . ॥ . ॥

(२५) ज्ञान प्रजाता मम पातु नाथ

नमो बुद्धाय ॥ ॥ ज्ञान प्रजाता मम पातु ना
थः पुरा स्व रूपं बर भार रूपं ॥ बिश्वादि
जात जगदादि बुद्धः वन्दे सदा ते चरराग वि
दो ॥ १ ॥ बरो शजातं हिमवर्म वष्मः सिं
हे प्रबाहं मम पातु यन्तु ॥ हस्ति प्रहस्त प्र
धरेरा राजं वन्दे स ॥ २ ॥ कूर्म प्रजातं
द्विप बाह दिव्यः प्रहस्त नवरं च च स्वा
भं ॥ हेनाथ नेत्वं जगतां हि पातु ॥ वन्दे स ॥
॥ ३ ॥ मृदि प्रजातं हय बाह दिव्यं गङ्गे ये
तेजं वसुहस्त दिव्यं ॥ पालं कुरुस्वं जगतां हि
स्वामि वन्दे स ॥ ४ ॥ लज्जा प्रजातं भूज
गास्त दिव्यं ॥ रागेय तेजं वसुवाहु भार
यन्त्रा हि मे नाथ भवोद्धि हः वन्दे स
॥ ५ ॥ शुभ्र प्रजातं निधि हस्त दिव्यः लो

के शुभं रं हर मेत्र स्वाभिन् ॥ पापंच पुः
 रं क्षय नासकतः वन्दे स ॥ ५ ॥ सत्वप
 जातां जगतां हि पातु पद्मसु दिव्या सित
 वरि देहं ॥ चक्रा हि वामे वरदान मुद्रा
 वन्दे स ॥ ७ ॥ रुद्र प्रजातां मम रसमा
 तं काजसु दिव्या ॥ गारा मदेहा ॥ वज्रा
 हि वामे वरदान मुद्रा वन्दे स ॥ ८ ॥ पौरुष
 जातं जगतां नुपातुः काजसु दिव्या मरु
 ना मदेहा ॥ पश्चा हि वामे वरदान मुद्रा व
 न्दे स ॥ ९ ॥ अर्द्धि प्रजाता मम पातु देवि
 ताक्षसु दिव्या हरि मदेहा ॥ खड्ग च वामे
 वरदान मुद्रा वन्दे स ॥ १० ॥ ज्ञान प्रजातां
 मम पातु अम्बे; सिंहस्थ दिव्या हरि प्रहि दे
 हा ॥ प्रज्ञा च वामे वरदान मुद्रा वन्दे स ॥ ११
 ॥ चित्तादि नन्द नुति पुष्पा मालाः विश्वे
 स्वरास्य प्रकरोति लोके ॥ द्वे बुद्ध मेत्वं प्रद
 दातु मोक्षं वन्दे स ॥ १२ ॥ रुन्धाजि नेत्र
 ग्रह गेति केतः नेपाल भुमेश दिनेन सुत्रः
 ओजेन मासा दशमि प्रयुक्ते वन्दे सदा ते
 चरनार विन्दौ ॥ १३ ॥ इति श्री पञ्चबुद्ध

चतुर्देवि स्तोत्र समाप्त ॥ ॥ ॥

(१६) श्रीमानाद्य स्वयं भू
 नमो रत्न त्रयाय ॥ ॥ श्रीमानाद्य स्वयं भू
 रमित रुचिर मोः चाभि धो द्यो भव बुद्धः श्री
 मान वैरोचनाख्यो मरीता भव मुनिरात्र वज्रस
 तो सत्व सुसत्व ॥ श्री प्रज्ञा वज्र धात्री सक
 ल सुभ करिः आर्यतारा दिक्तासाः कल्पानं व
 क्रियां सुको चिदपिद पिसरतां तिष्ठ तां
 नौमि हं तां ॥ १ ॥ देवी सं पद्म प्रदासा
 गारा पूति हृदया वज्र विदा विरिणासा उशी
 षा परादेवि किटि वर वदना मातृका खे
 तरां नौ ॥ कोटी रक्षा सदेवी स्वगरा प
 रिभृता पञ्च रक्षा सुरक्षा कल्पा ॥ २ ॥
 रत्ने रुदीपो करारख्यो मरीता कुसु गिनिम
 नेः श्री विपश्ची शिखिन विश्व भू श्री क
 क्रासं कनक मुनि मुतिः का रूप प शाक्य सिं
 ह ॥ प्रपूत लब्धा लभुत शक्र दशबलो पार
 महात्म सिद्ध कल्पा ॥ ३ ॥ श्री मां नार्य
 बलो के श्वरजिन जवरो मे वी चोतं तगं जो नौ
 ध सामन्त मद्रु सिद्धि कृत् टनखर्गः भाविधा

नैमहतो ॥ सर्वाधानि वरारव्यो कुलिश
 वरधरा मंजुनाथो महेश कल्पा ॥ ४ ॥
 बुद्धाधिस्थानकं दोटु मबवरकमले
 नागबासा मिधाने मूर्त्तिना यो वराख्यं
 निज भूवनवरात् ज्योतिर्कंससर्ज ॥ स्को
 श पंच भुक्ता बिहरति सततं पंच बुद्धात्मको
 सौ कल्पा ॥ ५ ॥ या प्रज्ञा गुह्यरूपा त्रिदल
 कमलजा मंजुदेव प्रकाशा नैरात्मनिष्ठरूपा
 बहुविविधा हिता ब्रह्म बिलुप्तवद्या ॥ दुर्गाया
 मार्गकृष्णो कृतिवतिवरदा प्रादुरासीद
 गाधकल्पा ॥ ६ ॥ मैत्रेयो शापबुज्योवन
 मरुदुपरे रत्न वुद्रस्य रत्नं ज्योतिर्संगम्य
 व्यं मबजलधिताले रत्नलिङ्गे श्वराज्य ॥ श्री
 स्व वितरागास्त्वं कृत महिमा व्यक्त रूप
 स्वयं भू कल्पा ॥ ७ ॥ त्रातुं गोदुस्तक्रशातं
 पक्षिधृतमतिलोकनाथा शया भूत पक्षा
 स्वर्गजा मिध जिनतदयो वाग्मतिपुततिरे ॥
 श्री गोकर्षो स्वर सपितृजन हित कर्ता द्वा
 मतिसंगमे स्मीन कल्पा ॥ ८ ॥ कृष्ण
 गा धिराज कुलिक सम मिध त्रासयन्

किलबं द्योः लोकानां भद्रहेतोः समभव
 दुपरि श्री गिरौ बितरागः श्री सामंताद्य
 भद्रो च वृजकृतिर भवत्कील नामा महेश
 कल्पा ॥ ९ ॥ पात्रतं सर्वपापं कमलबिलध
 राः वज्रपाते गिहिते लोकानां रक्षनार्थं च
 नरीपे कलसा कारतो शोब भुज ॥ श्रीमा
 न् सर्वे स्वरारव्यो जिनवरतनयोः शुल धं हा
 दधान कल्पा ॥ १० ॥ दुर्वोधं मंजु गते
 अजन सुखरतनं कामिनि द्रुपुबोधः योसौ
 प्राशम भान्तं कविबन मकरो मंजु देव ततोपि
 ॥ स्वासं सधाय भव्यं सकर गुरा पुदं प्रापग
 ते सहाजा कल्पा ॥ ११ ॥ मत्स्यां काराभिरा
 बी सकर वरगा विष्कं मि नाम सुसत्वः सा
 रंकार कनिशैः रदददखिल लान्यो तृयारव्या
 यथासौ ॥ निकारुपां शान्प्रबिं दो शुर
 दुति समभुः द्वीत रागो र्यरागः कल्पा ॥ १२ ॥
 ॥ स श्री मान्ते दृयानो व्यतपत तपसाः सात पत्रे
 सुतिलेः पृथिगर्भा स्वबोद्धाः भगमी ऊ
 तितितं स्थाप या मास चास ॥ रांधे शोबित
 रागो मबदखिल सुदृ लोकनाथो गतस्थ

कल्पा-॥१३॥ शंखदधिसहर्षो स्मरदमिता
सूतं विक्रिमा प्राप्तासिद्धोः यस्मा लोके श्वरा
ज्ञा विनिहित हृदया प्रदुरादि भुवगर्भे ॥ य
श्चां शंस्थापयित्वा निजा पुत मगमत विक्र
मे शो भिधानं कल्पा ॥१४॥ नागसाक्षे
रायस्माः दल भदनु सुरव पुन्यनामा सुति
र्थः पार्वत्या यत्र तेपेः कलह निरसने शान्त
तिर्थ प्रशान्त ॥ तप्त रुद्रेणा दुर्गा तिल खितम
रासा संकलाख्य स्त्रिबेश कल्पा ॥१५॥
तिर्थो राजा भिदानो पद ल भदबनि पाल ला
य विरूपो न्या ध श्वैराश्च यस्मात्सुरपति स
दनं प्रागमत काम तिर्थ ॥ बजा चार्थनपशुं
यद भिषव कृता संगतं निर्मलाख्य कल्पा ॥१६॥
दीनेरा पानिधानं यदपविगिपरे राक नि
धान तिर्थोः शैनध ज्ञानुमेकं यदुह कम
तिष्ठिः ज्ञान संज्ञक तिर्थ ॥ चिन्ता मं न्या रे
तिर्थोः ~~शेखर~~ ~~शेखर~~ ~~शेखर~~ विधि वद भिष
वैः यत्र प्राप्नो मिलोषः कल्पा ॥१७॥ य
त्र स्नाते सुदापेः तिस्र मभिधम भु धस्य
प्रानेद तिर्थः प्रादा संलक्षणा ये सप

यसी सरतां तिर्थ लक्षणाया ॥ यत्र
स्तात्वा बलास्याः सुरपतिजयद्वैः जय तिथे चि
तिर्थ कल्पा ॥१८॥ विद्याधर्याख्य देवि
गगन कृतपदा ये गिनिबज्र पुर्वः दारिद्र्य
द्विभुमा नस गन पति महा काल चुडाख्य च
धा ॥ ब्रह्मान्यायश्च देव सहरिमुखर
ज्वा न नास्व इयुक्ता कल्पा ॥१९॥
बागमत्पां मुल पुष्टः प्रभृतय उपतीर्थास्त
थाको सचैत्पाः संखो श्वस्था श्वजातो वय
तिरी ररितो श्वैत्प भट्टा रको शो ॥ फुलो
श्चो दृष्टदेवी तदनु भगवति ध्याय प्राचा
दिसस्था कल्पा ॥२०॥ मंजु श्री पर्वतस्था
नुचर विरचितो मंजु शो भाख्य वैत्पः शान्त
गी निर्मितेषु प्रकृतवसतपे पंच देवा पुरेष्ट
॥ पुष्पाग्र वैत्पवर्षे तपकठ दनु पमं
यत्र शाख्य तुरारां कल्पा ॥२१॥ आधारा
स्य हृदख्य सगरा फनिपति विद्युराजा
तक श्व नागश्चानंदलोकेतः हरि हरि ही
पा हाख्य त्रैलोक्य वशी ॥ लोके श्वयादम

ल्लोत्तरे दनु सकलपाः शान्ति धो लोकनाथे
कल्पा ॥ २२ ॥ हे वज्र संबरो सौः सपतिजन
गरा चतुर्वीरस्तिलोकीः वीरो योगांबरो
सौः यमनिधनकरा द्यादशकोधराजा
॥ गुह्या बाह्या च सर्वेः प्रीतिमत् प्रमुखाः ना
म संगितिकारणाः कल्पा ॥ २३ ॥ शीर्षा
प्रागत्योसौः सहिन परिजनः वंद्य हरा
सिनादिं दित्वा शोषे कदेस्मिन् पुरवर
मकरोल्लोक बासा यरम्भ ॥ स्वस्थे भु
नाक्ष संस्थाः सकल जिनवरं प्राप्य जन्मैर्जु
नाथः कल्पा ॥ २४ ॥ सौखावत्पाश्च वैरा
दनु जनहितेः पातले प्रागमद्यः शान्तौ व
ग्राहदोषैः ललित पुरवरंः प्राविशदेव हूत ॥
स श्रीमान् वज्र पातिः सजठ धरद्वयः ग्री
व पार्थिङ्ग शोकाः कल्पान नीक्रिया सुकृन्नि
द पिसरतां तिष्ठ तां नो मिहंता ॥ २५ ॥
इति श्री कल्पान पंच विंशति स्तोत्र सप्तम ॥

(२७) वैरोचन महा बुद्धः
नमो बुद्धाय ॥ ॥ वैरोचन महासुद्धः वज्र
शान्ते महा वरते ॥ प्रकृति भास्वराद्ये

ष वज्र नमोस्तुते ॥ १ ॥ अक्षो भवज महा
शानः वज्र धातु महा बुद्धं ॥ त्रिमिराडल त्रिवज्रा
ग्रेः घोष वज्र नमोस्तुते ॥ २ ॥ रत्न राग रगाभि
र्यैः खवज्रा कास निर्मलं ॥ स्वभाव शुद्ध
निरयंः काय वज्र नमोस्तुते ॥ ३ ॥ वज्रा मैत्रे
महारागः निर्विकल्प खवज्र धृक् ॥ राग पार
मिता प्राप्तेः भाष वज्र नमोस्तुते ॥ ४ ॥ अमो
घ वज्र सं सुद्धः सर्वासा परी पुरिके शुद्ध स्वभा
व संतुस्तं वज्र सत्व नमोस्तुते ॥ ५ ॥ इति श्री पंच
तथागत स्तुति समाप्त ॥ ॥ ॥ ॥

(२८) पद्म चन्द्रा समासिन

नमो बुद्धाय ॥ ॥ पद्म चन्द्रा समासिनः
मध्य वैरोचनादिनं ॥ बोधि गिमिदसं गुरुः
स्वेतवर्ण नमोस्तुते ॥ १ ॥ पूर्व पहम शुभ्यं ध
पक्ष सवेग निलाभ ॥ वेने दाने रपनाभं अक्षो
भय नमोस्तुते ॥ २ ॥ दक्षिणे पूर्वम शुभ्यं
थं वतयास्मि करप्रभं ॥ वरद सर्व हस्तेन नमा
मि रत्न संभवं ॥ ३ ॥ पश्चिमे धर्मे शुभ्यं
यर्थः पक्ष शुभ्यं राग सन प्रभं ॥ ध्यान मु
दा धरं नाथः अमिताभ नमोस्तुते ॥ ४ ॥

उत्तरे पद्मे शुभं स्यामवर्णं भवप्रभ ॥
नमामि अमोघ सिद्धिः सर्वसत्वरिपु गति
॥ ५ ॥ इति पंचवृद्ध स्तोत्र समाप्त ॥ - ॥

(२६) **वृद्ध गीत**

नमो वृद्धाय ॥ ॥ कुराडन्दु पुष्प सैकासदेहाः
मत्स्य कमल सु सैत्थीताः सिंहमासन धर्म मुद्रा
नमामि श्री वैरोचन नित्य स्मरण प्रदक्षिणा ॥ १ ॥
उत्पल पुष्प सैकासे देहाः पुर्व कमल विराजिता
देहिमासन गृध्र से मुद्रा नमामि श्री अक्षयोन्य
मुनीवलं नित्य स्मरण प्रदक्षिणा ॥ २ ॥ सुवर्ण
गौर विक्काश मुर्ति घाम्य कमल सुसोनिता
वाजि वाहन वलद मुद्रा नमामि श्री रत्न सैत्र
नित्य स्मरण ॥ ३ ॥ वालार्क मण्डलमदेहाः पक्षि
पद्म सु विराजिताः वहि आसन ध्यान मुद्रा नमामि
श्री अमृताम्बर नित्य स्मरण ॥ ४ ॥ उत्तर पति श्री
स्याम वदना सप्त नाग सुसोनिता तार्क्ष
तालन अमय मुद्राः नमामि श्री सिद्धि दायक
नित्य स्मरण ॥ ५ ॥ इन्दु युग वसु वर्ष यान्ते
शिवराघुरा निसाकर चनेस्तत्रक्षे गुरु
वासरे विर विम श्री विर योग नरेन्द

मल्ल वृद्ध गीत ॥ ६ ॥ नित्य स्मरण नक्कीमानसा
शृंग गीत सहीता देह मेजय अश्व गु प्रताप
भायु आरोग्य सम्पद ॥ ७ ॥ इति वृद्ध गीत
स्तोत्र समाप्तम् ॥ - ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

(३०) **अष्टदल कमल ।**

नमो वृद्धाय ॥ ॥ अष्टदल कमलमत्स्ये
उद्भूत प्रकाशितं सिंह आसन धर्म चक्र श्री
वैरोचनमोस्तुते ॥ १ ॥ पुर्व दिग गज आसन
नील वर्ण सुसोत्रितं भूपसे मुद्रा ध्यान धारितं
श्री अक्षयोन्ये नमस्तुते ॥ २ ॥ दक्षिण दिग
अश्व आसन पित वर्ण सुसोत्रितं वरद मुद्रा
काचनाम् श्री रत्न सैत्र नमोस्तुते ॥ ३ ॥
पश्चिम दिग मयूर आसन रत्न वैल्ल विराजितं
ध्यान मुद्रा राय मुनिवल श्री अमिताम्बर नमोस्तुते
॥ ४ ॥ उत्तर दिग गरुड आसन स्याम वर्ण
सुनिर्मल अमय मुद्रा नाग सोत्रितं श्री
अमोघ सिद्धि नमोस्तुते ॥ ५ ॥ अग्नेयादि
वत् कोने चतु देवी सजता नोचना मामवि
तीरा देवी नमस्तुते ॥ ६ ॥ जिन धातु द्वा
त्रि सैरक्षरा सम्पूर्ण देव नमो पंचोपहार

पुजितं गन्ध मार नरपितं ॥१॥ चन्द्र
सूर्य वागिस्वर लोकेश्वर नमो नमः
गणपति महाकाल व सर्वदेव नमस्तुते
॥८॥ शशि गुरोव रोवटे श्री नेपाल
वदल आषाढ कृष्ण तिथी तृतीया
शुक्लवार संयुता ॥ इति बुद्धगीत ॥

(३१) सर्व सुधवर

नमो बुद्धाय ॥ ॥ सर्व सुधवर
सान्ती सुरनर सिद्धि साधक मन्दलं
सरोज दिनकर पैकज दशकलं दिव्य
माहित सुन्दरं ॥ १ ॥ वन्दिताभर मन्त्र
मण्डल वाङ्मुक्ति बहु धाधरं ब्रम्ह सत
मनु विष्णु नव शिव गार सर्व मनोहरं
॥ २ ॥ तनु नाहन सोनितं ननति विधि
भवत वल तत्र सैवर पैच जिन वन धर्म
व्यापित कलवलं ॥ ३ ॥ पद्म पानी पद्म
रोचत बाद पकज सोनितं पुसुरीक
माङ्गार कि नमक श्रीस्वरु सुगन्ध पुजितं
॥ ४ ॥ धर्म धारित धीर धृत भन ध्यान
रूप नमाम्यहं धुप गन्ध सुरत मलर्घ

मोहित जाति अहं ॥ ५ ॥ नक्त मराठुल नाव
भक्ती कपूरन्य सुगती गस वृद्धी दाघकं
पैच जिन वद वन्दनं ॥ ॥ इति बुद्धगीत ॥ ॥

(३२) बुद्ध रूप शाक्य सिंह

नमो बुद्धाय ॥ ॥ बुद्ध रूप शाक्य
सिंह इन्द्र धन विहारनं ब्रम्हा विष्णु
महेश्वर तोत्र विधित पुजितं श्री रत्न
चैत्य स्वयम्भु सरण चरणं नमामि
॥ १ ॥ सहस्र भुज लोकेश्वरं अनेग
देव व्यापितं तर लो जोनव ~~भक्त~~ अनेग
मनुष्यन पुजितं श्री रत्न चैत्य स्वयम्भु
॥ २ ॥ कालिजर मञ्जु श्री वेदित भुव
धो पिता ज्ञान्ती ३ पुरी स्वयम्भु
चैत्य देव स्थ श्री रत्न चैत्य स्वयम्भु ॥ ३ ॥
धुप दिप गन्ध माल्य अनेग मनुष्यन
पुजितं मुनि श्री न पाव नाव दारिद्र दुख
उधारनं श्री रत्न चैत्य स्वयम्भु व सरण
चरणं नमामि ॥ ४ ॥ इति बुद्धगीत ॥ ॥

(३३)

श्री स्वयं भुव
नमो बुद्धाय ॥ ॥ श्री स्वयं भुव कमल

उभय प्रनादी बुद्ध नभौ प्रभं च-
 तर युग पति धम्म धातुः विश्व भुवम्
 सुव्यापिता ॥ १ ॥ नमोस्तु २ बुद्ध धर्मे
 संघ शरणा समस्तकं ॥ ६ ॥ कलुख
 अगणितः नाग भवन्तुः धम्म धातु
 महा मुरिगा ॥ २ ॥ त्रि दश सुरपतिः
 ब्रह्म हरि हरः चक्रवर्ति महे स्वरं क-
 रणा कारिणि पुरा मासि अहोत्र प्रद
 क्षिरा ॥ ३ ॥ सरोज विकाशित पञ्च
 जित वल पञ्च ज्ञात स्वरूपी विभट
 फतिव सैकासं ~~के~~ कसरापुत्रं गगनस
 सीव राज्यते ॥ ४ ॥ महा पातक अनंत
 जमे म दुस्कृतं मम अज्ञाया निरय
 गमत नाश भवन्तु मोक्ष मार्ग सुगमते
 ॥ ५ ॥ इति बुद्ध गीत ॥ ॥ ॥ ॥

३४. आदि चरण वि श्री
 नमो बुद्धाय ॥ ॥ आदि चरण वि श्री
 पञ्च जितवर पञ्च सुगतिवी जगत
 मनोहर ॥ १ ॥ ॥ शान्ति पुरि पर-
 मेस्वरा तुम्ह बुद्ध सुमर निजो सर्व

पाप हरणे जरम जरम तुम्ह सुमरत
 हरणे ॥ ३ ॥ तिक्की दिन उत्तु पति
 पारिता देव तेति स्को ति देव सर
 नागत धरिया निपाट भुवन मये
 मराडल विज्याक सान्न कोन म रूप
 धत्र ध्वज द्वास्थ काय वाक नित श्रीसुर
 कब क्रुते ॥ ४ ॥ स्वयम्भुव रीस्वर्गज
 सैस्ति देव विविद्या उपहार पञ्च
 पुजिया दसत पाप विनासिता ॥ ५ ॥
 शान्ति पुरि परमेस्वरा ॥ ॥ इति बुद्ध गीत ॥

३५. विमल किरल

नमो बुद्धाय ॥ ॥ विमल किरल
 आहा काम सित मध्य वेरोचन
 धवल वदन प्रनमामि पञ्च तथागत
 अहो रात्र प्रदरिवर्न व्रत सुमगर
 प्रदायकं ॥ १ ॥ ॥ पूर्व अक्षय्य भू कृष्ण
 वर्ण गज आसत देव ~~वर्ण~~ मुरति ॥
 ॥ २ ॥ दक्षिण रत्न सैत्रव पिल वर्ण
 मुरंग आसत देव दक्षिण मुरति
 ॥ ३ ॥ पक्षिम अमिताभ रत्न वर्ण

मधुर आसन देव पश्चिम मुरति ॥ ४ ॥
 इतर अमोघ सिद्धि स्याम वर्ण गरुड
 आसन देव इतर मुरति ॥ ॥ इति बुद्ध गीत ॥

(३६) मध्य दिग्गस्थित

नमो बुद्धाय ॥ ॥ मध्य दिग्गस्थित
 वैरोचन मुनीवल सुक्र वर्ण सिंह आसन
 ॥ १ ॥ देवासुर नर पुजित चरने प्रणमामि
 सुगत पञ्च प्रजावा प्रदक्षिण जात्रा सुमंगल
 ॥ २ ॥ पूर्व दिग्गस्थित अक्षोन्न मुनिवर कृष्ण
 वर्ण गज आसन ॥ ३ ॥ दक्षिण दिग्गस्थित
 रत्न सैन्य मुनिवर पित वर्ण तुरङ्ग आसन
 ॥ ४ ॥ पश्चिम दिग्गस्थित अमिताभ मुनिवर
 रत्न वर्ण मधुर आसन ॥ ५ ॥ इतर दिग्गस्थित
 अमोघ सिद्धि मुनिवर स्याम वर्ण गरुड आसन
 ॥ ६ ॥ इति बुद्ध गीत ॥ . ॥ . ॥ . ॥

(३७) सरस मध्यवर

नमो बुद्धाय ॥ ॥ सरस मध्यवर चैत्य
 निवासित आराधन तत्पर चलित प्रजावा
 विहित मम समु कर्जज दुरिता जिन
 जिन गलित जल स्वविकं पठलं धवनेय

मोक्ष गति कामना ॥ १ ॥ अतुल धर्मोदय
 राशि सैन्य पञ्च जत रत सकल विज्ञाना
 ॥ २ ॥ मुचवतालदि सासत करुणित धर्म
 माग दितय नावना आला ॥ ३ ॥ इन्दील
 प्रवीन सकल सक कोसारिका मोक्ष प्रद
 न कुजन अविवादिता ॥ ४ ॥ इति बुद्ध गीत ॥

(३८) चामकला वलिमरी

राग जति ॥ ॥ नमो बुद्धाय ॥ ॥ चाम
 कला वलि मरी मुकुता वलि विलि चित्र
 विविधित रत्न विमुसित ॥ १ ॥ रौरव
 नयं करहर करुणेश्वर नर असुन्नासुर
 सेवित चरणा ॥ २ ॥ जिर्जक प्रेत सुकपी
 मुन मारनकरुण हृदय दधि सागर
 विदिता मर नयन विकासित कमरा
 मुख ॥ ३ ॥ रोहित वर्ण सुरालित तल
 चरक ॥ ४ ॥ हायन नाग कुल विशिखाग
 मांसि माधव सि तिची जल नासन

(३९) मध्य वैरोचन बुद्ध

नमो बुद्धाय । मध्य वैरोचनो बुद्ध मध्यसर्मत
 मद्रक मध्यसी हाशन पद्म स्वतवरी नमस्तुते

॥१॥ पुर्वे अद्यो भ्यसंभववज्रपानी महाबलः ।
 गजवाहनसंपुरो नीलवर्जनमस्तुते ॥२॥ दक्षी
 नरत्नसंभवरत्नपानिमहातेजा ॥ तुरंगवाहन
 संपुरो पीतवर्णनमोस्तुते ॥३॥ पद्मे म अमीता
 भवः पद्मपानी कृपावर्त ॥ मयुखाहनसंपुरो र
 त्तवर्णनमस्तुते ॥४॥ उत्तर अमोघसंभवः वीश्व
 पानी वीद्याधन ॥ गरुडवाहनसंपुरो स्पामवर्ण
 नमस्तुते ॥५॥ लोचना मामकीता एः पान्दराय
 नमस्तुते ॥ वज्रसतो समाध्या न धर्मधातु नमस्तु
 ते ॥६॥ इतीर्षं च बुद्ध भट्टारक स्पवागि श्वस्तोत
 समापनं ॥ १॥ ॥ नमो बुद्धाय ॥ पुरो कला
 नीधिं सीतीत देहं मृगपत्न्यासनयोगादध्यानं
 ॥ वन्दे सुगधीप श्रीवैरोचनं श्रीधर्मधातुमहं
 प्र नमामि ॥१॥ इन्द्र नीलद्युती भास्कर कार्य
 दन्ती समारुह भुपसमस्तं गौभी श्री अक्षो
 भ्य जीर्न नमामी श्रीधर्म ॥२॥ ॥ वाजीवरास
 न चामी कराभं लोकवर प्रदया मम धीसे ॥
 वन्दे श्रीरत्नसंभव नार्य श्रीधर्म ॥३॥ पद्मराग
 नी भवस्त्री मदी संध्या न मुद्रासन मयुरास
 ॥ नमस्तु श्री अमीता भव नार्य श्रीधर्म ॥४॥

तार्जोसना फनीलंकृतस्पाममुत्तरा संमती ममय
 करे श्री अमोघसीधो जीर्न नमामी श्रीधर्म ॥५॥
 सर्वदेवालय श्रीवज्रधातु सुधन भुप मवी स्वप्ना
 पीत ॥ त्रैधातु संभव वागमदी संध्या धर्मधा ॥६॥
 इस्तं मयाय वाग्भुत पीतं मजन्म दुखा खराजोत
 रक्षाम सो मुनीन्द्र ॥ सुधमे वा सुधमे वक्षो तु मोद
 भी बोधी मुधो हज्जिन सीतीत रक्षाम मुनीन्द्र
 इति श्रीधर्म धातुवागीश्वर भट्टारक स्फोरत्न पुतो
 जोती स्तं समपतम ॥ ॥

(४९) बुद्ध बुद्ध सुगत मुनी नमो
 नमो बुधाय ॥ ॥ बुद्ध बुद्ध सुगत मुनी नमो ध
 मैत्रयोदस भुवन नाथा ॥ सत्त्व संसार उधार नदा
 ता बुद्ध धर्म संघ देवनमस्ते ॥१॥ बुद्ध वैरोचन
 वीश्वरूप पीत माहा वैरोचन देवनमस्ते ॥ ज्यो
 ती मर्य चैत्य स्वयम्भु मुनीन्द्र बुद्ध वैरोचन देवन
 मस्ते ॥२॥ अमीता भमयुरासन मुनी ध्यान दृस्ती
 भुमुनी अमीता भनमः पद्मपानी अभय वरदाता
 बुद्ध वैरोचन नमस्ते ॥३॥ वीपस्वी सीखिवी
 वभुवमुनी कारु कृद्वर कनक मुनी नमः ॥ कास्प प
 श्री साकेसि ह मुनीन्द्र बुद्ध वैरो ॥४॥ मज्जु श्री

ज्ञानसत्त्व उधारन मैत्री बोधी सत्त्व नमस्ते ॥ च
 द्रमदल सुज्यै सुतेज बुधवे ॥ ५ ॥ ब्रह्मावीर्य
 रुद्र महेश्वर देव इन्द्र मयामुनीपुजी तपो दौ नागा
 सुरनारुद्ध सारन बुधवे ॥ ६ ॥ गन्धर्व गारुड मुनी
 चरन राग द्वे स मोह नास नमो क्षा ॥ दारिद्र्य दुरव
 वीना स नारुद्ध बुधवे ॥ ७ ॥ इति बुध भट्टार
 कस्यो वीली धन कर्त बुध धर्म सद्यस्तो वसमा
 पूर्ण ॥ ॥

मानदाय सुगत दासया संकलन
 आशां तद्गुणियात उपहार !

मानदाय सुगत दासया संकलन
 आशां तद्गुणियात उपहार !

(50)

(50)

15

10

5

0 cms.

5

10

15

20

15

10

5

0 cms.

5

10

15

20

15

10

5

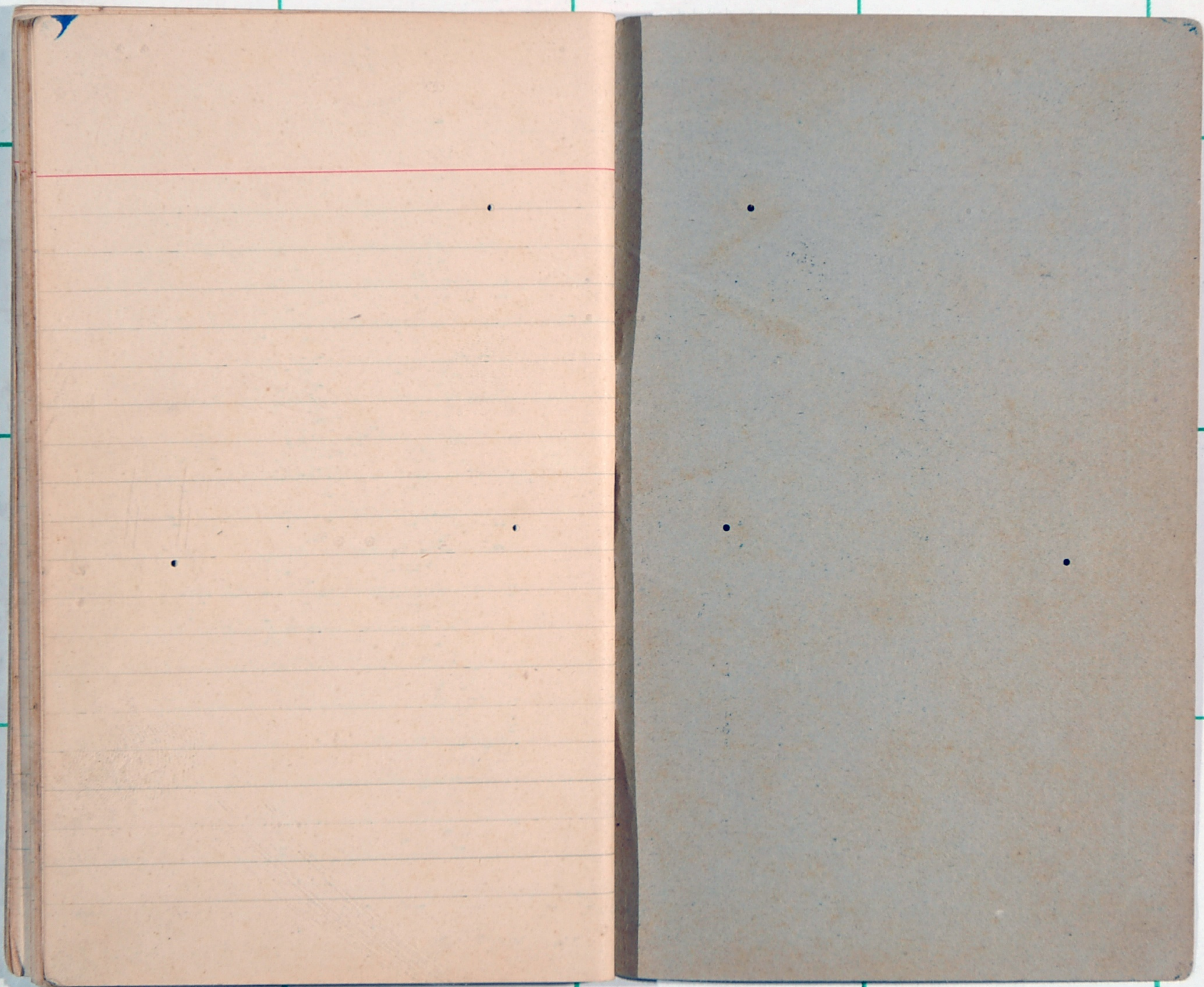
0 cms.

5

10

15

20



1934 CALENDAR 1934

January				February				March			
S	...	7	14 21 28	...	...	4	11 18 25	...	...	4	11 18 25
M	1	8	15 22 29	...	...	5	12 19 26	...	...	5	12 19 26
T	2	9	16 23 30	...	...	6	13 20 27	...	...	6	13 20 27
W	3	10	17 24 31	...	...	7	14 21 28	...	...	7	14 21 28
T	4	11	18 25	...	1	8	15 22	...	1	8	15 22 29
F	5	12	19 26	...	2	9	16 23	...	2	9	16 23 30
S	6	13	20 27	...	3	10	17 24	...	3	10	17 24 31
April				May				June			
S	1	8	15 22 29	...	...	6	13 20 27	...	...	3	10 17 24
M	2	9	16 23 30	...	...	7	14 21 28	...	...	4	11 18 25
T	3	10	17 24	...	1	8	15 22 29	...	...	5	12 19 26
W	4	11	18 25	...	2	9	16 23 30	...	...	6	13 20 27
T	5	12	19 26	...	3	10	17 24 31	...	...	7	14 21 28
F	6	13	20 27	...	4	11	18 25	...	1	8	14 22 29
S	7	14	21 28	...	5	12	19 26	...	2	9	16 23 30
July				August				September			
S	1	8	15 22 29	...	...	5	12 19 26	...	...	2	9 16 23 30
M	2	9	16 23 30	...	...	6	13 20 27	...	...	3	10 17 24
T	3	10	17 24 31	...	...	7	14 21 28	...	...	4	11 18 25
W	4	11	18 25	...	1	8	15 22 29	...	...	5	12 19 26
T	5	12	19 26	...	2	9	16 23 30	...	...	6	13 20 27
F	6	13	20 27	...	3	10	17 24 31	...	...	7	14 21 28
S	7	14	21 28	...	4	11	18 25	...	1	8	15 22 29
October				November				December			
S	...	7	14 21 28	...	...	4	11 18 25	...	...	2	9 16 23 30
M	1	8	15 22 29	...	...	5	12 19 26	...	...	3	10 17 24 31
T	2	9	16 23 30	...	...	6	13 20 27	...	...	4	11 18 25
W	3	10	17 24 31	...	...	7	14 21 28	...	...	5	12 19 26
T	4	11	18 25	...	1	8	15 22 29	...	...	6	13 20 27
F	5	12	19 26	...	2	9	16 23 30	...	...	7	14 21 28
S	6	13	20 27	...	3	10	17 24	...	1	8	15 22 29

22

सुतसिद्धि

SWAN DIARY

जान दायनि



Class

Subject ST-जा साउ पुशक

1111

3

8
10

(७५). अरुण सम विशाल

राग ॥ ॥ ताल रूप ॥ ॥ अरुण सम
विशाल नयन जगत उद्यारन निर्मल
देह श्री-लोके श्वर नैमिषाद पद्म ॥१॥
षट्गति तारन भय दुःख हरतं काहती
मातसं श्री-वृगमेश्वर ॥३॥ . ॥ . ॥

(८०) वदर नेपाल मुनि दुर्गा.

राग ताटक ॥ . ॥ दुर्गा मात ॥ ॥ वदर
नेपाल मुनि-दुर्गा सागर सैजुला मधु
मास सुक्ल पक्ष दशमितिथी विरचित
श्री-निवास मल्ल पुत्र सहित ॥१॥
स्वकारण विधा दिपं मात समपित
लोकाताय इस्तदेवतां स्वामि प्रनुकामुता

(८१). अम्बु जलं नयादि

राग मलार ॥ ॥ ताल रूप ॥ ॥ अम्बु
जलं नयादि इष्ट श्रीत तोत्र पथिता
पुजिया श्री वृगमेश्वर ॥१॥ द्वादशे
वदर अनाव दिप श्रेन्दुना विज श्री-
लालिता पुरि रघु चक्रम जात्रा श्री-
वृपति जात्र परिजत नगवति मातसा

मानदास सुगत दासया संकलनं

आशा सकू-कथियात उपहार !

॥२॥ विविधि बहु उपहारा दत्त ध्वज
परि जितां पुजिया श्री भुमलोकेश्वरा
॥३॥ तुलसी मस्त धारी वद्ध रागं
स्वर्ण प्रनास्व वित स्वस्त सैश्याम
भुमो विचरं धृतासि नातकमुक्तकि-
ल काश्यपेन ॥ ॥ ॥ ॥

(८२). कमल पारणी परमेश्वर
राग ललित ॥ ॥ ताल ॥ ॥ कमल
पारणी परमेश्वर देवाति देव गण
पुजितः ॥ १॥ आहा जगत नाथ गनेश्वर
चरन दर्शन पाप नाशन आहा जगत
नाथ कुरु रोश्वा ॥ २॥ ॥ ॥ ॥

(८३) लोक नाथ जगदानन्द
राग ललित ॥ ॥ ताल ॥ लोक नाथ
जगदानन्द मुहूर्ति रौरवादि निहित
भासुर जाति ॥ १॥ कुरु मृतप
श्री लोकेश्वर सिर सामन्त धारि
पाद पम ॥ २॥ कनकान्न ओवा
ति कुरु रोश्वा कमल यहा नक्ष
मकुरु देहा ॥ ३॥ नामा जात गिर

तट विद सिता लोक नाथ सह चक्रे सहस्तं
॥४॥ भातलक्ष ~~अथ~~ कमल मुपम फलाद
धापयमे शुभ मेदि वोधि पदं ॥ ५॥ ॥

(८४). कमल मति सैत्रव

राग ॥ ॥ ॥ ताल ॥ कमल मरणी
सैत्रव जगत हितार्थ नव सिधुतार
न केसि धर्म ॥ १॥ प्रनमामि दयामय
श्री लोकेश्वर निर्मल निषिर लक्षणा
भुमि अमितान्न कुल मृत सभो रि
धरं ॥ २॥ सुरा सुर नर सहित जोति
प्रनास्व नारक दानव वोधि प्रदायकं
॥ ३॥ नो मि नि एत पारणी भयहरणं
चरणा पैकत पुण्य सिरे नमामि ॥ ४॥
ललित पल्लव महि पति श्री नीवास
अव वन्हिरवनग मधु मास रत्न श्री
रचिता ॥ ५॥ ॥ ॥ ॥ ॥

(८५). आदित्य मण्डल

राग मल्लार ॥ ॥ ताल ॥ ॥ आदित्य
मन्दल कमलासनचा अयमकमल
निरु लुच्य ॥ १॥ नमामि श्री लोक

नाथ वोधिराज दहिन कमल पद्मकर
मुद्रा ॥ २ ॥ वाम कमल सैजुत अनय
मुद्रा ॥ ३ ॥ विज मणी कुन्दल स्व नितकता
नाता हल परि वित कता ॥ ४ ॥ जिन
राज सुसित जता मकुति व्याधु चर्म
वल प्रधा वित कति ॥ ५ ॥ सुरासुर
नर वन्दित चरना सर्व मानक गरा
हरणा ॥ ६ ॥ सर्व लोक हित श्रीगुरा
स्वभाव जगतीन्द दिपाले स्वभाव ॥ ७ ॥

(८६). चतुरध्यात कोटि पातग
राग मल्लार ॥ १ ॥ ताल रूप ॥ ॥ चतुद
ध्यात कोति पाटग देव चिन्ता मणी
रवि गुराधि श्री लोकेश्वर नौमि
पाद पद्म ॥ १ ॥ विविधि सहत् सतव लोम
निवासित कथ मिह मे पत विरुप अन्त
॥ २ ॥ लि वि हित तब लोर जात्रा सुर गरा
सिधि जोगे फलि गरा युता ॥ ३ ॥ कपरी
दिन सेवित श्री लोकेश्वर अर सरोज
नौमि श्री बुगमेश्वर ॥ ४ ॥ मेहेन्द
श्री जोगलेन्द मल्ल विजय तुमुन

लन्नु विविधि मङ्गला ॥ ५ ॥ अब धव
सुधर मङ्गल सहिता कुलिस धादित
लन श्री विर चिता ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥

(८७) नवावत वादितय

राग मालव ॥ १ ॥ ताल रूप ॥ ॥ नगवत
वादितय वनीलज लोचन इन्द्र वरुण वर्म
धोरेन्द किरण मुनि वन्दित चरणा ॥ १ ॥
श्री जयलोके स्वत जन्म तारना सुकृत चिन्ता
मणि दुष्टित दरना श्री जय लोकेश्वर
नौमि चरणा ॥ २ ॥ सरा जला नयति वा
राग मन्द भुवत मन्दल प्रतिद्वि दरना
दुःख जमत ॥ ३ ॥ सह सकिरण समसत
समान किरणा प्रति अष्टमि अर्चन
प्रभु वरुण ॥ ४ ॥ नेपाल हायन श्रुत कि
पितर उद्य चतुन कारना शावरण सहीक
वन्दित चरणा दुर्गा तिहो ॥ ५ ॥ ॥

(८८). कापुतरन गरस.

पञ्च राग ॥ ॥ ताल रूप ॥ कापुतरन
गरस आराधिया गमने सिद्धा जोगी
वन्दु दततरेन्द देव नमामि श्री लोकेश्वर

त्रिभुवन गमने कहरा मय जग सरदने
ते ॥२॥ ब्रम्हा हरिहर इन्द्रादि लोकपाला
नाग असुर यक्ष गत पुजित चरणा ॥३॥
रक्त लत्र हर देव गमने ज म सन्दासन
स्थतु कहरा ॥४॥ ब्रम्हा स्मरने पाप
हरण व्याधि दुःख दारिद्र्य हरण ॥५॥

(८६).

नमो लोकनाथाय ॥ १ ॥
लोके स्वर्ग विमल शुभ्य कृपा
करिक्त मार्ग इत्यायु चित्त
देश नथाय वान्च सर्व स्तान
स्थियु पुल्लु विष्णु च देह न्दाल
चित्त लोलित श्रीरसा नमामि
॥१॥ चैते यन्नेद सखा ननु
धाव भासे रेको पिद्या तिस
गले पु ललि वयस्मात रस्मिन्
न्य है पर दिमा तुग तेव तस्मा
र वृ धि स्व हो परम विष्म
त्रिय हपा ॥ २ ॥ सपुर्ण
चतु वदने लालिता ललाते

देला द्विर्मित महेस्वर देव
पुत्रा वैनेय सान्नाय विज्ञाप
वैद्य नाथ देवान्ति देव मति
मो न जमी ~~स्व~~ रत्न ॥ ३ ॥
वैनेय कामल सुवा प्रति वैद्य
नाथ स्कन्धात सुलक्षित मह शुभ
लक्षणा न्ते निर्यात नु वृद्धि
यिता मदावर पुतु लोकेश्वर
श्चर चर सिरसा नमामि ॥४॥
वैनेय विष्णु वद्रात प्रति वैद्य
नाथ र जीव पारणी इदया प्रवि
निति सिलोसो नराय जो दुयि
मुव ने श्वर नुव तस्मात
पु र्नात्व मेषपर मात नुव
नान्य ॥ ५ ॥ चन्द्रार्क सौख्य लव
लादित मन्त्री भाजी स देश
नाथ मन्त्रि- निर सलो चन ल्या
यत्नी सूतो नतिर विनु विस्ते
वनानी स्वकात रात तमस्त
नमई नमामि ॥ ६ ॥ सारस्वत

विनायक योजित भक्ती भाजा
 धौचायु वे भगवति हस्त ~~का~~
 स्वतिथि दृष्टान्त नृत्तव विनायक
 नमः प्रसुखा प्रज्ञा निनायिका
 दत्ता भद्रा नमामि ॥७॥ वेनु
 वायुवति तालजल मार्गज सिद्धे
 पे लोक नाथ मुखवत्ते ~~ध~~ श्रीश्रीतो
 मोदेव समीरनवर्णे भुवीजतमभाजामी
 ज्योत्स्नाय पलदेतमहे नमामी ॥८॥ वेने
 यवाहन सीवाय नमी सीतार्णवो धनार्थ
 मुद्रा सुगतात्तमजस्यो म्पनिमतो वलन
 देव वलोक्य कस्माद्देसो ज्येष्ठी फलदे सत
 र्त्तनमामी ॥९॥ वेने समहत् फलादे भीला
 सीती वे स सीधय प्रवल रक्षेन पादपद्मा
 य ~~श्री~~ श्रीश्रीतो भगवति धरणी प्रसिद्धते
 लोके नाथ मसर्मतमहे नमामी ॥१०॥ ससा
 रयुक्तमपी सुस्थीत सेवत र्त्तका हने तस्थ
 भवे च ~~रु~~ र्त्त सर्वमा ~~रु~~ भायात्स्थीतिरुम
 मस ~~रु~~ स्थीरमा भवन्तु यवमा ~~रु~~ सयपद

परमनामामी ॥११॥ येकेन पादतले केन भव
 स्वकेन चाक्रान्तम वरमनंतरलोफघातु ॥
 कल्पान्तदग्ध भुवनैजोली तोयवनिनी
 रचास वायुवरतस्तव नीरव्रीत स्या ॥१२॥ सो
 मतरु जने मुखधृता हीततर्जने नसीचासी
 ता स्ववहु मेरुगना मगस्यान ॥ को स्यो धृता
 जलधृतो ग्रामस्य सतस्यात् सामर्थ्यमीदृ
 समहो भवतकुतो ने ॥१३॥ के र्दे च सही सवप
 र्निनी चारुप सैर्दसणि यवरको मलवाल
 चन्द्रदुहवारमा मथारी चभयैकरोर्गवी
 स्कात दुसहपार को वतस र्थीर्त्तते ॥१४॥
 यसाच ताजननी भो रुजता वरीमा को
 तीले चारुवीकता सो सीरो रुहाग्रा ॥ के
 र्त्तधने जौली तवी स्फुल्लितत्ववने ~~धु~~
 मा बलिववी मलात नुरक्षेर्त्तते ॥१५॥ ~~स्व~~
 त्कर्त्तलीले सवी मलाद सदी क्षोताने यक्षा
 सीताक्षय कृसासकला मुसीभा ॥ पुजे न
 इस्तससी नो भुवनै श्री युक्तनमने वीराजी
 नीवीलतवर्त्तलीले सत ॥१६॥ वीदुय

कुरसंजी नृसंमर्तमर्तनो नरायणो हीत
 संपूर्णपथ ॥ परार्थसं पाहीत सर्ववर्त
 नमामो भुमीश्वर ॥ जीर्णजीर्णम १७ ॥
 गमस्तीमालामीतसं कुलकुलैततसुपा
 नोधीतपंकजैकजै ॥ रक्तानुगासाहीतसं
 तैरतनमामो भुमीश्वरजीनंजीन ॥ १८ ॥
 अपीतोनीवारा भवस्थीतस्थीत प्रभाध
 र्थास्थीतसं हीतहीत ॥ १९ ॥ स्मैकपासेम
 जरासीवसीव नमामो भुमीश्वर ॥ १९ ॥
 स्वधर्मध्वानु कुरुनापपरं सुभावीसं भावसु
 नं धुभुतं भुतं गीकल्पहीनं धोनीदेसं
 केसके नमामो भुमीश्वरजीनंजीन ॥ २० ॥
 तथातथातद्योयसांतसंतसततपरीपुरीत
 धर्मकथनीयवीराजीतसत्येपदप्रश्नेधरमे
 निस्वरराजवर् ॥ २१ ॥ वर्तनीजगदीजगद्य
 सदैसरसीहृलोचनधारुतहं ॥ तनसाखि
 लसत्त्ववीसुधीपरं प्रनमेश्वरधरनीश्वरय
 जवद ॥ २२ ॥ वरनीमीतभोगपरार्थरुत
 तरसुनेनीरंजनधर्मधर ॥ धरनीन्द्रवीर

बोधीतसीधोपरं प्रनमेश्वरनीश्वरराज
 वर् ॥ २३ ॥ वरसं सहयोदधीर्वन्दुमुखं मु
 खभासीतसर्वनीरुक्तीपदपदभुतनलक्ष
 नतानुपदं प्रनमेश्वरनीश्वरराजवर् ॥ २४ ॥
 लोकेश्वरायस्तवरत्नमालामचीकरस्थीवर
 रत्नपादअपापीयेतेनसुभंघवीर्वतेने
 वलोकोस्तोसमंतभद्र ॥ २५ ॥ इति श्रीम
 दार्यावलोकितेश्वरस्योत्तममालास्तवस्तो
 तसमाप्ते ॥ ॥

(२०)

निधीचोत

जमोलोकाव्यय ॥ ॥ अमितसर्व
 पद्मपत्रा यताक्षं पुरितकृतविनासं
 मोहमाया हितार्क्षं काधृतकृतक्षं
 लोकपालेकदक्ष ॥ परामितसिरसा
 नीमीतलोकध्वानं ॥ १ ॥ असुरावतरा
 सौमं बोधिज्ञानहेतुशरीमयमकृत
 ससारकां मोदिसेतुमनसिजहृत
 तार्क्षं बोधिस्तत्वादिदेतुं ॥ २ ॥
 सरसिजकृतकालदुरकंदर्जयासं
 मुदनादगुजासपुराचन्द्रप्रकाश

मुकुटजन विलासं कोटि सुधा
 कथासं प्रणामाभि ॥ ३॥ इति विहित
 नाथ मोचिता लोसराग अवजल
 धि विभाग मोक्ष सौख्यक मार्ग पत
 पीत कलकागं कोटि बोधाकागं
 प्रनमित ॥ ४॥ जिन वर सुत रत्न
 मुक्ती भारा विराज सुल लित कला
 राजा कुर्वित्ता चा मिलज प्रमुदित
 वलिज पालिता मर्त्य राज ॥ ५॥ धृत
 मधुकर रूपं क्षुप्ती या सार्तक्य
 सुचरित ह्य रूप सिद्धना दत्त मुप
 अगुल सुभी धुपेक्षा लिता लस रूप
 प्रणामित ॥ ६॥ श्रीवृध विधुवयेपु
 मोह हृत्ते गुतापुं प्रतिदिन नितीजापुं
 देव चक्रे विलापुं मिय अय कलापुं
 भेदया ज्ञान चापुं अत्र हि ह्य विलापुं
 मां कृपा राज यापुं विदित दुःखनाथ
 मुक्ती तत्त्व द्य तपुं ॥ विगलित
 कल साग मुक्ती पुत्रा तताना वल
 कुलन समुह सि प्रमोद सौमन्य

अतदिदृष्ट ॥ ८॥ प्रवर सुगत रत्न
 धर्म काय ससिद्ध सररा मिह वजामि
 कालिता नगर्गं प्रमुदित मन साह
 वेधि च लोनेक जल अवहि ॥ ९॥
 दशवल हृतसिद्धि सदच बुधवेधि
 जगत् मारा नितो मा पासा विनी
 मनसी मलिन पूत्य पुरिता ज्ञान
 चिता अवहि ॥ १०॥ श्री लोकात्म
 चरतां ज्ञान मुक्ती पमं विधुस मन्द
 चिता नित विष्ट राम सप्ता विद्या
 चता पत्ता ईर साति हृद्य सौख्यपात
 जमत मार्ग कमस्तु मदेहा ॥ ११॥ तुल्य
 यम धर्त गुरु मुनिवत् सर्वार्थ सिद्धी
 पदं पुण्य यश मुमाजितं वन गुत
 सुन्य न सोखावृति श्री लोकास्वर
 पादपंकज रसोलोसेकं श्री पौदिता
 लोककेश कल सुकुटुजाय वल जित्वा
 प्रमुत्कामल का १२ ॥ इति श्री मदाया
 कला विदितेष्ट मतारकस्य सप्त
 विद्यानन्तर पुजा स्तोत्र समाप्त ॥

(९१) प्रभव त्रिधकारणा

राग ललित ॥ तार एक ठान ॥ प्रभवति
 सत्वधकारणाः तिदश भुवन पालि
 वंदिता ॥ भवभय तारणा ज्ञान प्रका
 सितः वल द्वादश अम्भ स्वरा ॥ जग
 दा धाल न जगजन पूजितर अनुत
 लषत गति तारणा ॥ ॥ अहमहा
 भय नासन सत्वभवतंगीकः विश्व
 भवपदः दानपदाताः विश्व पञ्च नि
 रालय ॥ ॥ दुरगसम्भव भासित
 वदनाः जल जम्माहि धर मुभव ॥ अमृ
 ताभ जित वल मौलि विभूषित वि
 श्व अवन विश्व व्यापिता ॥ ॥
 सकल माल वल भंजनं देव कृत
 पुता जित ॥ मानस वाङ्मय कायत
 दूरव कलुरव हरसा कलु रो श्वरः जग
 दा ॥ ॥ अवजतो धिर्युग सायकः
 सकल भगति जन प्रेपिकः शीलो
 कैश्वर गीत भनिता सावन धिल
 यसुख संपद ॥ जगदा धालन जग
 जिन पुजितर अनुतार स्वत गातिता

ररां ॥ ॥ दोहरा - निके.

(९२) नेपार महादल कमर
 रागताठ ॥ तार दूजमान ॥ नेपार मरादल
 कमर स युता २ अवपमर शुभय प्रदा
 ता ॥ नमामि श्री लोकनाथ तिभूषो
 यश्वर ॥ ॥ दहिने कल पभवर
 य दाता २ वाम कमर युत शुभय प्र
 दाता ॥ ॥ रत्न मति कुदल करी स्वा
 भाकि २ नाना रत्न मनिद्वैर वज
 सहिता ॥ ॥ मनिगार मगल प्र
 जा प्रतिपार २ शीयोग नरेन्दु मल्ल
 देव सहिता ॥ ॥ धर्म ॥

(९३) अमलगहननाथ
 रामनाथ ॥ ॥ अमलगहननाथ श्रीक
 रुनेश्वरः कय विनामनि विभूषो प्र
 ॥ तिदश भुवन पालि श्री बुग मेश्वर जग
 जन तारणा मेध प्रदाता ॥ ॥ ईदु
 सीर फनि कुदल वाद्य चम भूषित
 श्री अमिता भूषो मारी धल ॥ श्री वज
 दत गुरु नले दु देवकी नियः करुनाम

लधि ज्योला अभय पदाता ॥ ॥ नमः
न इदु नाग जिन नम पार बहल माध
वे सु सुत्र पञ्च गीली जाति धि ॥ ध)

(६४) जय सिद्धि सुरा सुर लोक गुरु
नमो लोक नाथाय ॥ ॥ जय सिद्धि सुरा
सुर लोक गुरु कमला सन सलीत पाद पू
गा ॥ दश पार मिता दिग पञ्च करं पुरा मा
मि सदा वर कारुणिकं ॥ १ ॥ बह्वैति
मरा धि परं च वरं जय सुस्थीत सुस्थीत नाथ
मुनि ॥ भव सागर पारग नाथ करं सरना
गत सत्व हितार्थ करं ॥ २ ॥ कमलासन वा
रु सरूप धरं प्रमिताम तथा गत मौलि ध
रं ॥ कमली ज्योला भूषित गात्र वरं नव
भास्करं शोभन दिपकरं ॥ ३ ॥ ॥ मु
कुताम नखौ गुलि शोभ मुखं शशी
विवंसम प्रभ सौम्य मुखं ॥ पडं भि शगु
नाकर वैदित नुवर सूक्ष्म नैपुण्य दारपु
गं ॥ ४ ॥ मरिगा कुण्डल मराडी गण्ड
पुगं घन गजित तुल्य गुंभिर स्थलं ॥ गीरी
गहोर पोत निवासितर वृषवादा मर्दस नृ

मैन्दु गतं ॥ ५ ॥ ॥ त्रुषिदेव गराग धिप
स स्तुतिकं जिन रूप धरात्मक वीधि ध
रं ॥ द्विपदोत्तम नाथ सुराधिपति मलय
जिरि च दन धुप रसिं किं तद्वत् जल
पातलि दाम धरं पुरा मा मिह जात
लि दाम करं ॥ ७ ॥ ॥ ज्योला रोग धि वै
जित कुष्ठ दूरं बहु वीधि मना धन
भद्र धर्त ॥ भव दुर्गति नाशन मार्ग
दय करुणा तथा त्वां द्वय विश्व जीत ॥
८ ॥ इति श्री ज्ञाना वल्लोकि तैत्तिरीय
ह्यस्त्य पोतर कास्तव स्तोत्रं समाप्तं ॥
(६५) नमामि जिन नाथाय
नमो लोक नाथाय ॥ ॥ नमामि
जिन नाथाय नित्य नित्य विधारीणौ
॥ निरवय विशालाय निर्विकल्पाय ते
नमः ॥ १ ॥ मोक्षं दत्वा यते मोक्ष
मोक्ष सोख्या पदेशकं ॥ महारण्डल मद्य
स्थं मोक्ष दाय नमो स्तुते ॥ २ ॥ लोल
वर्दप पासाय लोके साय महामुने लोक
रक्षाय देवाय लोक वन्द्याय ते नमः ॥ ३ ॥

कनका चल मध्यस्थं किन्तरे रूप पद्मकं
 ॥ किंति हतो समाधिं कांति महाहृतं
 ॥ ४ ॥ नागा मन्त्र समायोग नागाभरण
 धारिते ॥ तिर वेद्याय बुद्धाय बोधि
 दाय नमोस्तुते ॥ ५ ॥ स्वन रक्षा कृता
 धिसं स्वन त्रैम पुपोलकं लोचनना मामकि
 तारा पान्दराय नमोस्तुते ॥ ६ ॥ निक्षु
 रानां सहस्रानि निक्षुरक्षा यते नमो ॥
 श्लोकास्तव मिदं पुराणं किंति हतो
 समाधिप ॥ ७ ॥ यक्ष राक्षस वेताल भुजंग
 भय मोचने ॥ अमिताभ विरिताय सिद्धि
 दाय नमोस्तुते ॥ ८ ॥ इति श्री मदार्या
 कलोदितेश्वर भक्तारकृष्ण सप्ताक्षरं
 स्तोत्रं समाप्त ॥ . ॥ . ॥ . ॥

(५६) सर्वसुरासुर वन्दे विभुत
 नमो लोका नावाय ॥ ॥ सर्वसुरासुर
 वन्दे विभुत ज्ञान मनाहर आवित चित
 ॥ मोह महानिब सो सन दक्ष श्री
 जिन पाप दराय नमस्ते ॥ ~~क~~ वाल
 दिवाकर कांति सुवरा रत्न विनिर्मित

कुन्दल कर्ण प्रारणी गता इविल संचित
 श्रेष्ठः श्री जिन ॥ २ ॥ सेवक वत्सल
 निजितमार्ग सर्वसिरोमणि बुद्धित पाद ॥
 पोसन पर्वत देव निषाद श्री जिन ॥ ३ ॥
 स्वर्ग नदि जल द्योतक पाद निर्मल
 निश्चलति निप्रिय सान्त व्याघ्री सहस्र
 विनाशन वैद्य श्री जिन ॥ ४ ॥ अर्क
 ईश्वरपाय क्षिति तेज आत्मकत असामि
 दमेद ॥ अष्ट विद्यान विनासित मुर्ति श्री
 जिन ॥ ५ ॥ धर्मराज सुगततालय देह
 पद्म दलायत रोचन रम्य ॥ सत्कमरोपरि
 साधित देव श्री जिन ॥ ६ ॥ केनन पुजित
 वानसि भक्त्या त्वेन मितो नितो सित
 केनन भक्त्या नदि कष्ट विनाल नितवे
 श्री जिन ॥ ७ ॥ तावद सौत्रव सागर चिन्ता
 लोकजित भव यपि नमेति ते पिदियां
 निभवाय नमयो श्री जिन ॥ ८ ॥ मनसि
 विधूत मासुनाशु भित्तिगतस्य मरणा विधुर
 धारे गर्भवास्येय नूनं तदुन्नयनुर दुःखं जम्घ
 मातं कृपालो तव चरण गतं हि ग्राहि माहि

ममे नमे ॥ ५ ॥ इति श्री मद्यार्पा वलो कि-
ने श्री नलारकस्य स्तोत्राष्टक स्तोत्रं
समाप्त ॥ . ॥ . ॥ . ॥

(५१) दातव राज निदेशित

नमोलोकनायक ॥ ॥ दातव राज ॥
निदेशित धर्म पुजित रत्न विषेश
विषण् ॥ नाशित मोह विशोभ सदस्य
श्री जित पक्ष करं प्रणमामि ॥ १ ॥ मोहत
मोमय भुमित करं राक्षस यक्ष गण निवि
शान्तं ॥ पारमिता कवचाय परंतु श्री जित ॥
॥ २ ॥ जेतव नाहित देह मयुसं रोमसि
वेसित लोक समस्तं ॥ मायव सत्व विमो-
चित देहं श्री जित ॥ ३ ॥ दित पुत्रु क्षित
पुरित भुतं खण्डित दुर्जति दुर्गत पुतं ॥
आहित सेवक मुक्ती विशेषं श्री जित ॥ ४ ॥
मोहाय हस्ति हत मोत्र रस्मे लोका चितं निर
जलाल हस्तं मुक्ती पदस्तं कुरुगार्द चितं
॥ तं लोक नायक रमं नमामि ॥ ५ ॥ मृतां
रस्मे कृत नार कोयं सूर्य दु कोति सत तिदरा
रम्य ॥ जाता दिवावाहय युक्तं देहं तं लोक ॥ ६ ॥

समुद्ध रक्षं नरकं प्रपन्तां सत्वासमस्ता
नत्रिरास मुक्ती ॥ पिके निमग्ना त्रिवहस्त दामं
तं लोक ॥ ७ ॥ पादापै नैतै सम्यक् दीदक्ष
माता विषमाय विवि ॥ समेत वस्थितर ताप
चितं तं लोक ॥ ८ ॥ यत्पाद सम्यक् क्रमवाप्य
कुम्भि शिक्षा कला पेर विगर्भ पुता बद्धा
प्रबोध्यं कुक्षते समन्ता तं लोक ॥ ९ ॥ सुरवावति
प्रवित सत्व सद्ये दुर्निक्ष शौला मृत वज कल्पं ॥
जता कलापं प्रहिता मितात्रं तं लोक ॥ १० ॥
प्रणमामि सुरासुर वंदेपदं पद बोध करं कर
मक्षधरं ॥ चरणी जनता परितास हं हिर
निजित विस्व विशेषधरं ॥ ११ ॥ स्फुरतास्क
तता हय क्षे भवं भवता भवता परिगुप्त
तनुता नुता कृति विश्व पदं पदनु तम भुत
समस्त पदं ॥ १२ ॥ परिपालित लोक
समस्त गणं गत कितार नाग नमस्य तनु ॥
तनु तिजित मार विषेश सत शत ॥
सर्प त्रिकल्पित कामकरं ॥ १३ ॥ विभुता
विभुति दीगता दिमती रत्न भक्ती जनोद्य
विशेष लयं ॥ लयतत्व महोदधि पारकरं

करुणा करुणा करुणा करुणा ॥१४॥ स्वर्गदे
लोक धातु उदित नयद पादेव देवाधिदेव
सर्वे धारे कमागिप्रसि मत्त भलदं राजते
लोक नावा ॥ यस्त सेवा प्रसादा दश रय इति
चिर विक्षति मुक्ति स मलोक नाथ तव
भरिण कमला गिरज स्वानि एहि ॥१५॥
इति श्री मदार्या वलो कितेश्वर भक्तारक
स्तोत्रा स्तव स्तोत्रं समाप्तं ॥ ॥ ॥

(६८) लौकेश्वर लोक नाथ

नमो लोक नाथाय ॥ १ ॥ लौकेश्वर
लोक नाथ लोक लोक गुरु गुरु ॥
लोपुज्य लोक वन्दे लोकौत्तरगतं न
मै ॥ १ ॥ करुणा मय कारुणिकं कार्य
सिद्धि करं करः ॥ कामूनाधि करं
देव नतोस्मि करुणाकरः ॥ २ ॥ नाना
भय हरं माना रूपेन नाम भेदतं ॥
नाना योनि समूह नून लोक रक्षा
करं नमः ॥ ३ ॥ धार्मि रक्षा भूव
ने तिष्ठति तगु प्रेखये ॥ कृत मो धरणां
येन नो मि तथा ननायकं ॥ ४ ॥

यथा यथा वैनेयान् धृत्वा सत्त्वा
तथा तथा ॥ पादे स धर्म मवर्त त-
स्मै श्री गुरुवे नमः ॥ ५ ॥ नमो रत्न
त्रयो योति ये पठंति वदधया ॥ सौ
खा कीति प्रेषयाति नमामि नित्य दा
यकं ॥ ६ ॥ महा कारुणिकं मेरु मंद
लस्थं महा गुरुं ॥ मो हत्माया राग हरं
माया सुत गुरुं नमः ॥ ७ ॥ सप्ता
क्षर मिदं तोत्रं पठंति भक्ति भावसा
॥ पंचा नय्य निर्मुक्ता सूरवावर्ति प्र-
चां शिते ॥ ८ ॥ इति श्री मदार्या
वलो कितेश्वर भक्तारक स्प सप्ता
क्षर स्तोत्र समाप्तं ॥ ॥

(६९) सर्व भूत मनुकेपित

नमो लोक नाथाय ॥ १ ॥ सर्व भूत
मनु केपित रूपं शान्ति मेव वलितं
तव रूपं ॥ सर्व रूप पर दिव्य सुरु
पं तन्नमामि दशवक्त्र रूपं ॥ १ ॥
भुगराज शिखि मूर्ध्नि सुकेशं कोवि
लाय शिखि दिव्य सुकेशं ॥ स्निग्ध नि-

ल मृदु कृतं चित् कैश तन्नमामि द-
 श वर वर कैश ॥ २ ॥ शंख कुराड कू
 मुदं विमरोमं जन्म दुःख विगतं विम
 रोमं तन्नमामि दश वर रोमं ॥ ३ ॥
 पुरा चन्द्र धूति शोभित वक्त्रं तुंग नास
 मनिभं शुभ वक्त्रं ॥ बुद्ध पंकजिनभा
 मल वक्त्रं तन्नमामि दश वर वर वक्त्रं
 ॥ ४ ॥ रस्मी सदृश विचित्र सुमूर्ति
 पुष्प वक्षः पूजित मूर्ध्नि ॥ रत्न वक्षः
 सप पूजित मूर्ध्नि तन्नमामि दश वर
 वर मूर्ध्नि ॥ ५ ॥ नेत्र पताक विलं किं
 त शिष्य कांचन द्युत विभूषित शिष्य ॥
 नेत्र पताक सुशोभित शिष्य तन्नमामि
 दश वर वर शिष्य ॥ ६ ॥ दिस्तिवरं मुकु
 ता मीरा मकुटं चन्द्र प्रभा मकुटा मीरा
 मकुटं ॥ आगत शिष्य मुकुटा मीरा मकु
 टं तन्नमामि दश वर वर मकुटं ॥ ७ ॥
 चारुपक्व जटू रायत नेत्रं दिव्य ज्ञान वि
 परायत नेत्रं ॥ ध्यान मोक्ष शुभ सं-
 स्कृत नेत्रं तन्नमामि दश वर वर नेत्रं

॥ ८ ॥ शुद्ध कुराड शुभ शोभित करी
 शुद्ध प्रज्ञा वर शुद्ध सुकरा ॥ शुद्ध ज्ञान
 वर शुद्ध करी ॥ शुद्ध ज्ञान वर शुद्ध
 शु करी तन्नमामि दश वर वर करी
 ॥ ९ ॥ शंख कुराड शशि पाराडर दन्तं
 ति क्षसा शुल क्षरा निर्मल दन्तः ॥
 विक्षपं वद श पंच मु दन्तः तन्नमामि
 दश वर वर दन्तं ॥ १० ॥ उच्च वाक्य
 ससुरा सुर जिह्वा धम्म ज्ञान कृत
 प्रापद जिह्वा ॥ गंध धूप ससुरा
 सुर जिह्वा तन्नमामि दश वर वर जि
 ह्वा ॥ ११ ॥ मेघ सुदुंदुभि राजित
 घोषं ॥ दिव्य वादि चर वादित घो
 षं तन्नमामि दश वर वर घोषं
 ॥ १२ ॥ ग्रीव ग्रीवदश ॥ ग्रीव सुग्री
 व दैम वरा तव ग्रीव सुग्रीव ॥
 शान्ति वीर्य तव ग्रीव सुग्रीव त-
 न्नमामि दश वर वर ग्रीव ॥ १३ ॥
 सिंह मया हिम कुराड सुकायज्ञा
 न कायगुरा सागर काय ॥ अष्ट सु

लक्षणा निर्मल काय तन्नमामि
 दशवर वरकाय ॥ १४ ॥ श्वेत रक्त
 शुभ शोभित वस्त्रं नीलपीतहरिता
 पित वस्त्रं ॥ दारुण वर शुभ शोभि
 त वस्त्रं तन्नमामि दशवर वर वस्त्रं ॥
 १५ ॥ हेम नाग कर शोभित वाहू पुष्प
 वाम शुभ शोभित वाहू ॥ धीर वीर्य
 सुमनोहर वाहू तन्नमामि दशवर
 वर बाहू ॥ १६ ॥ चामर चक्र विभु
 पित हस्त विभरज कोमल पंकज ह
 स्तं ॥ भूत प्रेत सरणागत हस्त तन्न
 मामि दशवर वर हस्तं ॥ १७ ॥ रागद्वेष
 तनु वज्रित चित्त कल्पकोति सुमनो
 हर चित्त ॥ शील ज्ञानसम भावि
 त चित्त तन्नमामि दशवर वर चित्त
 ॥ १८ ॥ पद्म नाभ शुभ शोभित ना
 भं पद्म योनि शुभ निम्मल नाभं
 ॥ ब्रह्म जाति शुभ शोभित नाभं तन्न
 मामि दशवर वर नाभं ॥ १९ ॥ चक्र
 सुलक्षणा निर्मल पादं स्वस्तिकं अं

भूश चित्रितपाद ॥ नागयक्षगरा वीरि
 त पादं ॥ तन्नमामि दशवर वर पादं
 ॥ २० ॥ भासकरा श्रुति राजित पादं देवदा
 नव वंदित पादं ॥ सर्व देव गरा वंदित पादं
 तन्नमामि दशवर वर पादं ॥ २१ ॥ सर्व
 देव सद पूजित शीर्ष सूर्य कोटि सभ
 भावित शीर्ष ॥ दिव्य ज्वाल ज्वलित पि
 त शीर्ष तन्नमामि दशवर वर शीर्ष
 ॥ २२ ॥ पुष्प धूप सद पूजित शीर्ष दी
 प गंध सद पूजित शीर्ष ॥ माल्य वस्त्र
 सद पूजित शीर्ष तन्नमामि दशवर
 वर शीर्ष ॥ २३ ॥ त्रिभुवन्बोधम स्व
 मि त्रिभुवन् गुरोः सकला ॥ सुगति
 तवरत्न छत्रादि पूजितं ॥ पठंतियेन सु
 गतस्य वपुः कथनं तु द्वौ भवतितेन मोक्षस्य
 पठादि गमरां ॥ २४ ॥ इति श्री भद्राय
 पलो कितेश्वर भट्टारकस्य सप्तस्तव
 स्तोत्र समाप्तं ॥ ॥ ॥

मानदास सुगत दासया संकलनं
 आशा सफू-कथियात उपहार !

1775
1776
1777
1778
1779
1780
1781
1782
1783
1784
1785
1786
1787
1788
1789
1790
1791
1792
1793
1794
1795
1796
1797
1798
1799
1800
1801
1802
1803
1804
1805
1806
1807
1808
1809
1810
1811
1812
1813
1814
1815
1816
1817
1818
1819
1820
1821
1822
1823
1824
1825
1826
1827
1828
1829
1830
1831
1832
1833
1834
1835
1836
1837
1838
1839
1840
1841
1842
1843
1844
1845
1846
1847
1848
1849
1850
1851
1852
1853
1854
1855
1856
1857
1858
1859
1860
1861
1862
1863
1864
1865
1866
1867
1868
1869
1870
1871
1872
1873
1874
1875
1876
1877
1878
1879
1880
1881
1882
1883
1884
1885
1886
1887
1888
1889
1890
1891
1892
1893
1894
1895
1896
1897
1898
1899
1900
1901
1902
1903
1904
1905
1906
1907
1908
1909
1910
1911
1912
1913
1914
1915
1916
1917
1918
1919
1920
1921
1922
1923
1924
1925
1926
1927
1928
1929
1930
1931
1932
1933
1934
1935
1936
1937
1938
1939
1940
1941
1942
1943
1944
1945
1946
1947
1948
1949
1950
1951
1952
1953
1954
1955
1956
1957
1958
1959
1960
1961
1962
1963
1964
1965
1966
1967
1968
1969
1970
1971
1972
1973
1974
1975
1976
1977
1978
1979
1980
1981
1982
1983
1984
1985
1986
1987
1988
1989
1990
1991
1992
1993
1994
1995
1996
1997
1998
1999
2000
2001
2002
2003
2004
2005
2006
2007
2008
2009
2010
2011
2012
2013
2014
2015
2016
2017
2018
2019
2020
2021
2022
2023
2024
2025
2026
2027
2028
2029
2030
2031
2032
2033
2034
2035
2036
2037
2038
2039
2040
2041
2042
2043
2044
2045
2046
2047
2048
2049
2050
2051
2052
2053
2054
2055
2056
2057
2058
2059
2060
2061
2062
2063
2064
2065
2066
2067
2068
2069
2070
2071
2072
2073
2074
2075
2076
2077
2078
2079
2080
2081
2082
2083
2084
2085
2086
2087
2088
2089
2090
2091
2092
2093
2094
2095
2096
2097
2098
2099
2100
2101
2102
2103
2104
2105
2106
2107
2108
2109
2110
2111
2112
2113
2114
2115
2116
2117
2118
2119
2120
2121
2122
2123
2124
2125
2126
2127
2128
2129
2130
2131
2132
2133
2134
2135
2136
2137
2138
2139
2140
2141
2142
2143
2144
2145
2146
2147
2148
2149
2150
2151
2152
2153
2154
2155
2156
2157
2158
2159
2160
2161
2162
2163
2164
2165
2166
2167
2168
2169
2170
2171
2172
2173
2174
2175
2176
2177
2178
2179
2180
2181
2182
2183
2184
2185
2186
2187
2188
2189
2190
2191
2192
2193
2194
2195
2196
2197
2198
2199
2200
2201
2202
2203
2204
2205
2206
2207
2208
2209
2210
2211
2212
2213
2214
2215
2216
2217
2218
2219
2220
2221
2222
2223
2224
2225
2226
2227
2228
2229
2230
2231
2232
2233
2234
2235
2236
2237
2238
2239
2240
2241
2242
2243
2244
2245
2246
2247
2248
2249
2250
2251
2252
2253
2254
2255
2256
2257
2258
2259
2260
2261
2262
2263
2264
2265
2266
2267
2268
2269
2270
2271
2272
2273
2274
2275
2276
2277
2278
2279
2280
2281
2282
2283
2284
2285
2286
2287
2288
2289
2290
2291
2292
2293
2294
2295
2296
2297
2298
2299
2300
2301
2302
2303
2304
2305
2306
2307
2308
2309
2310
2311
2312
2313
2314
2315
2316
2317
2318
2319
2320
2321
2322
2323
2324
2325
2326
2327
2328
2329
2330
2331
2332
2333
2334
2335
2336
2337
2338
2339
2340
2341
2342
2343
2344
2345
2346
2347
2348
2349
2350
2351
2352
2353
2354
2355
2356
2357
2358
2359
2360
2361
2362
2363
2364
2365
2366
2367
2368
2369
2370
2371
2372
2373
2374
2375
2376
2377
2378
2379
2380
2381
2382
2383
2384
2385
2386
2387
2388
2389
2390
2391
2392
2393
2394
2395
2396
2397
2398
2399
2400
2401
2402
2403
2404
2405
2406
2407
2408
2409
2410
2411
2412
2413
2414
2415
2416
2417
2418
2419
2420
2421
2422
2423
2424
2425
2426
2427
2428
2429
2430
2431
2432
2433
2434
2435
2436
2437
2438
2439
2440
2441
2442
2443
2444
2445
2446
2447
2448
2449
2450
2451
2452
2453
2454
2455
2456
2457
2458
2459
2460
2461
2462
2463
2464
2465
2466
2467
2468
2469
2470
2471
2472
2473
2474
2475
2476
2477
2478
2479
2480
2481
2482
2483
2484
2485
2486
2487
2488
2489
2490
2491
2492
2493
2494
2495
2496
2497
2498
2499
2500
2501
2502
2503
2504
2505
2506
2507
2508
2509
2510
2511
2512
2513
2514
2515
2516
2517
2518
2519
2520
2521
2522
2523
2524
2525
2526
2527
2528
2529
2530
2531
2532
2533
2534
2535
2536
2537
2538
2539
2540
2541
2542
2543
2544
2545
2546
2547
2548
2549
2550
2551
2552
2553
2554
2555
2556
2557
2558
2559
2560
2561
2562
2563
2564
2565
2566
2567
2568
2569
2570
2571
2572
2573
2574
2575
2576
2577
2578
2579
2580
2581
2582
2583
2584
2585
2586
2587
2588
2589
2590
2591
2592
2593
2594
2595
2596
2597
2598
2599
2600
2601
2602
2603
2604
2605
2606
2607
2608
2609
2610
2611
2612
2613
2614
2615
2616
2617
2618
2619
2620
2621
2622
2623
2624
2625
2626
2627
2628
2629
2630
2631
2632
2633
2634
2635
2636
2637
2638
2639
2640
2641
2642
2643
2644
2645
2646
2647
2648
2649
2650
2651
2652
2653
2654
2655
2656
2657
2658
2659
2660
2661
2662
2663
2664
2665
2666
2667
2668
2669
2670
2671
2672
2673
2674
2675
2676
2677
2678
2679
2680
2681
2682
2683
2684
2685
2686
2687
2688
2689
2690
2691
2692
2693
2694
2695
2696
2697
2698
2699
2700
2701
2702
2703
2704
2705
2706
2707
2708
2709
2710
2711
2712
2713
2714
2715
2716
2717
2718
2719
2720
2721
2722
2723
2724
2725
2726
2727
2728
2729
2730
2731
2732
2733
2734
2735
2736
2737
2738
2739
2740
2741
2742
2743
2744
2745
2746
2747
2748
2749
2750
2751
2752
2753
2754
2755
2756
2757
2758
2759
2760
2761
2762
2763
2764
2765
2766
2767
2768
2769
2770
2771
2772
2773
2774
2775
2776
2777
2778
2779
2780
2781
2782
2783
2784
2785
2786
2787
2788
2789
2790
2791
2792
2793
2794
2795
2796
2797
2798
2799
2800
2801
2802
2803
2804
2805
2806
2807
2808
2809
2810
2811
2812
2813
2814
2815
2816
2817
2818
2819
2820
2821
2822
2823
2824
2825
2826
2827
2828
2829
2830
2831
2832
2833
2834
2835
2836
2837
2838
2839
2840
2841
2842
2843
2844
2845
2846
2847
2848
2849
2850
2851
2852
2853
2854
2855
2856
2857
2858
2859
2860
2861
2862
2863
2864
2865
2866
2867
2868
2869
2870
2871
2872
2873
2874
2875
2876
2877
2878
2879
2880
2881
2882
2883
2884
2885
2886
2887
2888
2889
2890
2891
2892
2893
2894
2895
2896
2897
2898
2899
2900
2901
2902
2903
2904
2905
2906
2907
2908
2909
2910
2911
2912
2913
2914
2915
2916
2917
2918
2919
2920
2921
2922
2923
2924
2925
2926
2927
2928
2929
2930
2931
2932
2933
2934
2935
2936
2937
2938
2939
2940
2941
2942
2943
2944
2945
2946
2947
2948
2949
2950
2951
2952
2953
2954
2955
2956
2957
2958
2959
2960
2961
2962
2963
2964
2965
2966
2967
2968
2969
2970
2971
2972
2973
2974
2975
2976
2977
2978
2979
2980
2981
2982
2983
2984
2985
2986
2987
2988
2989
2990
2991
2992
2993
2994
2995
2996
2997
2998
2999
3000
3001
3002
3003
3004
3005
3006
3007
3008
3009
3010
3011
3012
3013
3014
3015
3016
3017
3018
3019
3020
3021
3022
3023
3024
3025
3026
3027
3028
3029
3030
3031
3032
3033
3034
3035
3036
3037
3038
3039
3040
3041
3042
3043
3044
3045
3046
3047
3048
3049
3050
3051
3052
3053
3054
3055
3056
3057
3058
3059
3060
3061
3062
3063
3064
3065
3066
3067
3068
3069
3070
3071
3072
3073
3074
3075
3076
3077
3078
3079
3080
3081
3082
3083
3084
3085
3086
3087
3088
3089
3090
3091
3092
3093
3094
3095
3096
3097
3098
3099
3100
3101
3102
3103
3104
3105
3106
3107
3108
3109
3110
3111
3112
3113
3114
3115
3116
3117
3118
3119
3120
3121
3122
3123
3124
3125
3126
3127
3128
3129
3130
3131
3132
3133
3134
3135
3136
3137
3138
3139
3140
3141
3142
3143
3144
3145
3146
3147
3148
3149
3150
3151
3152
3153
3154
3155
3156
3157
3158
3159
3160
3161
3162
3163
3164
3165
3166
3167
3168
3169
3170
3171
3172
3173
3174
3175
3176
3177
3178
3179
3180
3181
3182
3183
3184
3185
3186
3187
3188
3189
3190
3191
3192
3193
3194
3195
3196
3197
3198
3199
3200
3201
3202
3203
3204
3205
3206
3207
3208
3209
3210
3211
3212
3213
3214
3215
3216
3217
3218
3219
3220
3221
3222
3223
3224
3225
3226
3227
3228
3229
3230
3231
3232
3233
3234
3235
3236
3237
3238
3239
3240
3241
3242
3243
3244
3245
3246
3247
3248
3249
3250
3251
3252
3253
3254
3255
3256
3257
3258
3259
3260
3261
3262
3263
3264
3265
3266
3267
3268
3269
3270
3271
3272
3273
3274
3275
3276
3277
3278
3279
3280
3281
3282
3283
3284
3285
3286
3287
3288
3289
3290
3291
3292
3293
3294
3295
3296
3297
3298
3299
3300
3301
3302
3303
3304
3305
3306
3307
3308
3309
3310
3311
3312
3313
3314
3315
3316
3317
3318
3319
3320
3321
3322
3323
3324
3325
3326
3327
3328
3329
3330
3331
3332
3333
3334
3335
3336
3337
3338
3339
3340
3341
3342
3343
3344
3345
3346
3347
3348
3349
3350
3351
3352
3353
3354
3355
3356
3357
3358
3359
3360
3361
3362
3363
3364
3365
3366
3367
3368
3369
3370
3371
3372
3373
3374
3375
3376
3377
3378
3379
3380
3381
3382
3383
3384
3385
3386
3387
3388
3389
3390
3391
3392
3393
3394
3395
3396
3397
3398
3399
3400
3401
3402
3403
3404
3405
3406
3407
3408
3409
3410
3411
3412
3413
3414
3415
3416
3417
3418
3419
3420
3421
3422
3423
3424
3425
3426
3427
3428
3429
3430
3431
3432
3433
3434
3435
3436
3437
3438
3439
3440
3441
3442
3443
3444
3445
3446
3447
3448
3449
3450
3451
3452
3453
3454
3455
3456
3457
3458
3459
3460
3461
3462
3463
3464
3465
3466
3467
3468
3469
3470
3471
3472
3473
3474
3475
3476
3477
3478
3479
3480
3481
3482
3483
3484
3485
3486
3487
3488
3489
3490
3491
3492
3493
3494
3495
3496
3497
3498
3499
3500
3501
3502
3503
3504
3505
3506
3507
3508
3509
3510
3511
3512
3513
3514
3515
3516
3517
3518
3519
3520
3521
3522
3523
3524
3525
3526
3527
3528
3529
3530
3531
3532
3533
3534
3535
3536
3537
3538
3539
3540
3541
3542
3543
3544
3545
3546
3547
3548
3549
3550
3551
3552
3553
3554
3555
3556
3557
3558
3559
3560
3561
3562
3563
3564
3565
3566
3567
3568
3569
3570
3571
3572
3573
3574
3575
3576
3577
3578
3579
3580
3581
3582
3583
3584
3585
3586
3587
3588
3589
3590
3591
3592
3593
3594
3595
3596
3597
3598
3599
3600
3601
3602
3603
3604
3605
3606
3607
3608
3609
3610
3611
3612
3613
3614
3615
3616
3617
3618
3619
3620
3621
3622
3623
3624
3625
3626
3627
3628
3629
3630
3631
3632
3633
3634
3635
3636
3637
3638
3639
3640
3641
3642
3643
3644
3645
3646
3647
3648
3649
3650
3651
3652
3653
3654
3655
3656
3657
3658
3659
3660
3661
3662
3663
3664
3665
3666
3667
3668
3669
3670
3671
3672
3673
3674
3675
3676
3677
3678
3679
3680
3681
3682
3683
3684
3685
3686
3687
3688
3689
3690
3691
3692
3693
3694
3695
3696
3697
3698
3699
3700
3701
3702
3703
3704
3705
3706
3707
3708
3709
3710
3711
3712
3713
3714
3715
3716
3717
3718
3719
3720
3721
3722
3723
3724
3725
3726
3727
3728
3729
3730
3731
3732
3733
3734
3735
3736
3737
3738
3739
3740
3741
3742
3743
3744
3745
3746
3747
3748
3749
3750
3751
3752
3753
3754
3755
3756
3757
3758
3759
3760
3761
3762
3763
3764
3765
3766
3767
3768
3769
3770
3771
3772
3773
3774
3775
3776
3777
3778
3779
3780
3781
3782
3783
3784
3785
3786
3787
3788
3789
3790
3791
3792
3793
3794
3795
3796
3797
3798
3799
3800
3801
3802
3803
3804
3805
3806
3807
3808
3809
3810
3811
3812
3813
3814
3815
3816
3817
3818
3819
3820
3821
3822
3823
3824
3825
3826
3827
3828
3829
3830
3831
3832
3833
38

15

10

5

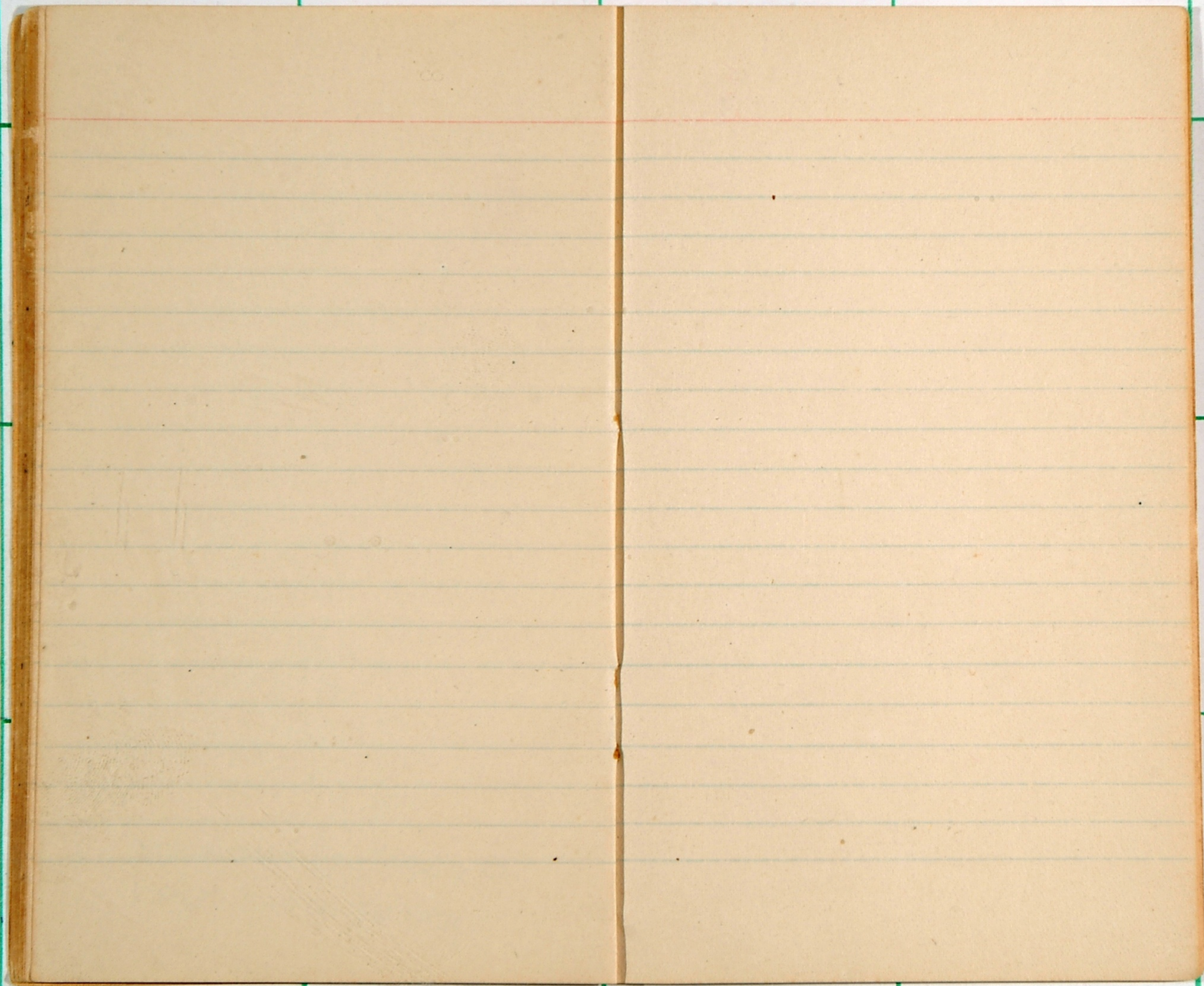
0 cm

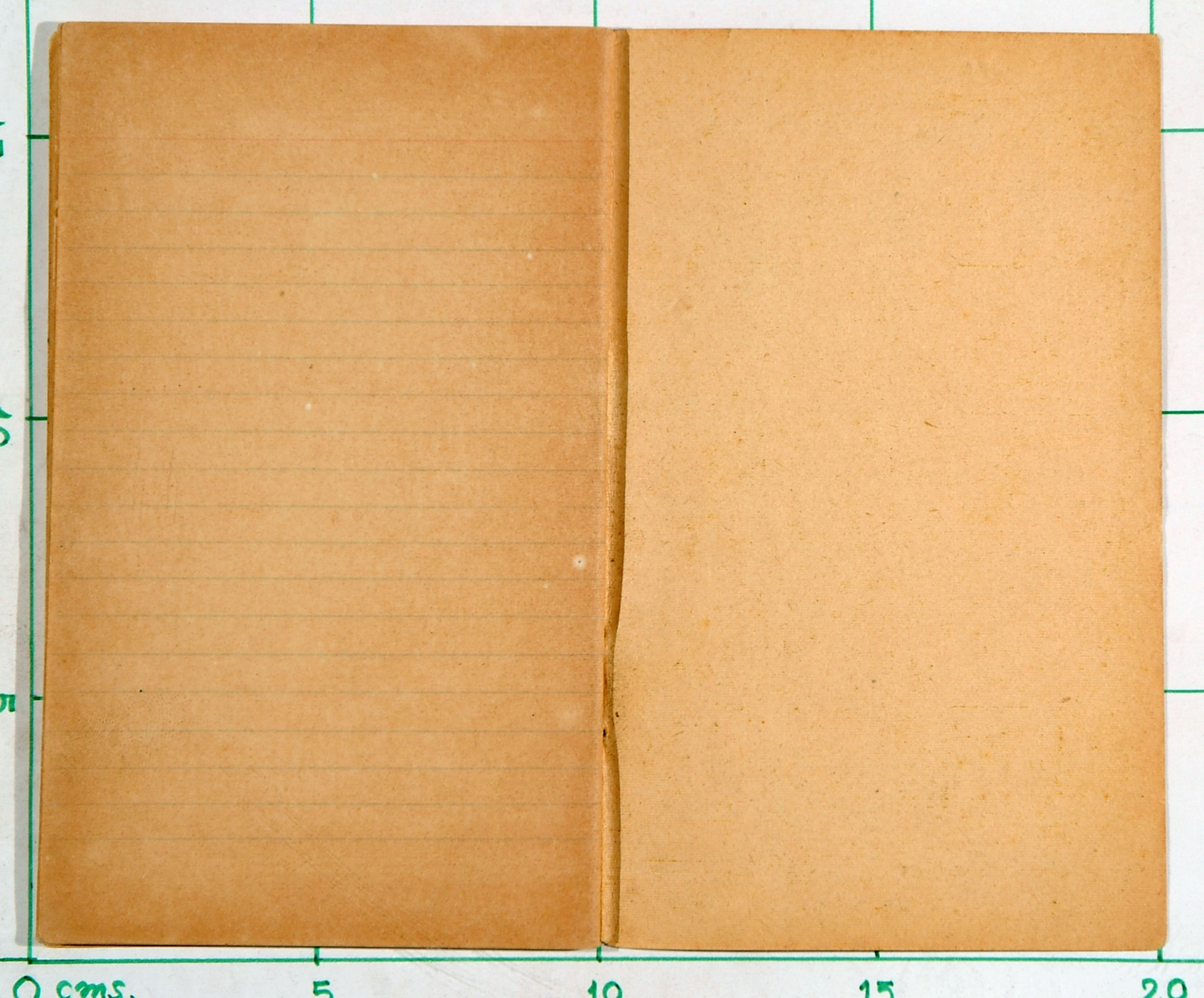
5

10

15

20





1936 CALENDAR 1936

JANUARY

S 5 12 11 20
M 6 13 20 27
T 7 14 21 28
W 1 8 15 22 29
T 2 9 16 23 30
F 3 10 17 24 31
S 4 11 18 25

FEBRUARY

2 9 16 23
3 10 17 24
4 11 18 25
5 12 19 26
6 13 20 27
7 14 21 28
1 8 15 22 29

MARCH

1 8 15 22 29
2 9 16 23 30
3 10 17 24 31
4 11 18 25
5 12 19 26
6 13 20 27
7 14 21 28

APRIL

5 12 11 20
6 13 20 27
7 14 21 28
W 1 8 15 22 29
T 2 9 16 23 30
F 3 10 17 24
S 4 11 18 25

MAY

3 10 17 24 31
4 11 18 25
5 12 19 26
6 13 20 27
7 14 21 28
1 8 15 22 29
2 9 16 23 30

JUNE

7 14 21 28
1 8 15 22 29
2 9 16 23 30
3 10 17 24
4 11 18 25
5 12 19 26
6 13 20 27

JULY

1 12 19 26
2 13 20 27
3 14 21 28
W 1 8 15 22 29
T 2 9 16 23 30
F 3 10 17 24 31
S 4 11 18 25

AUGUST

2 9 16 23 30
3 10 17 24 31
4 11 18 25
5 12 19 26
6 13 20 27
7 14 21 28
1 8 15 22 29

SEPTEMBER

6 13 20 27
7 14 21 28
1 8 15 22 29
2 9 16 23 30
3 10 17 24
4 11 18 25
5 12 19 26

OCTOBER

4 11 18 25
5 12 19 26
6 13 20 27
W 7 14 21 28
T 1 8 15 22 29
F 2 9 16 23 30
S 3 10 17 24 31

NOVEMBER

1 8 15 22 29
2 9 16 23 30
3 10 17 24
4 11 18 25
5 12 19 26
6 13 20 27
7 14 21 28

DECEMBER

6 13 20 27
7 14 21 28
1 8 15 22 29
2 9 16 23 30
3 10 17 24 31
4 11 18 25
5 12 19 26